VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

PT 365

संस्कृति

Classroom Study Material

(May 2021 to January 2022)

DELHI LUCKNOW JAIPUR HYDERABAD PUNE AHMEDABAD CHANDIGARH GUWAHATI

8468022022
9019066066

enquiry@visionias.in /c/VisionIASdelhi /Vision_IAS vision_ias www.visionias.in /VisionIAS_UPSC

संस्कृति (Culture)

विषय-सूची

1. मूर्तिकला और स्थापत्य कला (SCULPTURE AND ARCHITECTURE) _____ 3

1.1. गुप्त कालीन प्राचीन मंदिर (Ancient temple of Gupta period) _____ 3

1.2. कोणार्क सूर्य मंदिर (Sun Temple of Konark) 5

1.3. शयनावस्था में बुद्ध (Reclining Buddha) _____ 7

1.4. अन्य महत्त्वपूर्ण सुर्ख़ियाँ (Other Important News) _____ 9

2. चित्रकला और अन्य कला शैलियां (PAINTINGS AND OTHER ART FORMS) _____ 12

2.1. मांगर बणी गुफा चित्र (MANGAR BANI Cave Paintings) _____ 12

2.2. कलमकारी चित्रकारी (Kalamkari Paintings) 14

2.3. पुतुल नाच (Putul Nautch) _____ 16

2.4. टॉयकैथॉन 2021 (Toycathon 2021) _____ 18

2.5. सुर्ख़ियों में रहे कला के अन्य रूप (Other Art Form in News) _____ 19

3. यूनेस्को की पहलें (INITIATIVES OF UNESCO) 22

3.1. यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थल (UNESCO World Heritage Sites) _____ 22

3.1.1. विश्व धरोहर का दर्जा (World Heritage Tag) _____ 22

3.1.1.1. रुद्रेश्वर मंदिर (Rudreshwara Temple) _____ 24

3.1.1.2. धौलावीरा (Dholavira) _____ 25

3.1.2. यूनेस्को की विश्व विरासत स्थलों की संभावित सूची (Tentative List of UNESCO World Heritage Sites) _____ 27

3.2. दुर्गा पूजा (Durga Puja) _____ 29

3.3. यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क (UNESCO Creative Cities Network: UCCN) _____ 31

3.4. अन्य महत्त्वपूर्ण सुर्ख़ियाँ (Other Important News) _____ 31

4. व्यक्तित्व (PERSONALITIES) _____ 33

4.1. आदि शंकराचार्य (ADI Shankaracharya) _____ 33

4.2. श्री अरबिंदो (Sri Aurobindo) _____ 35

4.3. नेताजी सुभाष चंद्र बोस (Netaji Subhash Chandra Bose) _____ 36

4.4. सुर्ख़ियों में रहे अन्य व्यक्तित्व (Other Personalities in News) _____ 39

5. ऐतिहासिक घटनाएं (HISTORICAL EVENTS) _____ 42

5.1. जलियांवाला बाग हत्याकांड (Jallianwala Bagh Massacre) _____ 42

5.2. मालाबार/मोपला विद्रोह (Malabar/Moplah Rebellion) _____ 43

5.3. पाइका विद्रोह (Paika Rebellion) _____ 44

5.4. अन्य महत्त्वपूर्ण सुर्ख़ियाँ (Other Important News) _____ 45

6. विविध (MISCELLANEOUS) _____ 46

6.1. जनजातीय गौरव दिवस (Janjatiya Gaurav Divas) _____ 46

6.2. पूर्वोत्तर भारत में भू-पर्यटन स्थल (Geo-tourism Sites in North East) _____ 51

6.3. सुर्ख़ियों में रहे भौगोलिक संकेतक का दर्जा प्राप्त उत्पाद {Geographical Indication (GI) Tag Products in News} _____ 53

6.4. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और विज्ञान की भूमिका (Indian Independence Movement & the Role of Science) _____ 55

6.5. सुर्ख़ियों में रहे त्यौहार (Festivals in News) _____ 57

6.6. पुरस्कार और सम्मान (Prizes and Awards) 57

6.7. अन्य महत्त्वपूर्ण सुर्ख़ियाँ (Other Important News) _____ 59

© Vision IAS

नोट:

PT 365 (हिंदी) डाक्यूमेंट के अंतर्गत, व्यापक तौर पर विगत 1 वर्ष (365 दिन) की महत्वपूर्ण समसामयिकी को समेकित रूप से कवर किया गया है ताकि प्रारंभिक परीक्षा की तैयारी में अभ्यर्थियों को सहायता मिल सके।

अभ्यर्थियों के हित में PT 365 डॉक्यूमेंट को और बेहतर बनाने के लिए इसमें निम्नलिखित नवीन विशेषताओं को शामिल किया गया है:

1. टॉपिक्स के आसान वर्गीकरण और विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को रेखांकित तथा याद करने के लिए इस अध्ययन सामग्री में विभिन्न रंगों का उपयोग किया गया है।
2. अभ्यर्थी ने विषय को कितना बेहतर समझा है, इसके परीक्षण के लिए QR आधारित स्मार्ट क्विज़ को शामिल किया गया है।
3. विषय/ टॉपिक की आसान समझ के लिए इन्फोग्राफिक्स को शामिल किया गया है। यह सीखने और समझने के अनुभव को आसान बनाता है तथा पढ़े गए विषय/कंटेंट को लंबे समय तक याद रखना सुनिश्चित करता है।

QUIZ SMART QUIZ	विषय की समझ और अवधारणाओं के स्मरण की अपनी क्षमता के परीक्षण के लिए आप हमारे ओपन टेस्ट ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर स्मार्ट क्विज़ का अभ्यास करने हेतु इस QR कोड को स्कैन कर सकते हैं।	

 © Vision IAS

1. मूर्तिकला और स्थापत्य कला (SCULPTURE AND ARCHITECTURE)

1.1. गुप्त कालीन प्राचीन मंदिर (Ancient temple of Gupta period)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) को **उत्तर प्रदेश** के **एटा** के **बिलसढ़ गांव** में **गुप्त काल (5वीं शताब्दी ईस्वी)** के **एक प्राचीन मंदिर के अवशेष** प्राप्त हुए हैं।

अन्य संबंधित तथ्य

- बिलसढ़ को वर्ष 1928 से संरक्षित किया गया था और इसे गुप्त काल के एक महत्वपूर्ण स्थल के रूप में जाना जाता है।
- **मुख्य प्राप्तियां:** एक दूसरे के समीप स्थित दो अलंकृत स्तंभ, जिन पर मानव आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं। मंदिर की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर **'शंख लिपि' में 'श्री महेंद्रदित्य'** उत्कीर्णित है, जो कि **गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम** द्वारा धारण की गई उपाधि थी।
    - यह खोज इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि गुप्त काल के अब तक केवल दो अन्य संरचनात्मक मंदिर ही पाए गए हैं। ये हैं - **दशावतार मंदिर (देवगढ़)** और **भीतरगांव मंदिर (कानपुर देहात)।**
    - इस मंदिर के स्तंभ अच्छी तरह से तराशे गए हैं, जो **अन्य पूर्ववर्ती मंदिरों के स्तंभों से बेहतर हैं, जिनमें केवल निचले खंडों को ही तराशा गया था।** अलंकृत स्तंभ और सीढ़ियां पहले वालों की तुलना में कुछ अधिक उन्नत हैं।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archeological Survey of India: ASI) के बारे में

- यह **पुरातात्विक अनुसंधान, वैज्ञानिक विश्लेषण, पुरातात्विक स्थलों के उत्खनन, संरक्षित स्मारकों के संरक्षण और सुरक्षा** के लिए प्रमुख संगठन है।
- इसकी स्थापना **1861 ई. में अलेक्जेंडर कनिंघम** ने की थी।
- यह **संस्कृति मंत्रालय** के अधीन संलग्न कार्यालय है।

शंखलिपि या शैल लिपि के बारे में

- **शंख लिपि** या **"शेल-स्क्रिप्ट"** में अलंकृत सर्पिलाकार वर्णों का प्रयोग किया गया है, जो शंख की भांति दृष्टिगत होते हैं। इस लिपि को **ब्राह्मी लिपि** से ही व्युत्पन्न हुआ माना जाता है।
- इसका प्रयोग **उत्तर-मध्य भारत में चौथी तथा आठवीं शताब्दी** के अभिलेखों में हुआ है।
    - **ब्राह्मी तथा शंख लिपि** दोनों ही शैलीबद्ध लिपियाँ हैं। इनका उपयोग मुख्य रूप से **नाम और हस्ताक्षर** के लिए किया जाता था ।
- अभिलेखों में इन **वर्णों की संख्या कम है,** जिससे पता चलता है कि शंखलिपि के अभिलेख नाम या शुभ प्रतीक या दोनों का संयोजन हैं।
- इस लिपि की **खोज 1836 ई. में उत्तराखंड के बाड़ाहाट में अंग्रेज विद्वान जेम्स प्रिंसेप** ने की थी।
    - वह **एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की पत्रिका के संस्थापक** थे।
- शंखलिपि अभिलेखों वाले प्रमुख स्थलों में **बिहार में मुंडेश्वरी मंदिर, मध्य प्रदेश में उदयगिरि की गुफाएँ, महाराष्ट्र में मनसर तथा गुजरात और महाराष्ट्र के कुछ गुफा स्थल** शामिल हैं।
    - इस लिपि के अभिलेख **जावा एवं बोर्नियो** में भी पाए गए हैं।

गुप्त काल की मंदिर वास्तुकला के बारे में

- गुप्तों ने ही पहली बार चट्टानों को काटकर बनाए गए प्राचीन मंदिरों से बिल्कुल अलग **संरचनात्मक मंदिरों का निर्माण** करवाया था।
    - गुप्त राजवंश ने उत्तर-मध्य भारत पर **चौथी और छठी शताब्दी ईस्वी** के बीच शासन किया था। इस अवधि को **वास्तुकला का स्वर्ण युग** माना जाता है।
    - इस राजवंश की स्थापना **320 ईस्वी में चंद्रगुप्त प्रथम** ने की थी।
- **गुप्त काल की मंदिर वास्तुकला की मुख्य विशेषताएं:**
    - गुप्तकालीन शैली **कुषाण, मथुरा तथा गांधार** कला से प्रभावित थी। इसमें इन कला शैलियों की **टी-आकार के प्रवेश द्वार, सुसज्जित द्वार चौखट, उच्च उभार युक्त मूर्तियां से अलंकृत पट्टिकाएं, फूल-पत्तियों एवं कंटकी पर्णकों (acanthus) का रूपांकन** जैसी आदि सामान्य विशेषताओं को शामिल किया गया था।
    - इन मंदिरों का निर्माण **बलुआ पत्थर, ग्रेनाइट और ईंट द्वारा** किया गया था।

क्या आप जानते हैं?

- गुप्त काल के **दौरान, इतिवृत्तों, राजवंशीय इतिहास और महाकाव्यों को याद रखने का काम लोगों के एक भिन्न समूह का** था। इन्हें **सूत या मगध** कहा जाता था।
- **अजंता और बाघ** गुफ़ाओं से, गुप्त काल के गुफ़ा चित्रों के उदाहरण मिले हैं।
- गुप्त काल के दौरान, उत्तर भारत के विदेशी व्यापार का संचालन मुख्य रूप से **ताम्रलिप्ति बंदरगाह** से होता था।

© Vision IAS

- गुप्त वास्तुकला में, **वर्ग को सबसे उत्तम रूप माना जाता था और मंदिरों की इस प्रकार से रचना की गई थी कि उसकी चारों ओर से प्रशंसा हो सके।** इस प्रकार प्रत्येक में सजावटी वास्तुशिल्प विशेषताएं विद्यमान थीं।
- **छठी शताब्दी ईस्वी से, गुप्त मंदिरों का मंच (जगती) पर निर्माण किया जाने लगा।** मध्य प्रदेश के **देवगढ़ में दशावतार मंदिर** इसका एक अच्छा उदाहरण है।
- गुप्त मंदिर **एक देवता की बजाय बड़ी संख्या में हिंदू देवताओं को समर्पित** थे।
  - **द्वार मार्ग दशावतार मंदिर** के वर्गाकार गर्भगृह शिखर का एक उत्तम उदाहरण है। इस पर **विष्णु, ब्रह्मा, इंद्र, गंगा एवं यमुना और साथ ही परिचारकों व मिथुन जोड़ों की मूर्तियाँ** हैं।

गुप्तकालीन मंदिर के पांच मुख्य प्रकारों का विवरण

1

- **वर्गाकार संरचना, समतल छत व छोटे स्तंभ वाले मंडप** से युक्त मंदिरों का निर्माण।
- मंदिर के **गर्भगृह के लिए एकल प्रवेशद्वार** है तथा पहली बार यहां **मंडप** का प्रयोग हुआ है।
- प्रमुख उदाहरण– **कंकाली देवी मंदिर (तिगवा) और विष्णु वाराह मंदिर (एरण)।**

2

- पहले प्रकार का आगे विकास **पवित्र गर्भगृह के चारों तरफ प्रदक्षिणापथ** के रूप में हुआ।
- कहीं–कहीं यह दो मंजिला भी है।
- प्रमुख उदाहरण– **भूमरा (मध्य प्रदेश) का शिव मंदिर, लाडखान मंदिर (ऐहोल), नचनाकुठार (मध्य प्रदेश) का पार्वती मंदिर।**

3

- **वर्गाकार मंदिर जिसके ऊपर कम ऊंचे व अधिक स्थूल शिखर** हैं। स्तम्भ वाले मंडप हैं तथा आधार में एक ऊंचा नचनाकुठार मंच है।
- यह मंदिर **पंचायतन शैली की वास्तुकला का उदाहरण है। इसमें मुख्य मंदिर आयताकार चबूतरे पर बना है, जिसके चारों कोनों पर चार साहयक मंदिर निर्मित** हैं (कुल मिलाकर पांच मंदिर हैं, इसलिए इसका नाम पंचायतन है)।
- इस चरण की सबसे अनूठी विशेषता **वक्रीय शिखर** है।
- **नागर शैली** में बने मंदिरों को तीसरे चरण के मंदिर निर्माण का उत्कर्ष कहा जाता है।
- प्रमुख उदाहरण– **दशावतार मंदिर (देवगढ़) और ईंट से निर्मित मंदिर (भितरगांव)।**

4

- **आयताकार मंदिर जिसका पिछला भाग गजपृष्ठाकार है और ऊपर मेहराबदार छत है।**
- प्रमुख उदाहरण– चेज़रला (आंध्र प्रदेश) का **कपोटेश्वर मंदिर।**

5

- **गोलाकार मंदिर, जिनके चार मुख्य मुख भागों पर आयताकार अग्रभाग निकले हुए हैं।**
- इस शैली का एकमात्र स्मारक राजगीर, बिहार का मनियार मठ है।

1.2. कोणार्क सूर्य मंदिर (Sun Temple of Konark)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने **कोणार्क सूर्य मंदिर के सीलबंद सभागृह से रेत को सुरक्षित रूप से हटाने के लिए** एक रोडमैप पर चर्चा किया। इस सभागृह को **जगमोहन** के नाम से भी जाना जाता है।

अन्य संबंधित तथ्य

- जगमोहन को गिरने से बचाने के लिए अंग्रेजों ने इसमें रेत भर दिया था।
- वर्ष 2019 में किए गए अध्ययन में यह पाया गया था कि रेत नीचे बैठ रही है। इसके परिणामस्वरूप, रेत की परत और संरचना के बीच 17 फीट का अंतर आ गया है।

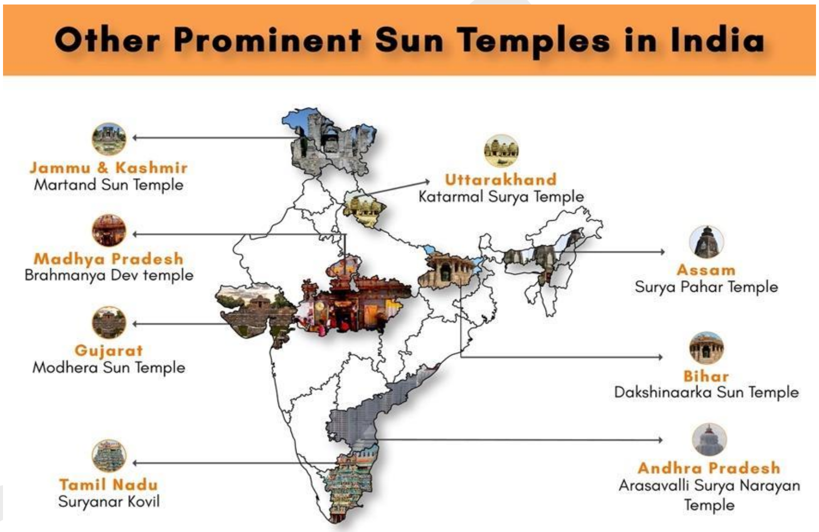

कोणार्क के सूर्य मंदिर के बारे में

- यह **सूर्य देव** को समर्पित एक मंदिर है। यह **बंगाल की खाड़ी** के तट पर स्थित है।
  - इसके पत्थर के रंगों के कारण ही इसे **ब्लैक पैगोडा** के नाम से जाना जाता है।
- केंडुली ताम्रपत्र के अनुसार इसका निर्माण **पूर्वी गंग वंश के राजा नरसिंहदेव प्रथम ने 1238-1250 ई. में करवाया था।**
  - किवदंतियों के अनुसार इस मंदिर का निर्माण **भगवान कृष्ण के पुत्र सांबा** ने करवाया था।
- वर्ष 1984 में इसे **यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थल की सूची में शामिल** किया गया था।
  - यह **प्राचीन संस्मारक और पुरातत्व स्थल एवं अवशेष (AMASR) अधिनियम, 1958**[1] के तहत संरक्षित है।
- इसके निकटम समुद्र तट, चंद्रभागा को वर्ष 2018 में, पर्यावरण स्वच्छता के लिए ब्लू फ्लैग प्रमाणन प्राप्त हुआ है।
  - वर्ष 2016 में IIT के एक अध्ययन में मंदिर के पास ही लुप्त चंद्रभागा नदी की उपस्थिति के संकेत मिले हैं।
- यहां **कोणार्क नृत्य महोत्सव और चंद्रभागा महोत्सव** का आयोजन किया जाता है।
- यह **कलिंग स्थापत्य कला शैली** में निर्मित एक मंदिर है। यह **नागर शैली मंदिर स्थापत्य कला की एक उप-शैली है।** इसमें निम्नलिखित संरचनाएं मौजूद हैं:
  - **शिखर** के साथ **रेखा देउल या विमान (गर्भगृह के ऊपर);**
  - **जगमोहन** या **सभागृह;**

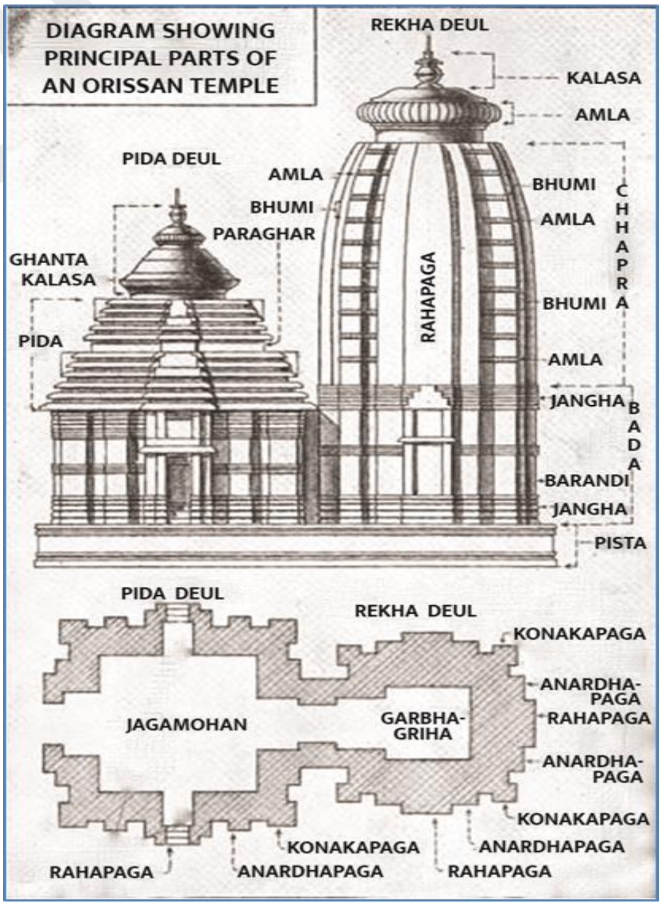

[1] Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act (1958)

© Vision IAS

- **नट मंदिर** या **नृत्य गृह** और कई अन्य उप-संरचनाएं।

- अपने सम्पूर्ण रूप में, **यह सूर्य देव के रथ का प्रतिनिधित्व करता है।** इसमें **बारीक नक्काशी किए हुए 24 पहिये** हैं। इसके **उत्तर एवं दक्षिण दोनों ओर 12-12 पहिये** हैं। इनका **व्यास 3 मीटर है।** इस रथ को **सात घोड़ों द्वारा खींचते हुए दर्शाया** गया है।
    - 12 जोड़ी पहिए एक वर्ष के 12 महीनों को दर्शाते हैं। आठ तीलियां आठ प्रहर को दर्शाती हैं। साथ ही, ये ऋतुओं और महीनों के चक्रों के प्रतीकात्मक रूपांकन को भी निरूपित करती हैं।
    - 7 घोड़े, सप्ताह के सात दिनों के प्रतीक हैं।
- **दीवारों/स्तंभों पर उत्कीर्ण आलंकारिक चित्र:** शेर, संगीतकार और नर्तक आदि।
    - इसके अतिरिक्त, मौजूदा **दस रुपये के नोट** के पिछली तरफ इसी मंदिर के पहियों को दर्शाया गया है।
- **मंदिर में प्रयुक्त पत्थर:** इसमें क्लोराइट, लेटराइट और हरे रंग के खोंडलाइट का प्रयोग किया गया है।
- **मंदिर का विनाश:** इसका कोई एक निश्चित कारण नहीं है, लेकिन निम्नलिखित किसी एक या अन्य कारणों से, 1837 ई. में मंदिर का अधिकांश हिस्सा नष्ट हो गया था। हालांकि, केवल **जगमोहन** ही सुरक्षित शेष रह गया था।
    - **कारण:** इस्लामी आक्रमण, संरचनात्मक दोष, पत्थरों की अनुपयुक्तता या अपक्षय, मंदिर से चुंबकों का निकाला जाना आदि।

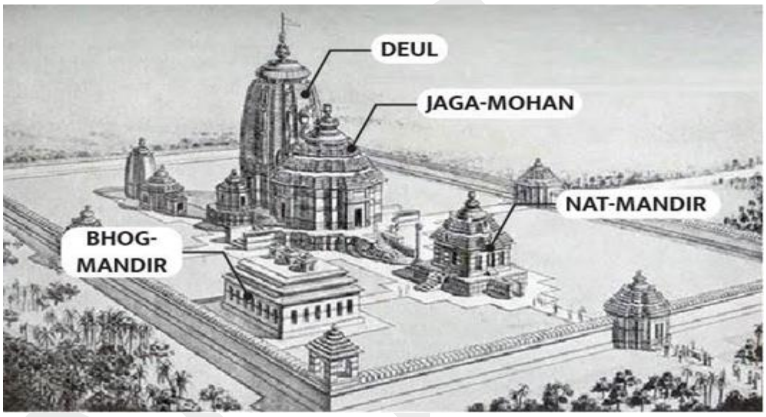

कलिंग स्थापत्य कला शैली के बारे में

- इस स्थापत्य कला का विकास **प्राचीन कलिंग** क्षेत्र में हुआ था। यह क्षेत्र **महानदी** और **गोदावरी नदियों** (वर्तमान पश्चिम बंगाल, ओडिशा और उत्तरी आंध्र प्रदेश) के मध्य स्थित था।
- यह **नागर मंदिर स्थापत्य कला** की एक उप-शैली है। कलिंग शैली के मंदिरों को आगे **तीन अलग-अलग प्रकार के मंदिरों** में वर्गीकृत किया गया है: **रेखा देउल, पिढा देउल और खाखरा देउल।**
    - **रेखा-देउल:** इसकी योजना वर्गाकार होती है। इसके ऊपर एक वक्रीय शिखर निर्मित किया जाता है। मंदिर के भाग एक ही (पूर्व-पश्चिम) रेखा में या एक ही अक्ष पर पंक्तिबद्ध होते हैं। ये मंदिर विष्णु, शिव और सूर्य देवताओं को समर्पित होते हैं। यह मंदिर की सबसे सामान्य शैली है।
    - **पिढा देउल:** इसकी योजना भी वर्गाकार होती है। किन्तु इसके शीर्ष पर क्षैतिज स्तरों या चबूतरों पर पिरामिड आकार का एक शिखर निर्मित किया जाता है। ये चबूतरे सामान्य तौर पर तीन स्तरों में व्यवस्थित होते हैं। ये मंदिर मुख्यतया विष्णु, शिव और सूर्य देवता को समर्पित होते हैं। इनका उपयोग मुख्य रूप से सभागृह के लिए किया जाता है।
    - **खाखरा देउल:** यह ढोलनुमा आकृति का शिखर होता है। इसकी योजना आयताकार होती है। इसमें लम्बी छत होती है। यह **द्रविड़ गोपुरम संरचना** के समान होता है। यह चामुंडा और दुर्गा जैसी देवियों को समर्पित होता है। यह एक दुर्लभ किस्म की शैली है। इसके गर्भगृह में देवताओं को प्रतिष्ठापित किया जाता है।

मंदिर के विकास के चरण

1.3. शयनावस्था में बुद्ध (Reclining Buddha)

सुर्ख़ियों में क्यों?

बिहार स्थित बोधगया में बुद्ध अंतर्राष्ट्रीय कल्याण मिशन मंदिर में भारत की सबसे बड़ी **शयनावस्था में बुद्ध की प्रतिमा** प्रतिष्ठापित की जा रही है।

शयनावस्था में बुद्ध के बारे में

- शयनावस्था में बुद्ध की प्रतिमा उनके रोगी काया के अंतिम क्षणों के दौरान की अवस्था का चित्रण करती है। इसे **परिनिर्वाण** चरण के रूप में संदर्भित किया जाता है। ज्ञातव्य है कि परिनिर्वाण मृत्यु उपरांत चरम मोक्ष का वह चरण है, जिसे केवल प्रबुद्ध बौद्ध मनीषियों द्वारा ही अर्जित किया जा सकता है।
- शयनावस्था में बुद्ध की मूर्तियां उन्हें अपनी **दाहिनी ओर लेटे हुए** दिखाती हैं, उनका सिर एक तकिए पर या उनकी दाहिनी कोहनी पर टिका हुआ है। यह प्रतिमा दर्शाती है कि **सभी प्राणियों में जागृत होने तथा मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त होने की क्षमता** विद्यमान है।
- शयनावस्था में बुद्ध को **पहली बार गांधार कला में चित्रित** किया गया था। यह कला **50 ई. पू. और 75 ईस्वी के** मध्य आरंभ हुई थी तथा कुषाण काल के दौरान प्रथम से 5वीं शताब्दी ईस्वी के मध्य अपने चरमोत्कर्ष पर थी।

क्या आप जानते हैं?

- बोधिसत्व "पद्मपाणि" का चित्र, अजंता के सबसे प्रसिद्ध चित्रों में एक है।
- बोधिसत्व ने हाथ में एक पद्म (कमल का फूल) पकड़ा हुआ है, उनके कंधे चौड़े हैं और उनका शरीर एक हाथ की ओर झुकी हुई अवस्था में है, जो चित्र को एक गति प्रदान करता हुआ प्रतीत हो रहा है।

गांधार कला की विशेषताएं

- **प्रभाव:** इसे यूनानी या हेलेनिस्टिक कला या हिन्द-यूनानी कला भी कहा जाता है।
- **बलुआ पत्थरों के प्रकार:** ग्रे/नीला धूसर।
- **धार्मिक प्रभाव:** मुख्य रूप से बौद्ध।
- **संरक्षक:** कुषाण राजवंश।
- **क्षेत्र:** उत्तर-पश्चिम सीमांत क्षेत्र।
- **मूर्तियों की विशेषताएं:** आध्यात्मिक बुद्ध (दाढ़ी एवं मूंछें हैं), कम आभूषण पहने हुए, लहराते केश, बड़ा ललाट, बड़े कान, आंखें आधी बंद, सिर पर उभार आदि।

भारत में शयनावस्था में बुद्ध

- अजंता की **गुफा संख्या 26 में 24 फीट लंबी और नौ फीट ऊंची शयनावस्था में बुद्ध की मूर्ति** है, जिसके बारे में माना जाता है कि इसे 5वीं शताब्दी ईस्वी में निर्मित किया गया था।
- **कुशीनगर** (वर्तमान उत्तर प्रदेश - जहां बुद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया था) में परिनिर्वाण स्तूप के भीतर 6 मीटर लंबी लाल बलुआ पत्थर की एक एकाश्म शयनावस्था में बुद्ध की मूर्ति प्रतिष्ठापित है।

संबंधित तथ्य

- हाल ही में, कर्नाटक के **उडुपी जिले में अलेम्बी से बुद्ध की लघु मूर्ति** प्राप्त हुई है।
- यह मूर्ति कोमल बलुआ पत्थर से निर्मित है। यह **सारनाथ बुद्ध की प्रतिकृति की तरह दिखती है।**
- बुद्ध **धर्म चक्र प्रवर्तन मुद्रा** में कमलासन पर विराजमान हैं।
- यह मूर्ति **गुप्त शैली** में है।

भारत के बाहर शयनावस्था में बुद्ध

- **श्रीलंका और भारत में बुद्ध को अधिकतर आसन मुद्रा** में ही चित्रित किया जाता है, जबकि थाईलैंड तथा दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य हिस्सों में **शयनावस्था मुद्राएं** अधिक प्रचलित हैं।
- विश्व में सबसे बड़ी शयनावस्था में बुद्ध की प्रतिमा **600 फुट ऊँची विंसिन ताव्या बुद्ध प्रतिमा** है। इसे वर्ष 1992 में **म्यांमार के मौलामियायन** में निर्मित किया गया था।
- पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में स्थित **भामला बुद्ध परिनिर्वाण** को विश्व में अपनी तरह की सबसे पुरानी मूर्ति माना जाता है। यह 1800 वर्ष से अधिक प्राचीन है।
- 15वीं शताब्दी के अंत में, **कंबोडिया के अंगकोर में बाफून के हिंदू मंदिर स्थल पर शयनावस्था में बुद्ध की 70-मीटर ऊंची मूर्ति** निर्मित की गई थी।

© Vision IAS

बौद्ध धर्म के तहत विकसित चार प्रमुख संप्रदाय

हीनयान संप्रदाय	महायान संप्रदाय	थेरवाद संप्रदाय	वज्रयान (तांत्रिक अनुष्ठानों पर आधारित) संप्रदाय
▸ इसका अर्थ है– **छोटा वाहन**। ▸ यह बौद्ध धर्म की **रूढ़िवादी शाखा है**। ▸ इसमें बुद्ध के **मूल धर्मोपदेश के अनुयायी** शामिल हैं। ▸ यह संप्रदाय मूर्ति या मूर्ति **पूजा में विश्वास नहीं** रखता। ▸ जनता से संवाद स्थापित करने के लिए विद्वान **पालि भाषा** का प्रयोग करते थे। 	▸ इसका अर्थ है– **बड़ा वाहन**। ▸ यह अधिक **उदारवादी** संप्रदाय है। ▸ ये बुद्ध के **देवत्व में विश्वास** रखते हैं। इस संप्रदाय का मानना है कि बोधिसत्व बुद्ध के अवतार हैं। ▸ यह बुद्ध की **मूर्ति पूजा** में विश्वास रखता है। ▸ इस संप्रदाय के विद्वान मुख्य रूप से संस्कृत भाषा का प्रयोग करते थे। 	▸ यह **हीनयान का एक उप–संप्रदाय (स्थविरवाद)** है। ▸ इसका तात्पर्य **श्रेष्ठ भिक्षुओं** की शाखा से है। ▸ इसका अंतिम लक्ष्य **क्लेश** (इसमें मानसिक अवस्थाएं जैसे चिंता, भय, गुस्सा, ईर्ष्या आदि शामिल हैं) **का अंत** है और **निर्वाण की उत्कृष्ट अवस्था हासिल** करना है। ▸ यह **विभाज्यवाद** की परिकल्पना में विश्वास रखता है, अर्थात विश्लेषण का ज्ञान। ▸ **पालि** इस संप्रदाय की धार्मिक भाषा थी। 	▸ यह **महायान** का एक उप–संप्रदाय है। ▸ यह **हिंदू धर्म** से प्रभावित है। ▸ इसमें **ब्राह्मणवादी रीतियों (वेद)** के साथ बौद्ध सिद्धांतों का मेल है। तारा इस संप्रदाय की मुख्य देवी है। ▸ यह **तंत्र, मंत्र और यंत्र** में विश्वास रखता है। ▸ विद्यार्थियों के लिए मुख्य रूप से **शास्त्रीय तिब्बती भाषा** का प्रयोग किया जाता था।

बुद्ध से संबंधित विभिन्न मुद्राएं

भूमिस्पर्श मुद्राः

- इस मुद्रा में बुद्ध का दाहिना हाथ, जिसकी हथेली अंदर की ओर है, पृथ्वी को स्पर्श करती हुई मुद्रा में आसीन है तथा बायां हाथ उनकी गोद में है।
- यह मुद्रा **'मारविजय'** की प्रतीक है।
- यहां पृथ्वी प्रतीकात्मक रूप से उनके **ज्ञान की सत्यता की साक्षी** के रूप में है।
- इस मुद्रा का संबंध केवल बुद्ध से है।

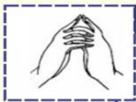

उत्तरबोधि मुद्राः

- इस मुद्रा में दोनों हाथों को जोड़ कर हृदय के समीप रखा जाता है और तर्जनी उंगलियां एक–दूसरे को स्पर्श करते हुए ऊपर की ओर होती हैं तथा अन्य उंगलियां अंदर की ओर मुड़ी होती हैं।
- इसका अर्थ है परम/सर्वोच्च ज्ञान।
- यह मुद्रा ऊर्जावान भावों का आदान–प्रदान करने के लिए जानी जाती है तथा पूर्णता का प्रतीक है।

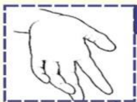

वरद मुद्राः

- इस मुद्रा में बाएं या दाएं हाथ को नीचे (भूमि) की ओर बढ़ाया जाता है, जिसमें खुले हाथ की हथेली बाहर की ओर होती है।
- यह मुद्रा दान, करुणा या इच्छाओं को पूर्ण करने का संकेत देती है।
- यह मुद्रा पांच विस्तारित उंगलियों के माध्यम से पांच **सिद्धियों**: उदारता, नैतिकता, धैर्य, प्रयास और ध्यान की एकाग्रता का प्रतीक है।
- इस मुद्रा का प्रयोग देवी–देवताओं तथा राजाओं द्वारा किया जाता था।

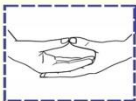

ध्यान मुद्राः

- इस मुद्रा में दोनों हाथों को अंगूठे की युक्तियों के साथ गोद में रखा जाता है और उंगलियां एक दूसरे को स्पर्श करती हैं।
- यह मुद्रा ध्यान को इंगित करती है तथा इसे **'समाधि'** या **'योग'** भी कहा जाता है।
- बुद्ध द्वारा बोधि–वृक्ष के नीचे अंतिम ध्यान के दौरान इस मुद्रा का उपयोग किया गया था।
- यह मुद्रा बुद्ध, भिक्षुओं और तपस्वियों से संबंधित है।

अंजलि मुद्राः

- इस मुद्रा में दोनों हाथ वक्ष–स्थल के समीप तथा हथेलियां और उँगलियां एक दूसरे के लंबवत रूप से जुड़ी हुई **(नमस्कार मुद्रा)** अवस्था में होती है।
- यह मुद्रा सम्मान, अभिवादन और प्रार्थना
- यह मुद्रा उन बोधिसत्वों (सन्यासियों) के लिए है, जो पूर्ण ज्ञान का लक्ष्य निर्धारित कर उसकी प्राप्ति के लिए तैयारी करते है।

करण मुद्राः

- इस मुद्रा में हथेली आगे की ओर, क्षैतिज या लंबवत रूप से फैली हुई होती है तथा–
  - अंगूठा मुड़ी हुई दो मध्यमा अंगुलियों को दबाए रखता है, परन्तु तर्जनी और छोटी उंगली सीधे ऊपर की ओर उठी हुई होती है।
- यह मुद्रा बुराई का उन्मूलन करने तथा राक्षसों और नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने का संकेत देती है।

वितर्क मुद्राः

- इस मुद्रा में अंगूठे और तर्जनी की युक्तियाँ एक–दूसरे को स्पर्श करती हैं, जिससे एक चक्र/वृत्त बन जाता है–
  - **यह चक्र ऊर्जा के निरंतर प्रवाह** को बनाए रखता है, जैसे कोई शुरुआत या अंत नहीं है, केवल पूर्णता है।
- यह मुद्रा शिक्षण तथा चर्चा या बौद्धिक वाद–विवाद को इंगित करती है।
- इसका उपयोग तपस्वियों, भिक्षुओं द्वारा प्रवचन प्रक्रिया के दौरान किया जाता था।

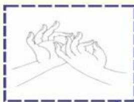

धर्मचक्र मुद्राः

- इस मुद्रा में दोनों हाथ शामिल होते हैं, दाहिना हाथ वक्ष–स्थल पर होता है और हथेली बाहर की ओर होती है। तर्जनी और अंगूठे की युक्तियों को मिलाकर एक रहस्यवादी चक्र बनता है।
- बायां हाथ अंदर की ओर मुड़ा हुआ होता है और इस हाथ की तर्जनी उँगली व अंगूठा दाहिने हाथ के घेरे को स्पर्श करने की अवस्था में होते हैं।
- यह मुद्रा 'धर्म या कानून के घूमते चक्र' को संदर्भित करती है।
- इस मुद्रा का प्रयोग बुद्ध द्वारा केवल सारनाथ के मृगशिखावन में अपने प्रथम उपदेश के दौरान किया गया था।

अभय मुद्राः

- इस मुद्रा में दाहिने हाथ की हथेली बाहर की ओर तथा उंगलियां सीधी (लंबरूप) और आपस में जुड़ी हुई अवस्था में होती है।
- यह मुद्रा **निर्भयता** को इंगित करती है।
- बुद्ध द्वारा यह मुद्रा ज्ञान प्राप्त करने के तुरंत पश्चात दर्शाई गई थी।
- इस मुद्रा का प्रयोग देवी–देवताओं और बुद्ध द्वारा किया गया है।

वज्र मुद्राः

- इस मुद्रा में बाएं हाथ की सीधी तर्जनी को दाहिने हाथ की मुट्ठी में रखा जाता है।
यह मुद्रा ज्ञान या परम ज्ञान के महत्व को दर्शाती है।

क्षेपण मुद्राः

- इस मुद्रा में दोनों हाथों की उंगुलियों और अंगूठे को आपस में फंसा कर पकड़ बनाई जाती है तथा तर्जनी उंगुलियों को सीधा नीचे की ओर रखा जाता है।
- इस मुद्रा का उपयोग नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने और सकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करने के साधन के रूप में उपयोग किया जाता है।

1.4. अन्य महत्त्वपूर्ण सुर्ख़ियाँ (Other Important News)

हरियाणा में 1600 वर्ष प्राचीन 'स्थायी बस्ती' के पुरातात्विक प्रमाण प्राप्त हुए	• इस पुरातात्विक स्थल की खोज **हरियाणा के संधाई गांव (यमुनानगर जिले)** के निकट की गई है। इसका संबंध पौराणिक सरस्वती नदी के समीप की विलुप्त हो चुकी बस्तियों से है।
	
	• पौराणिक नदी **सरस्वती** प्राचीन हिंदू ग्रंथों में वर्णित है। इस नदी के बारे में माना जाता है कि यह नदी 5,000 वर्ष पूर्व अस्तित्व में थी, लेकिन भूकंप और अन्य भौगोलिक गतिविधियों के कारण भूमिगत रूप से विलुप्त हो गई।
	• **मुख्य खोज:**
	  ○ **अधिवास के साक्ष्य:** ईंटें, मिट्टी के बर्तन और मूर्ति के अवशेष।
	  ○ **धार्मिक साक्ष्य:** नागर शैली में निर्मित पाषाण के मंदिर, संरचना के आधार से संबंधित सामग्री के अतिरिक्त स्तंभ का प्रमाण आदि।
	  ○ इस क्षेत्र से श्री-हा (Sri-ha) प्रकार के **हिंद-ससानी सिक्के प्राप्त हुए** हैं, जो इस क्षेत्र में 7वीं शताब्दी में प्रचलित थे।
	  ○ यहां पाई गई **कलाकृतियां गुप्तोत्तर काल से लेकर गुर्जर-प्रतिहार काल (8वीं-9वीं शताब्दी ईस्वी) की कलाकृतियों की तरह दिखती हैं।**
	  ○ इस स्थल की कालावधि **कुषाण काल से गुर्जर-प्रतिहार काल के बीच की हो सकती है।** हालांकि, कुछ ईंटें स्पष्ट तौर पर कुषाण काल की हैं।

पोरुनै नदी (तामिरबरनी) सभ्यता	• तमिलनाडु के **तूतुकुड़ी जिले के शिवकलाई** में एक दफन कलश में मिट्टी के साथ पाए गए चावल के अवशेष के **कार्बन-14 डेटिंग विश्लेषण** से उसकी अवधि (1155 ईसा पूर्व) का आकलन किया गया है। **तामिरबरनी सभ्यता 3200 वर्ष प्राचीन है।**
	
	• यह संभवतः **वैगई सभ्यता** से भी प्राचीन **सभ्यता** है। वैगई संस्कृति को 2,600 वर्ष प्राचीन माना जाता है।
	  ○ वैगई सभ्यता **'उद्योग और लिपि से समृद्ध एक स्वदेशी, सुविकसित आत्मनिर्भर शहरी संस्कृति थी।** यह प्रतिबिंबित करती है कि उस युग के लोग अत्यधिक शिक्षित थे।
	• **इसकी तमिल संबद्धता** की ख़ोज में अन्य राज्यों तथा देशों में भी पुरातात्विक उत्खनन किया जाएगा।
	  ○ **शामिल किए जाने वाले राज्य:** प्रथम चरण में **मुजिरिस** के प्राचीन बंदरगाह (जिसे अब केरल में पट्टनम के नाम से जाना जाता है) में उत्खनन किया जाएगा। **चेर साम्राज्य** की प्राचीनता व संस्कृति स्थापित करने हेतु केरल के पुरातत्वविदों के साथ संयुक्त शोध किया जाएगा। आंध्र प्रदेश के **वेंगी**, कर्नाटक के **तलैकडु** और ओडिशा के **पलूर** में भी अध्ययन किए जाएंगे।
	  ○ **पुरातात्विक उत्खनन में शामिल किए जाने वाले देश:**
	    ▪ **मिस्र** (कुसीर अल-कादिम और पर्निका अनेके) तथा **ओमान (खोर रोरी) में तमिल लिपियों वाले मृदभांड पाए गए हैं।**
	    ▪ दक्षिण पूर्वी एशियाई देश यथा- **इंडोनेशिया, थाईलैंड, मलेशिया और वियतनाम** आदि। इन देशों में **राजा राजेंद्र चोल ने वर्चस्व स्थापित किया था।**

एलोरा की गुफाएँ	• एलोरा की गुफाएँ (6ठी से 8वीं सदी ईसवी) **महाराष्ट्र के औरंगाबाद में सह्याद्री पहाड़ियों में स्थित हैं।**
	  ○ इन गुफाओं को **वर्ष 1983 में यूनेस्को (UNESCO) द्वारा विश्व धरोहर स्थल** के रूप में सूचीबद्ध किया गया था। ये अपने हिंदू, बौद्ध और जैन मंदिरों तथा स्मारकों के लिए ज्ञात हैं।
	  ○ ये **34 गुफाओं का समूह** हैं, जिनमें से 17 ब्राह्मण, 12 बौद्ध और 5 जैन मतों से संबंधित हैं।

© Vision IAS

	○ ये विश्व में **सर्वाधिक विशाल एकल शैलकर्तित बौद्ध मठ गुफा परिसरों** में से एक हैं। ○ इसमें विश्व की सबसे बड़ी **एकल एकाश्म संरचना** शामिल है, जो लोकप्रिय रूप से **कैलाश गुफा** के रूप में ज्ञात है। 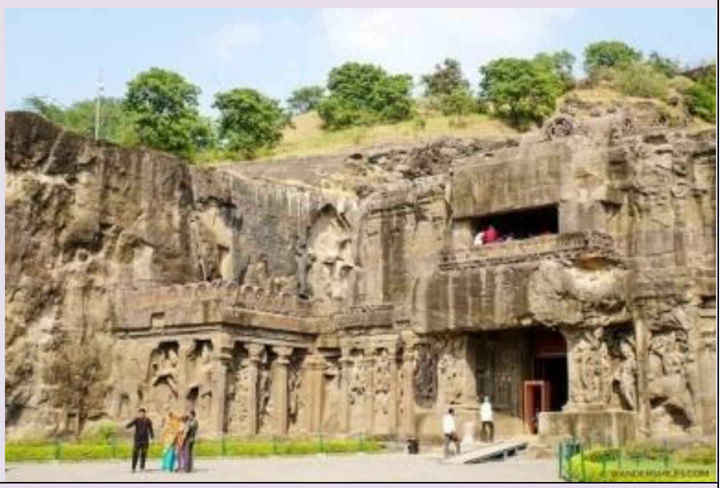
त्रि-रश्मी बौद्ध गुफा	• **नासिक (महाराष्ट्र) के त्रि-रश्मी बौद्ध गुफा परिसर में 3 नई गुफाएँ खोजी गई हैं।** ○ सभी गुफाओं में **बरामदे हैं और उनमें भिक्षुओं के लिए पाषाण निर्मित एक वर्गाकार चबूतरा** भी है। 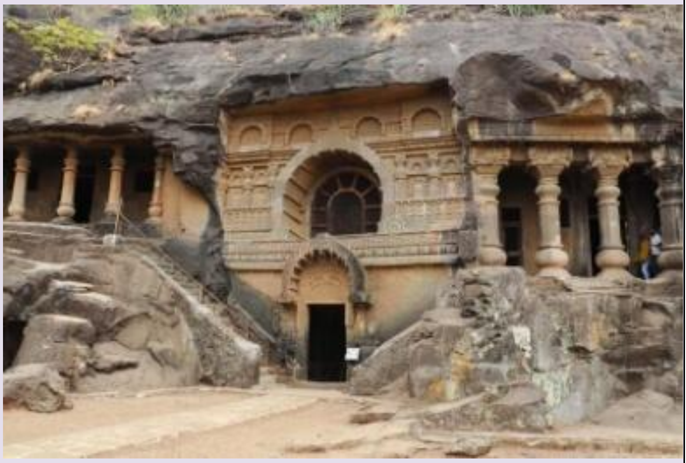 • **त्रिरश्मी गुफाएँ पांडव लेनी** के नाम से भी विख्यात हैं। यह गुफा परिसर 24 गुफाओं का एक समूह है, जिसे दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व और छठी शताब्दी ईस्वी के मध्य **त्रिरश्मी पहाड़ी** पर निर्मित किया गया था। ○ गुफाओं के परिसर की खोज वर्ष 1823 में **कैप्टन जेम्स डेलामाइन** द्वारा की गई थी। ○ ये गुफाएँ विहार और चैत्य दोनों हैं। ○ विहार मठ हैं और चैत्य प्रार्थना सभाएं हैं। • ये बौद्ध धर्म के **हीनयान मत** (जो बुद्ध की प्रतीकों के रूप में उपासना करते थे) और **महायान मत** (जो बुद्ध की मूर्ति रूप में आराधना करते थे) दोनों से संबंधित हैं। 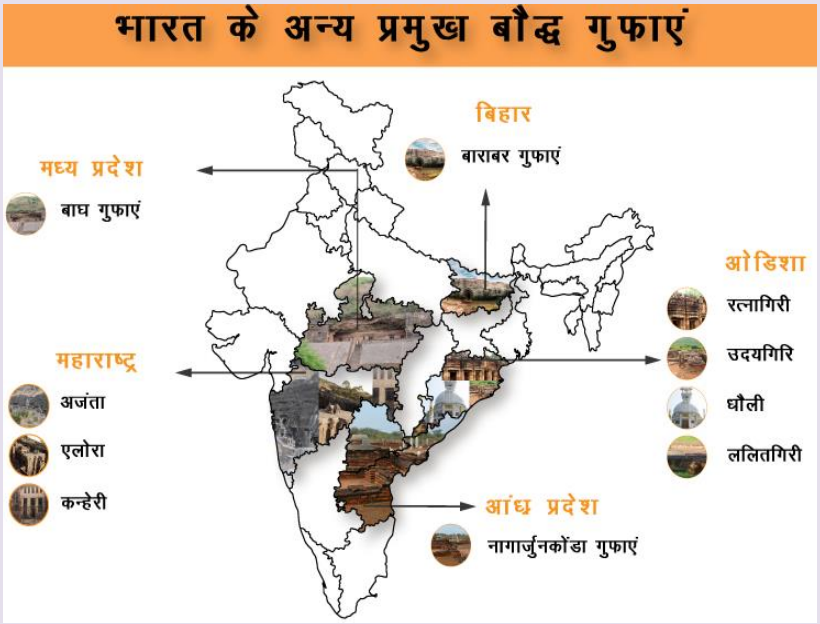
रमना काली मंदिर	• भारत के राष्ट्रपति ने **ढाका (बांग्लादेश) में नवीनीकृत श्री रमना काली मंदिर का उद्घाटन** किया। ○ यह मंदिर **भारत और बांग्लादेश के लोगों के बीच आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक बंधन का प्रतीक** माना जाता है। • मार्च 1971 में अपने **ऑपरेशन सर्चलाइट के दौरान पाकिस्तानी सेना द्वारा मंदिर को नष्ट कर दिया गया था।** यह ऑपरेशन एक क्रूर कार्रवाई थी, जिसके कारण **बांग्लादेश मुक्ति संग्राम** हुआ था। • मूल **रमना कालीबाड़ी का निर्माण मध्ययुग** के दौरान किया गया था। यह अपनी ऊंची संरचना के लिए प्रसिद्ध था। • वर्ष 1929 में, मंदिर परिसर ने प्रसिद्ध **संत आनंदमयी के भक्तों के लिए** एक **अतिरिक्त इमारत का अधिग्रहण** किया था।

सब्ज बुर्ज (Sabz Burj)	• **दिल्ली में हुमायूं के मकबरे के समीप स्थित,** सब्ज बुर्ज का मकबरा, एक अष्टकोणीय मकबरा है। • इसकी **संरचना में शीर्ष पर एक नीला गुंबद** है और इसे लोकप्रिय रूप से **नीली छतरी** के रूप में जाना जाता है। • कुछ मुगल इतिहासकारों के अनुसार सब्ज़ बुर्ज मकबरा **फहीम खान** के लिए बनवाया गया था, जिसकी मृत्यु 1626 ईस्वी में हुई थी। वह **चौथे मुगल सम्राट जहांगीर के शासनकाल के दौरान अब्दुर रहीम खान का सेवक** था। 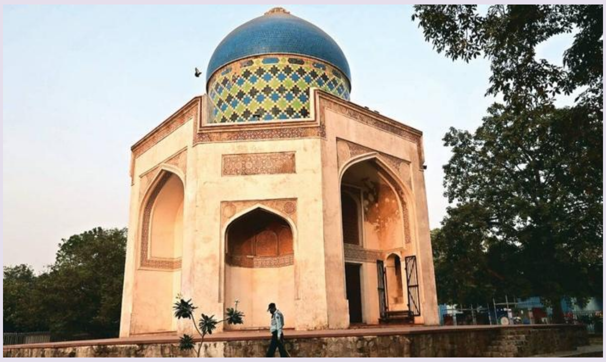 • यह **मध्य एशिया के समान तैमूरी स्थापत्य शैली** को प्रदर्शित करता है। • इसके नीचे दफनाए गए व्यक्तियों की पहचान के बारे में कोई उल्लेख नहीं किया गया है। ○ हालांकि, **शुद्ध सुनहरे और लैपिज़ (Lapiz) रंग** में चित्रित इसकी दोहरी गुंबद संरचना से युक्त छत के कारण इसका अत्यधिक महत्व है। इसके संरक्षण के प्रयास शुरू होने के बाद इसने सभी का ध्यान आकर्षित किया है। ○ **लाजवर्द (लैपिस लाजुली) एक गहरे नीले रंग की कायांतरित चट्टान है।** इसका उपयोग अर्ध-कीमती पत्थर के रूप में किया जाता है। इसे प्राचीन काल से ही अपने गहरे रंग के कारण अत्यधिक मूल्यवान माना जाता रहा है।

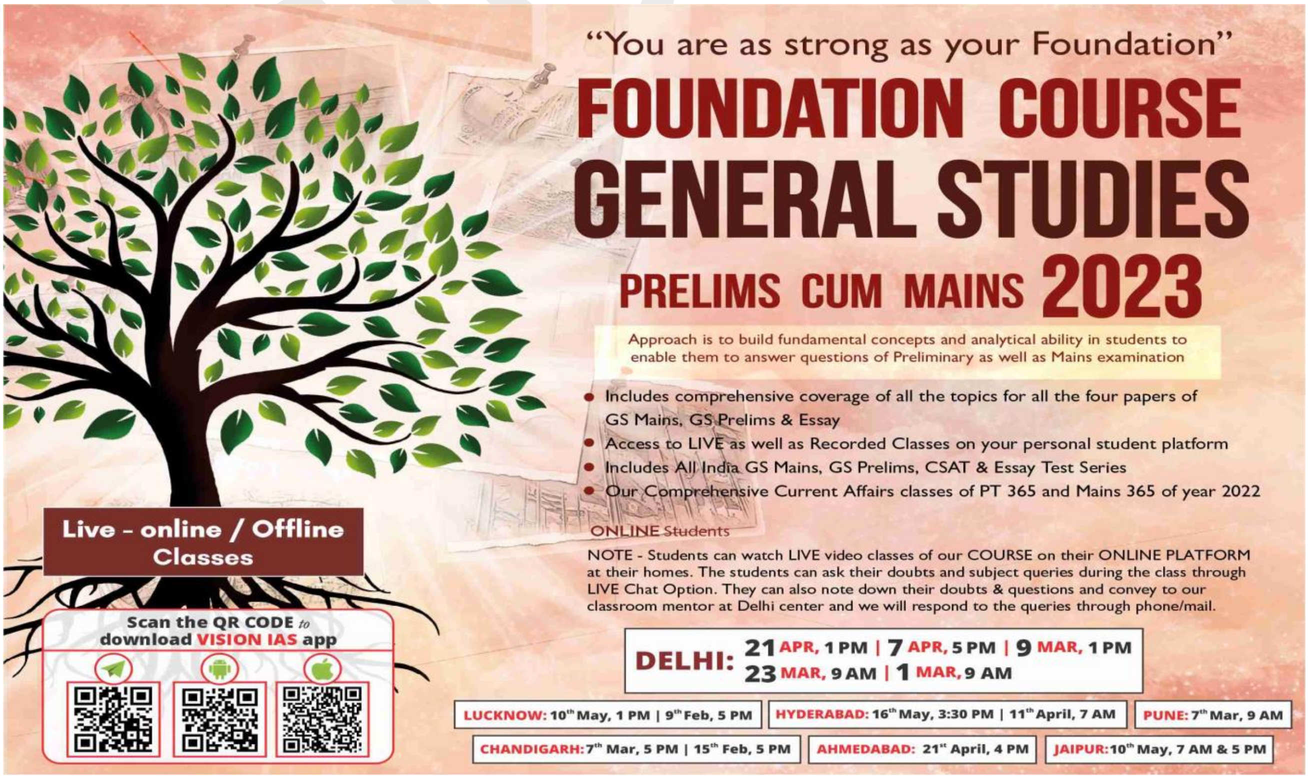

2. चित्रकला और अन्य कला शैलियां (PAINTINGS AND OTHER ART FORMS)

2.1. मांगर बणी गुफा चित्र (MANGAR BANI CAVE PAINTINGS)

सुर्ख़ियों में क्यों?

पुरातत्वविदों ने दिल्ली के समीप कुछ गुफा चित्रों की खोज की है। **अरावली पर्वत श्रृंखलाओं की क्वार्टजाइट चट्टानों और हरियाणा में मांगर बणी नामक पवित्र वनों** के मध्य पाए गए इन चित्रों के उच्च पुरापाषाण युग के होने की संभावना है।

मांगर बणी गुफा चित्रों के बारे में

- गुफा चित्रों में मानव आकृतियों, जानवरों, पत्तियों और ज्यामितीय आकृतियों के चित्र शामिल हैं।
  - ये चित्र **भीमबेटका (मध्य प्रदेश)** का स्मरण कराते हैं, जो **भारत में सर्वाधिक प्राचीन ज्ञात गुफा कलाओं में से एक** है (मध्यपाषाण युग, लगभग 10,000 वर्ष पूर्व)।
- **अधिकांश चित्रों का रंग गेरू** है, परन्तु कुछ श्वेत भी हैं।
  - गेरू एक मृदा का वर्णक है। इसमें फेरिक ऑक्साइड होता है। आमतौर पर यह मृत्तिका (clay) से युक्त, हल्के पीले या भूरे या लाल रंग में होता है।
- विशेषज्ञों के अनुसार, मांगर गुफा कला 20,000-40,000 वर्ष प्राचीन है।
- **महत्व:** पुरातत्वविद इन चित्रों को **सोअनियन संस्कृति (सोन घाटी)** की निरंतरता से जोड़कर देखते हैं।
  - सोअनियन भारतीय उपमहाद्वीप के शिवालिक क्षेत्र में **निम्न पुरापाषाण काल की एक पुरातात्विक संस्कृति है।**

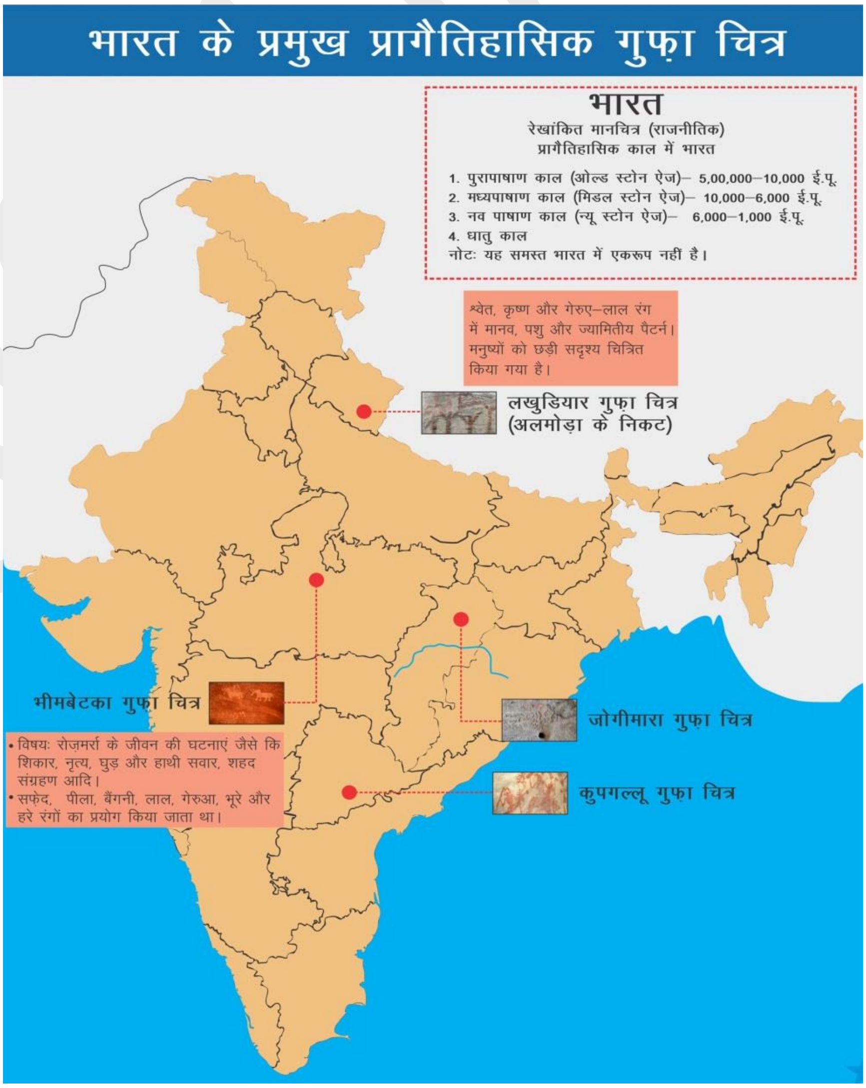

PT 365 - संस्कृति

प्रागैतिहासिक गुफा चित्रकला की मुख्य विशेषताएं

- **तीन श्रेणियों में विभाजित– मनुष्य, पशु और ज्यामितीय।**
- इन चित्रों में **लहरदार रेखाएं, आयताकार ज्यामितीय डिज़ाइन और अनेक बिंदुओं के समूह** देखे जा सकते हैं।
- **विषयः** शिकार, नृत्य आदि जैसे **दिन–प्रतिदिन के जीवन का चित्रण।**
- कुछ **चित्रों को एक के ऊपर एक करके चित्रित किया गया है।**
- इनमें **मनुष्यों को छड़ी जैसे रूपों में** दर्शाया गया है।
- कुछ वाश पेंटिंग्स (धवन चित्र) भी हैं, परन्तु अधिकांश चित्र ज्यामितीय आकृतियों से भरे हुए हैं।
- श्वेत, पीले, नारंगी, लाल गेरू, बैंगनी, भूरे, हरे और काले विभिन्न रंगों का उपयोग किया जाता था।
- मनुष्यों की तुलना में जानवरों के चित्र अधिक हैं।

ऐतिहासिक चित्रों की मुख्य विशेषताएं

- **मुख्य विषय–** धार्मिक, पौराणिक, राजप्रासाद के दृश्य आदि।
- छत के निकट **फूलों के रूपांकन, सजावट के लिए ज्यामितीय आकृति** आदि भी चित्रित की गई थी।
- जीवंत और चमकदार रंगों का उपयोग किया गया था।
- **आकृतियों में भाव–भंगिमा अत्यधिक लयबद्ध हैं।**
- **मुख्यतया लाल गेरू, चटकीला लाल (सिंदूर), पीला गेरू, नीला, लाजवर्द, काला (काजल), चाक सफेद, टेरावेर्ट और हरे रंगों का प्रयोग किया जाता था।**
- **चित्रों में विभिन्न त्वचा के लिए विभिन्न रंगों का भी उपयोग किया गया था जैसे कि भूरा, पीलापन लिए हुए भूरा, हरित, पीला गेरू आदि।**
- रूपरेखा के उभार हेतु भूरे रंग की मोटी गहरी रेखाओं का उपयोग किया गया है।
- रेखाएं सशक्त और ऊर्जा से परिपूर्ण हैं।
- आकृति संयोजनों में विशिष्ट चमक देने का प्रयास भी किया गया है।
- गुफाओं में प्रतीकात्मक भिन्नताएं हैं।

भारत में गुफा चित्रकारी

- भारत में सबसे प्राचीन चित्र उच्च या उत्तर पुरापाषाण काल (Upper Paleolithic Time) से संबंधित हैं।
- सबसे अधिक एवं सुंदर चित्र **मध्य प्रदेश में विंध्य पर्वत श्रृंखला और उत्तर प्रदेश में कैमूर की पहाड़ियों** (विंध्य पर्वत श्रृंखला का उत्तर प्रदेश में विस्तार) में पाए गए हैं।
- **इन चित्रों में प्रयुक्त तकनीक**

ऐतिहासिक चित्रों में शामिल तकनीक

- मुख्य रूप से **फ्रेस्को–सेक्को तकनीक** का उपयोग किया जाता था।
- इसमें, एक जैविक बंध और/या चूने के साथ मिश्रित रंग को एक सूखे प्लास्टर पर लगाया जाता था (फ्रेस्को–बूनो में, रंग को एक गीली दीवार पर लगाया जाता है)।
- इस तकनीक को **इटली** में अपनाया गया था।

प्रागैतिहासिक चित्रों में शामिल तकनीक

- पहले खनिज शैल खंडों को कूट–पीस कर पाउडर तैयार किया जाता था।
- वृक्ष की पतली रेशेदार टहनियों से बनी तूलिका (ब्रश) का प्रयोग कर चित्र बनाए जाते थे

© Vision IAS

प्रागैतिहासिक गुफा चित्रों का विकास		
उत्तर पुरापाषाण गुफा चित्र	**मध्यपाषाण गुफा चित्र**	**नवपाषाणकालीन गुफा चित्र**
• **सरल ज्यामितीय पशु और मानव** आकृतियां पहली बार चित्रित की गईं। • जानवरों को उनकी प्राकृतिक रूपरेखा में दिखाया गया था और मनुष्य को **शिकार या नृत्य की गतिशील** क्रिया में भावात्मक रूप में व्यक्त किया गया था। • इन चित्रों में सटीक 'S' आकार की मानव आकृतियों को दर्शाया गया है, जो विभिन्न गतिविधियों को दर्शाती हैं जैसे कि वे शिकार कर रहे हैं, नृत्य कर रहे हैं और दौड़ रहे हैं। • ऐसा प्रतीत होता है कि इस अवधि के दौरान यह गुफाओं का ऊपरी हिस्सा था, जिसे सर्वाधिक चित्रित किया गया था।	• कई **रूपांकनों व डिजाइनों के रूप में रचनात्मकता की व्यापकता दृष्टिगोचर** हुई है। आकृतियां अधिकतर मृदुतापूर्वक प्रवाहित महीन रेखाओं में दर्शाई गई हैं, जो गतिशील मुद्रा को व्यक्त करती हैं। • शिकारियों को **साधारण वस्त्र और आभूषण धारण किए हुए दर्शाया गया है, सिर-पर धारण किए जाने वाले आवरण और मुखौटे** भी कभी-कभी देखे जा सकते हैं। • **पशु रूप प्रकृतिवादी** चित्रण हैं जबकि **मानव आकृतियां स्थिर और भावात्मक** हैं। • **पुरुष आकृतियां छड़ी** के रूप में हैं, जबकि महिला आकृतियां सर्पिल या मधुकोष जैसी जटिल शारीरिक संरचना के साथ भारी बॉक्स के आकार में चित्रित हैं। • मानवों के पीछे दौड़ते विशाल जानवरों, उपचारात्मक एवं शवाधान आदि जैसी **मिथकीय छवियां** चित्रित की गई हैं। • **नृत्य, गर्भवती महिलाएं,** बच्चे के जन्म और एक बच्चे के साथ एक माता जैसे दृश्य भी चित्रित किए गये हैं। • **उदाहरण: लाखाजोर** (मछली पकड़ने का दृश्य, झोपड़ी में परिवार का भोजन करना), **भीमबेटका** (एक रोगी व्यक्ति का जादुई उपचार), **चतुर्भुजनाथ नाला** (गतिशील धनुर्धर) आदि।	• चित्रों में संचलन की अभिव्यक्ति का लोप है, आकृतियों में प्रतीकों का दोहराव हैं। **मनुष्य और पशु आकृतियां अधिक से अधिक योजनाबद्ध और शैलीबद्ध होने लगती हैं।** • आकार, सामान्यतया कम हो गया है, हालांकि कुछ बड़ी आकृतियां भी हैं। • शिकार के दृश्य हैं, परन्तु एक **बड़े समूह के कार्य के रूप में शिकार अनुपस्थित है।** इनमें, एकान्त शिकारी को चित्रित किया गया है। • **उदाहरण:** चतुर्भुजनाथ नाला (रथ चित्रण), कूपगल्लू, पिकलीहल, टेककलकोटा आदि।

2.2. कलमकारी चित्रकारी (Kalamkari Paintings)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, तमिलनाडु की **करुप्पुर कलमकारी चित्रकारी** को **भौगोलिक संकेतक[2] टैग** प्राप्त हुआ है।

अन्य संबंधित तथ्य

- तमिलनाडु की कलमकारी चित्रकारी **शुद्ध सूती वस्त्र** पर की जाती है। इसका मुख्य रूप से **मंदिरों में छत्रक आवरण, बेलनाकार लटकन,** रथ के आवरण और असमनागिरी (फाल्स सीलिंग के कपड़े के टुकड़े) **के लिए उपयोग किया जाता है।**
- कलमकारी चित्रकारी **करुप्पुर और अरियालुर जिले के उदयरपालयम तालुका के आसपास के गांवों में** और तंजावुर जिले के थिरुविदैमरुथुर तालुका में सिखानायकनपट्टी एवं थिरुपानंदल में तथा आस-पास के गांवों में की जाती हैं।

कलमकारी चित्रकारी के बारे में

- यह भारत के कुछ हिस्सों में सूती वस्त्रों पर हस्तनिर्मित चित्रकारी या साँचा छपाई (ब्लॉक प्रिंटेड) उत्पाद है। इसका उपयोग दीवारों पर सुसज्जा हेतु लटकाने के लिए किया जाता है।
- कलमकारी का शाब्दिक अर्थ, **कलम - पेन और कारी - कार्य** है। जिसका आशय **'कलम का उपयोग करके चित्रकारी करना'** है।
- यह चित्रकारी प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके इमली की कलम से **सूती या रेशमी वस्त्र पर की जाती है।**
- यह रंगीन कला **3000 ईसा पूर्व से भी अधिक प्राचीन है।**

क्या आप जानते हैं?

- **बणी ठणी**, चित्रों की **किशनगढ़ शैली** में एक भारतीय चित्र है। इस चित्र को **निहाल चंद** नाम के एक चित्रकार द्वारा बनाया गया था।
- इस चित्र की विषयवस्तु (प्रेरणा), सावंत सिंह के शासनकाल में किशनगढ़ में एक गायिका और नृतिका **बणी–ठणी** थी।

[2] Geographical Indication: GI

- कलमकारी की पारंपरिक शैली **कालहस्ती (चेन्नई के उत्तर में) और मसूलीपट्टनम (हैदराबाद के पूर्व में)** में विकसित हुई।
- उस समय के चित्रों में **हिंदू देवी-देवताओं एवं हिंदू पौराणिक कथाओं** के दृश्यों को चित्रित किया जाता था।
- इस कला को **मुगलों द्वारा** विशेष रूप से गोलकुंडा में **संरक्षण दिया गया था।**
- कलमकारी में **अधिकतर प्राकृतिक रंगों** का उपयोग किया जाता है, जिसमें 23 चरण शामिल होते हैं।

भारत में कलमकारी कला की विशिष्ट शैलियाँ:

- **श्रीकालहस्ती शैली:**
    - **हिंदू शासकों के संरक्षण वाले मंदिरों के आसपास** फलने-फूलने के कारण इसकी एक विशिष्ट धार्मिक पहचान है।
    - इस शैली में **कलम का उपयोग विषय के मुक्तहस्त चित्रण के लिए किया जाता है** और रंगों को पूरी तरह से हाथ से भरा जाता है।
    - इसके विषयों में **महान महाकाव्यों जैसे: रामायण, महाभारत और पुराणों तथा अन्य पौराणिक कथानक** शामिल होते हैं।
    - इन्हें **स्क्रॉल, मंदिर के लटकन और रथों पर** दर्शाया जाता है।
- **मछलीपट्टनम शैली:**
    - पेड्डाना कलमकारी को मछलीपट्टनम शैली के रूप में भी जाना जाता है। इसमें कपड़े पर वनस्पति रंग (वेजिटेबल डाई) से साँचा चित्रकारी (ब्लॉक-पेंटिंग) की जाती है।
    - यह **फारसी कला से प्रभावित है।**
    - इस चित्रकारी में **पेड़-पौधों, पुष्पों और पत्तियों के रूपांकनों की साँचा (ब्लॉकों) का उपयोग करके** छपाई की जाती है।

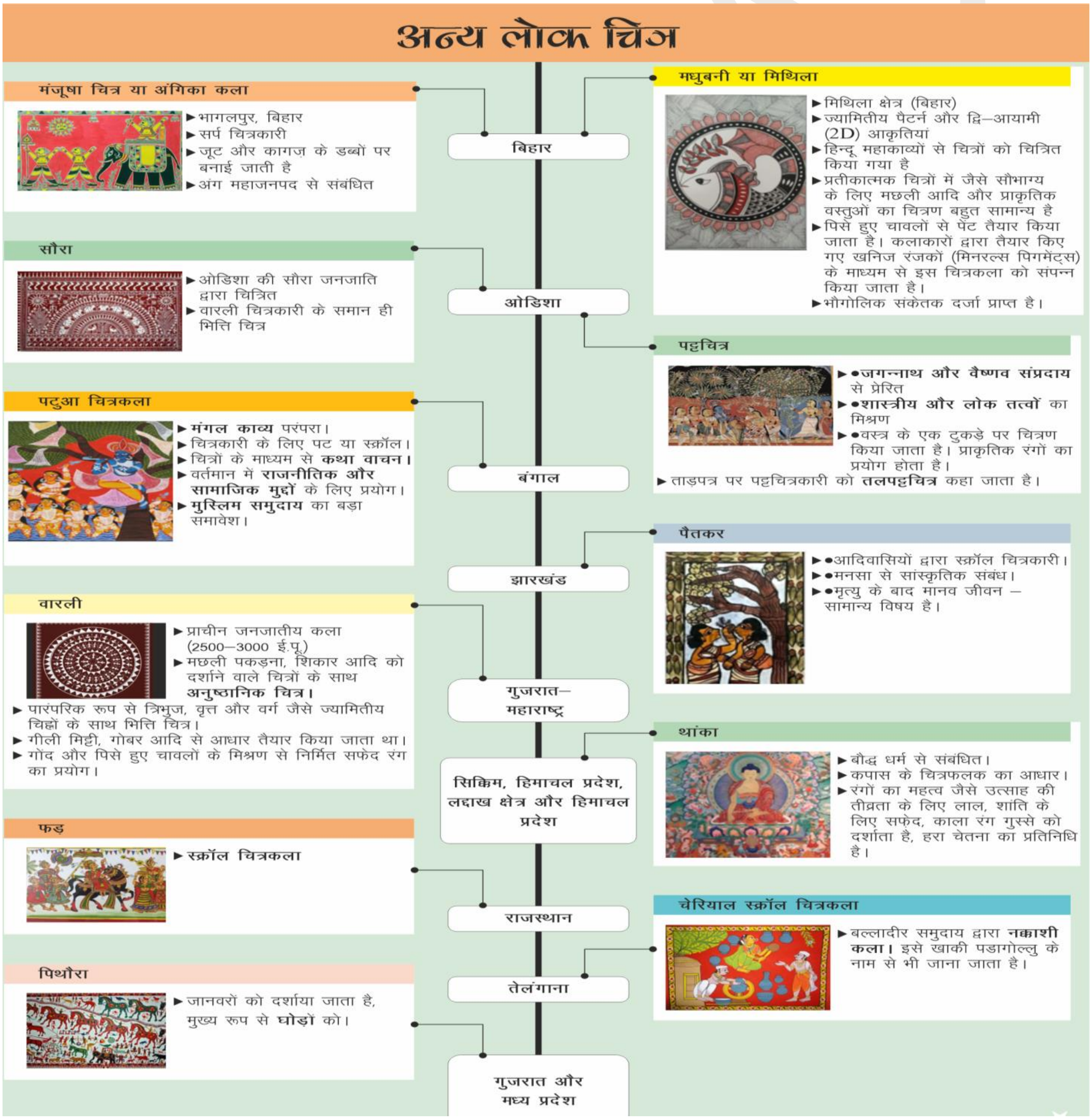

© Vision IAS

2.3. पुतुल नाच (Putul Nautch)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, यूनिसेफ (UNICEF) के सहयोग से असम स्थित एक ट्रस्ट ने पुतुल नाच का उपयोग करते हुए तीन लघु चलचित्रों का निर्माण किया है। इसका उद्देश्य **कोविड के संदर्भ में उचित व्यवहार पर व्यापक जागरूकता सृजित करना है।**

पुतुल नाच के बारे में

- यह असम व पश्चिम बंगाल की **छड़ पुतली कला है।** यह **पूर्वोत्तर भारत के कुछ हिस्सों में भी विस्तृत है।**
- **इन पुतलियों को लकड़ी से तराशा जाता है।** पुतलियां 1.5 मीटर लंबी होती हैं और खोखली लकड़ी या बांस से निर्मित होती हैं।
    - इनके **सिर टेराकोटा से निर्मित** होते हैं।
    - इन **पुतलियों में अधिकतर तीन जोड़ होते हैं।** सिर मुख्य छड़ पर टिका होता है, और गर्दन पर जुड़ा होता है। छड़ से जुड़े दोनों हाथों को कंधों पर जोड़ा जाता है।
- **असम में,** यह तीन क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न विशेषताओं के साथ प्रदर्शित की जाती है।
    - **निचला असम:** पुतला-भूरिया और पुतला-भाओना।
    - **ऊपरी असम (माजुली द्वीप):** शंकरदेव द्वारा विकसित अंकिया नाट शैली।
    - **उत्तरी असम:** यह विषय और परिधान के मामले में **असम के सचल रंगमंच (भ्रामयमन)** से काफी मात्रा में प्रेरित है।

भारतीय कठपुतली कला

- भारत में **पुतली कला के चार प्रमुख प्रकार** हैं, जिन्हें निम्नलिखित में वर्गीकृत किया गया है।

धागा पुतली	छाया पुतली
• धागा पुतली (या कठपुतली) में संयुक्त अंग होते हैं, इनके जोड़ युक्त अंग तथा **धागों द्वारा संचालन इन्हें अत्यंत लचीलापन प्रदान करते हैं।** इसलिए, इन्हे पुतली का सबसे मुखर रूप कहा जाता है। • **राजस्थान, ओडिशा, कर्नाटक** और **तमिलनाडु** ऐसे प्रांत हैं, जहां यह पुतली कला पल्लवित हुई है। • पुतली कला जो धागा पुतली के अंतर्गत आती है, वह है - **कठपुतली** (राजस्थान), **गोम्बेयेट्टा** (कर्नाटक), **बोम्मलट्टम** (यह छड़ और धागा पुतली का मिश्रण है)(तमिलनाडु), **कुनढेई** (ओडिशा)।	• छाया पुतलियां चपटी होती हैं, अधिकांशत: वे **चमड़े से निर्मित होती हैं।** उन्हें पारभासी बनाने के लिए संशोधित किया जाता है। • छाया पुतली की यह परंपरा **ओडिशा, केरल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र** और **तमिलनाडु** में प्रचलित है। • **रावणछाया (ओडिशा), तोगालुगोम्बेयट्टा (कर्नाटक), तोलु बोम्मालट्टा (आंध्र प्रदेश)** कुछ लोकप्रिय छाया पुतलियाँ हैं।

© Vision IAS DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI

दस्ताना पुतली

दस्ताना पुतली को भुजा, कर या हथेली पुतली भी कहा जाता है।

- भारत में दस्ताना पुतली की परम्परा **उत्तर प्रदेश, ओडिशा, पश्चिमी बंगाल** और **केरल** में लोकप्रिय है।
    - उत्तर प्रदेश के दस्ताना पुतली नाटक सामाजिक विषय वस्तु प्रस्तुत करते हैं, तो ओडिशा में ये नाटक राधा-कृष्ण की कहानियों पर आधारित होते हैं।
    - **पावाकूथू, केरल** का पारंपरिक दस्ताना पुतली नाटक है।

छड़ पुतली

- छड़ पुतली वैसे तो **दस्ताना पुतली का अगला चरण है,** लेकिन यह उससे काफी बड़ी होती है तथा नीचे स्थित छड़ों पर आधारित रहती है और उसी से संचालित होती है।
- पुतली कला का यह रूप आज **पश्चिमी बंगाल** तथा **ओडिशा** में पाया जाता है।
- **पुतुल नाच, यमपुरी (बिहार)** लोकप्रिय छड़ पुतली है।

© Vision IAS

2.4. टॉयकैथॉन 2021 (Toycathon 2021)

सुर्ख़ियों में क्यों?

टॉयकैथॉन 2021 के ग्रैंड फिनाले का आभासी उद्घाटन किया गया था।

अन्य संबंधित तथ्य

- **टॉयकैथॉन भारतीय और वैश्विक दोनों बाजारों** के लिए असाधारण उच्च गुणवत्ता के साथ **स्थानीय सामग्रियों का उपयोग करके उन नए एवं अभिनव खिलौनों** की अवधारणा पर ध्यान केंद्रित करता है, जो **किफायती, वहनीय, सुरक्षित तथा पर्यावरण अनुकूल हैं।**
- **टॉयकैथॉन-2021 का आयोजन शिक्षा मंत्रालय द्वारा** पांच अन्य मंत्रालयों के समन्वय से किया गया था।

स्थानीय खिलौना उद्योग को बढ़ावा देने की आवश्यकता

- खिलौने युवा मन को **भारत के इतिहास और संस्कृति से संबद्ध होने में** सहायता कर सकते हैं, जो सामाजिक एवं मानसिक विकास और उनमें भारतीय दृष्टिकोण के विकास में सहायक है।
- भारत ने वर्ष 2020 में लगभग **1.5 बिलियन डॉलर के खिलौनों का आयात** किया था, जिसमें **चीन और ताइवान का घरेलू खिलौना बाजार में लगभग 90% हिस्सा** है।
- भारतीय गुणवत्ता परिषद (QCI) द्वारा किए गए एक अध्ययन के निष्कर्ष के अनुसार 67% आयातित खिलौने एक परीक्षण सर्वेक्षण में विफल रहे हैं। इससे स्थानीय स्तर पर सुरक्षित खिलौनों के उत्पादन के लिए गंभीर प्रयास किए जाने हेतु प्रोत्साहन मिला है।

भारत के पारंपरिक खिलौनों के बारे में

- **भारत के पास खिलौना बनाने की एक समृद्ध विरासत है।** ऐतिहासिक रूप से, भारत में खिलौने का अस्तित्व 5,000 वर्ष पुराना है।
- हड़प्पा और मोहनजोदाड़ो के उत्खनन में पाए गए खिलौने और गुड़ियों में **छोटी गाड़िया, नर्तकी** आदि शामिल थीं।
- भारत में अपने **खिलौनों के माध्यम से कहानी सुनाने की एक समृद्ध संस्कृति रही** है, जो जीवन के परिप्रेक्ष्य को दर्शाती है।
- धार्मिक प्रभाव ने **रामायण और महाभारत** जैसे महाकाव्यों की कहानियों को दर्शाने वाले खिलौनों के एक अलग सेट को भी जन्म दिया है।
- राज्य और संस्कृति-विशिष्ट भिन्नता बच्चों के लिए टेराकोटा, लकड़ी, लोहे और कपड़े जैसी सामग्री के आधार पर निर्मित विशेष खिलौने उपलब्ध करवाती है।

घरेलू खिलौना उद्योग को बढ़ावा देने के लिए की गई अन्य पहलें

- सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय ने **पारंपरिक उद्योगों के उन्नयन एवं पुनर्निर्माण के लिए कोष योजना (स्फूर्ति)**[3] आरंभ की है। इस योजना के अंतर्गत नवीनतम मशीनों, डिजाइन-केंद्रों, कच्चे माल के बैंक, कौशल विकास आदि के साथ सामान्य सुविधा केंद्र के निर्माण के लिए सहायता प्रदान की जाती है।
    - स्फूर्ति योजना के तहत देश भर में कुल 14 खिलौना क्लस्टरों को मंजूरी प्रदान की गई है।
- स्थानीय विनिर्माण को बढ़ावा देने तथा खिलौना और हस्तशिल्प निर्माताओं को प्रोत्साहित करने के लिए **भारतीय खिलौनों से संबद्ध कहानियों के प्रचार के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना (National Action Plan for Indian Toy Story)** आरंभ की गई है।
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020** के तहत **छठी कक्षा** से छात्रों को खिलौना निर्माण की कला सिखाई जाएगी।

2.5. सुर्ख़ियों में रहे कला के अन्य रूप (Other Art Form in News)

जलवायु परिवर्तन विश्व की प्राचीनतम गुफा कला को प्रभावित कर रही है	 • हाल ही में, शोधकर्ताओं ने निर्दिष्ट किया है कि **इंडोनेशिया के सुलावेसी द्वीप** पर 45,000-20,000 वर्ष पूर्व के **प्लाइस्टोसीन-युग के शैल-चित्रों** (Rock Painting) का **अत्यधिक तीव्र दर से अपक्षय** हो रहा है। • शोधकर्ताओं ने इन गुफा की सतहों से पृथक होने वाली पपड़ियों की खोज की है। रंगों/वर्णको के माध्यम से निर्मित की गई कलाकृति **हेलोक्लास्टी नामक एक प्रक्रिया के कारण क्षीण** हो रही है। यह प्रक्रिया क्षेत्र में **एकांतर आर्द्र और शुष्क मौसम के कारण** तापमान एवं आर्द्रता में बार-बार परिवर्तन के परिणामस्वरूप लवणीय क्रिस्टल के विकास से आरम्भ होती है। • सुलावेसी की गुफा कला **यूरोप की प्रागैतिहासिक गुफा कला से अधिक प्राचीन है।** • **भारत में भीमबेटका शैल आश्रयों में पाए जाने वाले कुछ पाषाण युग के शैल चित्र लगभग 30,000 वर्ष प्राचीन हैं।**

मीनाकारी	
	• प्रधान मंत्री ने अमेरिकी उपराष्ट्रपति को 'मीनाकारी' से अलंकृत शतरंज का सेट भेंट किया है।
	• **मीनाकारी के बारे में**
	  ○ यह **इनेमलन के माध्यम से धातुओं और चीनी मिट्टी की सतहों पर चित्रकारी करने तथा उन्हें रंगने की प्रक्रिया है।**
	    ▪ **मीनाकारी के काम कई प्रकार** के होते हैं, जो इस बात पर निर्भर करते हैं कि यह **अपारदर्शी, पारदर्शी या पारभासी** दिखाई दे रही है या नहीं।
	  ○ इसमें आमतौर पर जटिल डिजाइन शामिल होते हैं। इसे **व्यंजन परोसने वाले बर्तन, डिब्बों, पुष्पपात्रों, फ्रेम, प्रदर्शन आभूषणों और गहनों** के लिए एक सजावटी विशेषता के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।
	  ○ इसे **मुगलों** द्वारा भारत में प्रचलित किया गया था।
	  ○ **16वीं शताब्दी के मेवाड़ के राजा मान सिंह को जयपुर में मीनाकारी कला का संरक्षक माना जाता है।**
	• **बनारस गुलाबी मीनाकारी हस्तशिल्प को** वर्ष 2015 में **जी.आई. सर्टिफिकेट प्रदान किया गया था।**

अपतानी वस्त्र	• हाल ही में, **अरुणाचल प्रदेश ने अपतानी वस्त्र उत्पाद** के लिए भौगोलिक संकेतक (GI) टैग आवेदन दायर किया गया है।
	  ○ अपतानी जनजाति द्वारा बुना हुआ वस्त्र **अपने ज्यामितीय और ज़िगज़ैग प्रारूप** के लिए विख्यात है।
	  ○ वे मुख्य रूप से शॉल बुनते हैं, **जिन्हें जिग-जिरो और जिलान या जैकेट के रूप में जाना जाता है, जिसे सुपुंतरी** कहा जाता है।

[3] Scheme of Funds for Regeneration of Traditional Industries: SFURTI

	• **अपतानी जनजाति:** ○ **वे जिरो (अरुणाचल प्रदेश) गांव में बसे हुए हैं।** ○ वे बेंत और बांस शिल्प के साथ-साथ **मत्स्यन और धान की खेती के लिए** जाने जाते हैं। ○ वे **तानी नामक एक स्थानीय भाषा बोलते हैं** तथा सूर्य और चंद्रमा की पूजा करते हैं। ○ **महत्वपूर्ण त्यौहार:** द्री और म्योको त्योहार। 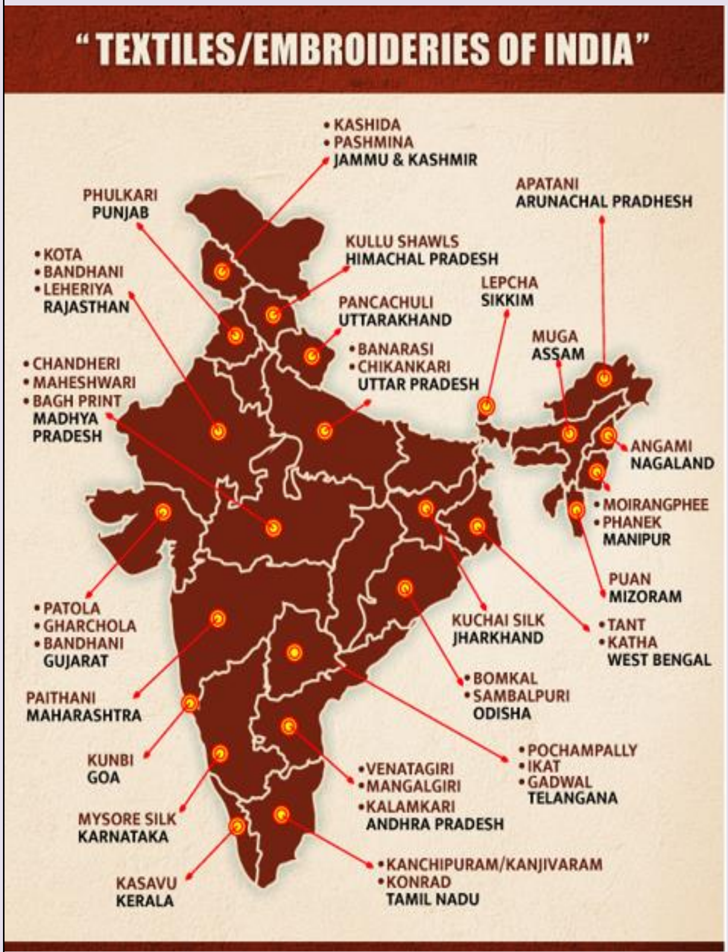
कावी चित्रकारी	• कावी, पुर्तगालियों द्वारा आरंभ की गई भित्ति चित्रकारी की एक शैली है। इसमें चमकीले लाल और सफेद रंगों का प्रयोग किया जाता है। • इसे फ्रेस्को की भांति गीले पलस्तर पर संपादित किया जाता है। ○ **फ्रेस्को ताजा चूने के पलस्तर पर भित्ति चित्र बनाने की एक तकनीक है।** • इसका नाम काव से लिया गया है। यह लैटेराइट मृदा में पाया जाने वाला एक लाल वर्णक है। इसका उपयोग पलस्तर की सफेद पृष्ठ-सतह पर चित्र बनाने के लिए किया जाता है। ○ कावी चित्रकारी में **एकमात्र लाल रंग का ही उपयोग** किया जाता है। • यह चित्रकारी **कोंकण क्षेत्र में विशेष रूप से गोवा, महाराष्ट्र और कर्नाटक के मंदिरों** में देखी जा सकती है।
लंगा-मांगणियार	• लंगा-मांगणियार कलाकारों को थार क्षेत्र के समृद्ध इतिहास और पारंपरिक ज्ञान का भंडार माना जाता है। इनके गाथागीतों, लोकगीतों और गीतों को प्रलेखन और डिजिटलीकरण के लिए एक पहल के माध्यम से संरक्षित किया जा रहा है।

	• **लंगा और मांगणियार** मुस्लिम संगीतकारों के वंशानुगत समुदाय हैं, जो ज्यादातर **पश्चिमी राजस्थान के जैसलमेर और बाड़मेर जिलों में** तथा पाकिस्तान के **सिंध के थारपारकर एवं संघर जिलों** में रहते हैं।
	  ○ दोनों समूह मुस्लिम हैं, **किंतु लंगा के संरक्षक मुस्लिम सिंधी सिपाही हैं, जबकि मांगणियार के संरक्षक मुख्य रूप से हिंदू हैं।**
	  ○ **लंगा का मुख्य पारंपरिक वाद्य यंत्र सिंधी सारंगी है; मांगणियार का मुख्य पारंपरिक वाद्य यंत्र कामाइचा है।**
	
	• स्वतंत्रता से पहले इन्हें धनी जमींदारों और व्यापारियों का समर्थन प्राप्त था। **हाशिए पर रहे इन समुदायों का संगीत थार रेगिस्तान** के सांस्कृतिक परिदृश्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
	• **यात्रा** उनकी आजीविका **का एक अभिन्न अंग है।**

 © Vision IAS

3. यूनेस्को की पहलें (INITIATIVES OF UNESCO)

3.1. यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थल (UNESCO World Heritage Sites)

3.1.1. विश्व धरोहर का दर्जा (World Heritage Tag)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **काकतीय रुद्रेश्वर मंदिर** (जिसे रामप्पा मंदिर भी कहा जाता है) और **धौलावीरा** को यूनेस्को (UNESCO) की विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- इन दो स्थलों के शामिल होने के साथ ही, भारत में विश्व धरोहर स्थलों की संख्या **40 (32 सांस्कृतिक, सात प्राकृतिक और एक मिश्रित)** हो गई है।
    - **इटली (58)** के बाद चीन (56) और जर्मनी (51) में **धरोहर स्थलों की संख्या सर्वाधिक है (2021)।**
- धौलावीरा, भारत की प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता का ऐसा प्रथम स्थल है, जिसे यह दर्जा प्रदान किया गया है।

विश्व विरासत स्थलों के बारे में

- एक विश्व विरासत स्थल **"उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य"** वाला स्थान है। यह उस "सांस्कृतिक और / या प्राकृतिक महत्व को दर्शाता है, जो राष्ट्रीय सीमाओं के अंतर्गत ही सीमित नहीं है। साथ ही, वह स्थल मानवता की सभी वर्तमान एवं भविष्य की पीढ़ियों के लिए सामान्य महत्व का है।"
    - इन स्थलों को यूनेस्को द्वारा वर्ष 1972 में अपनाई गई **विश्व सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के संरक्षण से संबंधित अभिसमय**[4] नामक एक अंतर्राष्ट्रीय संधि में सन्निहित के रूप में नामित किया गया है।
- **नामांकन प्रक्रिया:**
    - **संभावित सूची (Tentative List):** यह प्रथम कदम है। इसके अंतर्गत किसी देश को उसकी सीमाओं के भीतर स्थित उसके **महत्वपूर्ण प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत स्थलों की एक सूची निर्मित करना आवश्यक होता है।**
    - **नामांकन दायर करना (The Nomination File):** यूनेस्को द्वारा किसी देश के विरासत स्थल को संभावित सूची में शामिल करने के उपरांत, संबंधित देश को आवश्यक दस्तावेज और मानचित्र के साथ एक नामांकन दस्तावेज तैयार करना होता है। इसे मूल्यांकन के लिए सलाहकार निकायों को प्रेषित किया जाता है।
    - **अंतिम अभिलेखन (The Nomination File):** एक बार किसी स्थल का नामांकन और मूल्यांकन करने के उपरांत, यह विश्व विरासत समिति पर निर्भर है कि वह विश्व विरासत सूची में उस स्थल के अभिलेखन के बारे में अंतिम निर्णय करे।

इन स्थलों के लिए यूनेस्को के इस दर्जे का क्या महत्व है?
• यह न केवल इन स्थलों पर बल्कि इन राज्यों के अन्य ऐतिहासिक स्थलों के आस-पास भी **राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन को प्रोत्साहित** करेगा।
• विरासत स्थलों पर अधिक संख्या में पर्यटकों के आगमन से वहां बेहतर सुविधाओं तथा स्थानीय समुदायों हेतु वित्त का विस्तार होने लगता है।
• एक बार जब कोई स्थल विश्व धरोहर सूची में शामिल हो जाता है, तो परिणामस्वरूप यह सम्मान प्रायः विरासत संरक्षण के लिए नागरिकों और सरकारों के मध्य जागरूकता सृजन में सहायक होता है।
• किसी देश के सांस्कृतिक स्थल के विश्व धरोहर में शामिल होने से वह देश उक्त स्थल के संरक्षण प्रयासों के समर्थन हेतु विश्व धरोहर समिति से वित्तीय सहायता और विशेषज्ञ सलाह भी प्राप्त कर सकता है।
• सूचीबद्ध स्थल युद्ध के दौरान विनाश के विरुद्ध जेनेवा अभिसमय के अंतर्गत सुरक्षा भी प्राप्त करते हैं।

[4] Convention concerning the Protection of the World Cultural and Natural Heritage

अन्य संबंधित सुर्ख़ियाँ

- हाल ही में, **ग्वालियर और ओरछा** शहरों (मध्य प्रदेश) **के लिए यूनेस्को की "ऐतिहासिक शहरी भूदृश्य परियोजना"**[5] का शुभारम्भ किया गया।
- 9वीं शताब्दी में स्थापित **ग्वालियर पर गुर्जर-प्रतिहार राजवंश, तोमर, बघेल कछवाहों और सिंधिया** शासकों का शासन रहा है।
  - ग्वालियर अपने महलों और मंदिरों के लिए विख्यात है, जिसमें जटिल नक्काशीदार **सास बहू का मंदिर** भी शामिल है।
- **ओरछा मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में है** तथा यह 16वीं शताब्दी में पूर्ववर्ती **बुंदेला वंश** की राजधानी **थी।**
  - शहर में प्रसिद्ध स्थान **राज महल, जहांगीर महल, रामराजा मंदिर, राय प्रवीण महल और लक्ष्मीनारायण मंदिर हैं।**
- HULP को वर्ष 2011 में **गतिशील और निरंतर परिवर्तित हो रहे परिवेश में विरासत संसाधनों के प्रबंधन के लिए एक दृष्टिकोण** के रूप में आरंभ किया गया था।
  - यह किसी भी शहर में स्थित **प्राकृतिक व सांस्कृतिक, मूर्त व अमूर्त तथा अंतर्राष्ट्रीय व स्थानीय मूल्यों के स्तरण और अंतर्संबद्धता** की पहचान एवं मान्यता पर आधारित है।
- **HULP का महत्व:**
  - इसका उद्देश्य विशेषकर स्मार्ट सिटी पहल के संदर्भ में शहरों की **नगरीय विरासत की उन्नति और एकीकरण करना है।**
  - **इसके तहत ऐतिहासिक स्थलों का रासायनिक उपचार किया जाएगा।** इससे उन पर उत्कीर्ण कला स्पष्टत: दृष्टिगोचर हो सकेगी।
  - **यूनेस्को** इन स्थलों के विकास के लिए **सर्वोत्तम उपायों और संसाधनों का** सुझाव प्रदान करेगा।
    - ऐतिहासिक शहरों की **शहरी विशेषताओं का व्यापक सर्वेक्षण** कार्य और **मानचित्रण** किया जाएगा।

संबंधित तथ्य

- हाल ही में, **लिवरपूल (यूनाइटेड किंगडम) को विश्व धरोहर स्थलों की सूची से हटा दिया गया है।**
  - यह निर्णय एक नए फुटबॉल स्टेडियम की योजना सहित **अतिविकास योजनाओं के संबद्ध में चिंताओं का उद्धरण देते हुए लिया गया है।**
- लिवरपूल को **वर्ष 2004 में विश्व धरोहर सूची में शामिल** किया गया था। ज्ञातव्य है कि 18वीं और 19वीं शताब्दी में विश्व के प्रमुख व्यापारिक केंद्रों में से एक के रूप में इसकी भूमिका की मान्यता और इसकी अग्रणी डॉक तकनीक, परिवहन प्रणाली और बंदरगाह प्रबंधन के लिए इसे यह दर्जा प्रदान किया गया था।

[5] Historic Urban Landscape Project: HULP

- यह विश्व विरासत के दर्जे से वंचित होने वाला विश्व का **तीसरा** स्थान है। **ओमान में अरेबियन ओरिक्स सैंक्चुअरी** (2007) और **जर्मनी के ड्रेसडेन में एल्बे घाटी** (2009) अन्य दो स्थल हैं।

3.1.1.1. रुद्रेश्वर मंदिर (Rudreshwara Temple)

रुद्रेश्वर मंदिर, **तेलंगाना** में वारंगल के निकट मुलुगु जिले के **पालमपेट** में स्थित है। यह मंदिर वास्तुकला की **काकतीय शैली की उत्कृष्ट कृति** है। इसमें **झरझरा ईंटों (तथाकथित 'तैरने वाली ईंटों'), नींव में सैंडबॉक्स (बालूदानी) तकनीक का प्रयोग, सामग्री चयन का ज्ञान** और प्रस्तर मूर्तिकला में कुशल तकनीकी स्थापत्य कलाविशिष्टता जैसे अभियांत्रिकी नवाचारों का उपयोग हुआ है।

- रुद्रेश्वर मंदिर का निर्माण **1213 ई.** में काकतीय राजा गणपति देव के शासनकाल में उसके सेनापति **रेचारला रुद्र** द्वारा करवाया गया था।
    - इसके शिल्पकार का नाम **रामप्पा** था तथा इसके निर्माण में 40 वर्षों का समय लगा था।
- यह **रामलिंगेश्वर स्वामी (शिव)** को समर्पित **बलुआ पत्थर** से निर्मित मंदिर है। रामप्पा एक बड़ी दीवार वाले मंदिर परिसर में मुख्य शिव मंदिर है। इसमें कई छोटे मंदिर और संरचनाएं मौजूद हैं।
    - यह **काकतीय शासकों द्वारा बनवाए गए जलाशय रामप्पा चेरुवु** के तट के निकट स्थित है।
- मंदिर का भवन **6 फीट ऊंची** तारे के आकार की एक वेदिका पर निर्मित है। इसमें **अलंकृत ग्रेनाइट और डॉलराइट के बीम एवं स्तंभों** पर जटिल नक्काशी की गई है।
    - इसमें हल्की छत संरचनाओं के लिए हल्की **झरझरा ईंटों (तथाकथित 'तैरने वाली ईंटों') से बना एक अद्भुत और पिरामिडनुमा विमान (क्षैतिज सीढ़ीदार बुर्ज) है।**
        - ये ईंटें **बबूल की लकड़ी, भूसी और हरड़ (एक पादप) के साथ मिश्रित मिट्टी से निर्मित** की जाती थीं। इससे ये स्पंज समान हो जाती थीं और जल में तैरने लगती थीं।
    - मंदिर का कक्ष **'शिखरम' द्वारा अभिषिक्त है और यह 'प्रदक्षिणापथ' से घिरा हुआ है।**
- भित्तियों, स्तंभों और छतों पर **क्षेत्रीय नृत्य परंपराओं एवं काकतीय संस्कृति** का उच्च कलात्मक गुणवत्तापूर्ण चित्रण किया गया है।
- प्रसिद्ध इतालवी व्यापारी और अन्वेषक **मार्कोपोलो** ने टिप्पणी की थी कि मंदिर **"दक्कन के मध्ययुगीन मंदिरों की आकाशगंगा में सबसे चमकीला तारा है"।**

काकतीयों के बारे में (1123–1323 ई.)

- काकतीय, चालुक्यों द्वारा शासित तेलुगु भाषी क्षेत्र में **कल्याणी के चालुक्यों** (कन्नड़ भाषी क्षेत्र) **के राजनीतिक उत्तराधिकारी** थे।
    - होयसल और यादवों के साथ **काकतीयों ने भी स्वयं को चालुक्यों से स्वतंत्र शासकों के रूप में घोषित** किया था।
- **काकतीय राजवंश ने अधिकांश पूर्वी दक्कन क्षेत्र पर शासन किया था।** इसमें वर्तमान तेलंगाना व आंध्र प्रदेश और पूर्वी कर्नाटक एवं दक्षिणी ओडिशा के कुछ हिस्से शामिल थे।
    - उनकी **राजधानी ओरुगल्लु थी, जिसे अब वारंगल के नाम से जाना** जाता है।
- **काकतीय वंश के महत्वपूर्ण शासक**
    - **प्रोलराज द्वितीय:** कई विद्वानों के अनुसार वह काकतीय वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक था।
    - **रुद्रदेव (1163-1195 ई.):** अनुमाकोंडा (वर्तमान हनुमाकोंडा) स्थित रुद्रेश्वर मंदिर में उसके प्रसिद्ध अभिलेख में उसकी उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। इस अभिलेख से यह स्पष्ट होता है कि उसने अपने राज्य के चारों ओर बड़ी संख्या में चालुक्य सामंतों को पराजित किया था।
        - रुद्रदेव के उपरांत उसका भ्राता **महादेव (1195–1198 ई.)** और महादेव के पश्चात् उसका पुत्र **गणपति देव (1199–1261 ई.) शासक** बना था।
    - गणपति के कोई पुत्र नहीं था और **भारतीय इतिहास की कुछ महत्वपूर्ण रानियों में से एक, रुद्रमा देवी उसकी उत्तराधिकारी** बनी थी। वह दक्षिणी तमिलनाडु के पांड्यों, उड़ीसा के पूर्वी गंग शासकों और देवगिरि के सेउन (यादव) शासकों को रोकने में सक्षम थी।

- 1303 ई. में, **अलाउद्दीन खिलजी ने काकतीय क्षेत्र पर आक्रमण** किया, जो उसके लिए एक आपदा के रूप में सिद्ध हुआ।

काकतीयों का कला, वास्तुकला और साहित्य में योगदान

- काकतीयों ने **तारकीय मंदिर** शैली को आगे बढ़ाया था और उन्होंने **चालुक्यों से विमान की वेसर शैली को अपनाया था**। साथ ही, इस शैली को तेलंगाना के सांस्कृतिक भूगोल में बहुत अच्छी तरह से अनुकूलित किया था।
    - एक बुलंद मंदिर की **नींव के निर्माण में रेत जैसी साधारण सामग्री का उपयोग** किया जाता था। इस से इसे एक भूकंप प्रतिरोधी संरचना बनाने में सहायता प्राप्त होती थी। इस प्रकार ये मंदिर, निर्माण और भू-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काकतीयों के रचनात्मक प्रयास की उत्कृष्ट रचनाएं सिद्ध हुए।
    - मंदिर परिसरों के प्रवेश द्वारों के लिए काकतीयों की विशिष्ट शैली (जो केवल इस क्षेत्र के संदर्भ में ही अद्वितीय है) **दक्षिण भारत में मंदिरों और शहर के प्रवेश द्वारों में सौंदर्यशास्त्र के अत्यधिक विकसित अनुरूपता की पुष्टि** करती है।
- **सुनियोजित सिंचाई प्रणाली-** किसी भी बारहमासी जल स्रोत से रहित काकतीय साम्राज्य की जल आपूर्ति के संदर्भ में विशिष्ट विशेषताएं हैं।
    - हाल ही में, **तेलंगाना सरकार ने काकतीय राजवंश से प्रेरणा लेकर जलाशय और सिंचाई नेटवर्क को बहाल करने के लिए 'मिशन काकतीय'** भी आरंभ किया है।
- 14वीं शताब्दी में काकतीय काल के दौरान **तेलुगु साहित्य परिपक्वता के स्तर पर पहुंच गया था।**
- **1253 ई.** में जयसेनपति द्वारा रचित **नृत्त रत्नावली** रामप्पा मंदिर में उत्कीर्णित **नृत्यरत स्त्री आकृतियों से प्रेरित** थी।
- रुद्रेश्वर मंदिर की नृत्य मुद्रा वाली मूर्तियों के अध्ययन से मंदिर में प्रदर्शित किए जाने वाली **देसी नृत्य परंपराओं की समझ विकसित होती है, जैसे कि पेरिनी, प्रेखण, गवुंडली, रसक व दंडरसक घटिसिश्री नर्त्तम** तथा देसी स्थानकों, चरी और कर्णनों पर बल दिया जाता था।

3.1.1.2. धौलावीरा (Dholavira)

- धौलावीरा (लगभग 3000-1500 ई. पू. के मध्य), **हड़प्पा सभ्यता का दक्षिणी केंद्र** था। यह **गुजरात में खादिर के शुष्क द्वीप** (कच्छ के रण में अवस्थित) पर स्थित है।
- इसकी खोज पुरातत्वविद् **जगतपति जोशी** ने वर्ष 1968 में की थी।
- धौलावीरा में हड़प्पा काल के **नगरों के इतिहास का एक पूरा क्रम** दृष्टिगोचर होता है। इसमें पूर्व-हड़प्पा काल के शहरी/पूर्व-शहरी चरण से लेकर हड़प्पाई विस्तार के चरमोत्कर्ष और परवर्ती-हड़प्पा काल शामिल है।

धौलावीरा की मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

नगर नियोजन	• इसके **दो** भाग हैं: **एक चारदीवारी युक्त नगर** और दूसरा **नगर के पश्चिमी भाग में एक कब्रिस्तान।** ○ चारदीवारी युक्त नगर के भीतर एक दुर्गीकृत आहाते से युक्त गढ़ी, बाहरी दीवार (कालीबंगा में अवस्थित हड़प्पाई बस्ती के समान), अंत्येष्टि स्थल और एक दुर्गीकृत मध्यवर्ती नगर तथा एक निचला नगर मौजूद थे। ○ गढ़ी के पूर्व और दक्षिण में **जलाशयों** की एक श्रृंखला मौजूद थी। ○ कब्रिस्तान में अधिकांश शवाधान स्मारकीय प्रकृति के हैं।
जल प्रबंधन / संरक्षण प्रणाली	• इस शहर की एक प्रभावी और अद्भुत जल संचयन और प्रबंधन प्रणाली थी। • चारदीवारी युक्त नगर को दो मौसमी धाराएँ जल प्रदान करती थीं, जो कि इस क्षेत्र में एक दुर्लभ संसाधन था। • मौसमी जलधाराओं, अल्प वर्षा और उपलब्ध जलीय क्षेत्र से पृथक किए गए जल को बड़े पत्थरों से निर्मित जलाशयों में संग्रहित किया जाता था। ये जलाशय पूर्वी और दक्षिणी गढ़ियों में मौजूद हैं। • जल तक पहुंचने के लिए, कुछ **शैल-कर्तित कुएं भी शहर के विभिन्न भागों** में मौजूद थे।
कलात्मक और तकनीकी उन्नति	• यहाँ पर मनका प्रसंस्करण कार्यशालाओं सहित विभिन्न प्रकार की कलाकृतियां जैसे तांबा, खोल, पत्थर, अर्ध-कीमती पत्थरों के आभूषण, टेराकोटा, स्वर्ण आदि पाए गए हैं। • स्थानीय सामग्रियों का डिजाइन, निष्पादन और दोहन प्रभावी रूप से किया जाता था।

© Vision IAS

सामरिक अवस्थिति	**खादिर द्वीप** एक रणनीतिक स्थान था: • यहाँ विभिन्न खनिज और कच्चे माल के स्रोतों (तांबा, सीप, गोमेद-कार्नीलियन, स्टीटाइट, सीसा, धारियों वाले चूना पत्थर आदि) का दोहन किया जाता था; • इसने **मगन (आधुनिक ओमान प्रायद्वीप)** और **मेसोपोटामिया क्षेत्रों** में आंतरिक एवं बाहरी व्यापार को भी सुगम बनाया था।
अन्य विशेषताएँ	• गुजरात में सुरकोटदा, जूनी कुरान आदि जैसी बस्तियां धौलावीरा से काफी प्रेरित थीं। • अत्यधिक दुर्गीकृत गढ़ी और अंत्येष्टि स्थल के साथ-साथ सड़कों एवं विभिन्न अनुपात व गुणवत्ता वाले शहरी आवासीय क्षेत्र एक स्तरीकृत समाज को दर्शाते हैं। • कई अन्य हड़प्पा स्थलों में निर्माण सामग्री के रूप में उपयोग की जाने वाली **मिट्टी की ईंटों की बजाय** दीवारों में **बलुआ पत्थर व चूना पत्थर का उपयोग** हुआ है। • **धौलावीरा की कुछ अनूठी विशेषताओं में शामिल हैं:** जलाशयों की एक व्यापक श्रृंखला, बाह्य दुर्गीकरण, दो बहुउद्देश्यीय मैदान, अद्वितीय डिजाइन वाले नौ द्वार और टुमुलस की विशेषता वाली अंत्येष्टि वास्तुकला आदि। टुमुलस बौद्ध स्तूप जैसी अर्धगोलाकार संरचनाएं होती हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) के बारे में

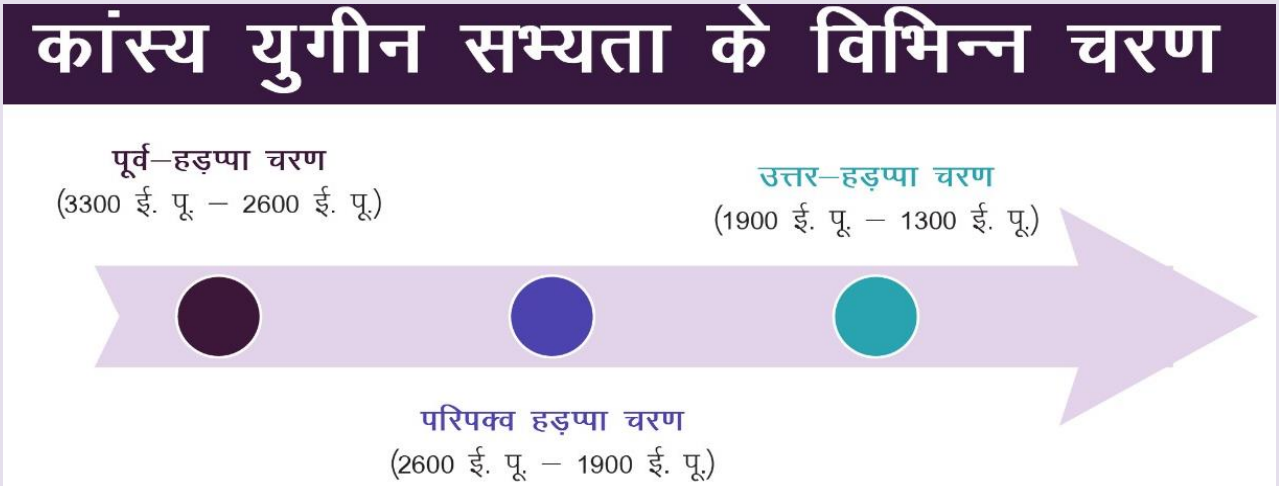

यह भारतीय उपमहाद्वीप की **प्राचीनतम ज्ञात नगरीय सभ्यता** है।

- इसका **"हड़प्पा"** नाम उस स्थल के नाम पर रखा गया है, **जहां इस अनूठी संस्कृति की सर्वप्रथम खोज की गई थी।** इसलिए इसे हड़प्पा संस्कृति भी कहा जाता है।
- यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** थी, जिसमें तीन पृथक-पृथक चरण थे:
  - पूर्व-हड़प्पा चरण (3300 ई. पू. - 2600 ई. पू.),
  - परिपक्व हड़प्पा चरण (2600 ई. पू. - 1900 ई. पू.) और
  - परवर्ती-हड़प्पा चरण (1900 ई. पू. - 1300 ई. पू.)।
- यह चार समकालीन शहरी सभ्यताओं **(मिस्र, मेसोपोटामिया और चीन के साथ)** में से एक थी। सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों को:
  - **ज्यामितीय गणना और माप के मानकों** की जानकारी थी।
  - उनके पास दक्षिण भारत से लेकर पश्चिम एशिया तक विस्तृत व्यापक व्यापार और वाणिज्यिक संबंधों के साथ एक अधिशेष युक्त एवं जटिल अर्थव्यवस्था थी।
- यहाँ के लोग गेंहू, जौं, मटर, सरसों, तिल और चावल की खेती करते थे।
- सिंधु घाटी सभ्यता में मोती बनाने के लिए विभिन्न सामग्री का उपयोग होता था, जैसे- इंद्रगोप, स्फटिक, क्वॉर्ट्स, सेलखड़ी, तांबा, कांसा, सोने जैसे धातु, सीप, टेराकोटा आदि।

3.1.2. यूनेस्को की विश्व विरासत स्थलों की संभावित सूची (Tentative List of UNESCO World Heritage Sites)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण[6] द्वारा प्रस्तुत **छह** स्थलों को **संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को/UNESCO)** द्वारा संभावित सूची में शामिल करने के लिए स्वीकार किया गया है। ज्ञातव्य है कि यह किसी भी स्थल के अंतिम नामांकन से पूर्व एक आवश्यकता है।

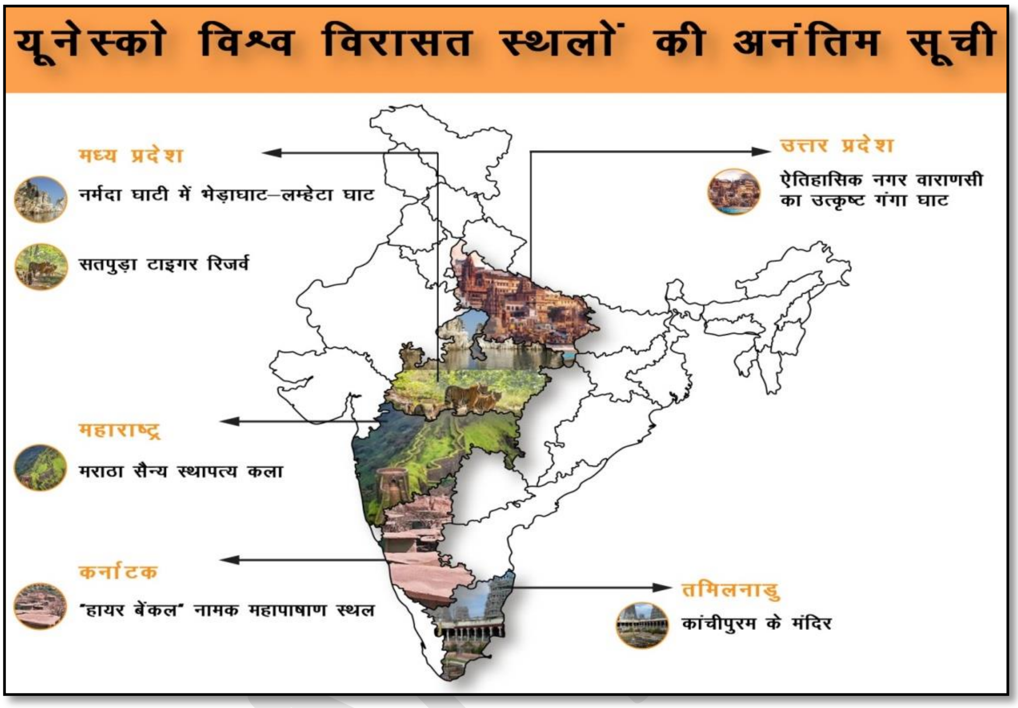

छह स्थलों के बारे में:

ऐतिहासिक शहर वाराणसी (उत्तर प्रदेश) के प्रतिष्ठित घाट	• यहाँ गंगा नदी के किनारे 6.5 कि.मी. लंबाई में विस्तृत रिवरफ्रंट (तटाग्र या घाट) भव्य इमारतों, पवित्र स्थलों और घाटों की रमणीय स्थापत्य पंक्ति का दृश्य प्रस्तुत करता है। ○ **यहां 84 सीढ़ीदार घाट** हैं, जो भूमि के साथ नदी के स्थापत्य अंतरफलक का एक अद्वितीय भारतीय प्रारूप विज्ञान का उदाहरण है। ○ **पंचतीर्थ** नामक निम्नलिखित पांच घाटों का प्राचीन ग्रंथ **मत्स्य पुराण** में उल्लेख किया गया है: ▪ असीघाट, ▪ दशाश्वमेध, ▪ मणिकर्णिका, ▪ पंचगंगा (पांच नदियों, यथा- गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा का संगम बिंदु माना जाता है), तथा ▪ आदि केशव। • हिंदू धर्म के अतिरिक्त, वाराणसी अन्य प्रमुख धर्मों की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक परंपराओं से भी संबद्ध है: ○ **भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश** "धर्मचक्र परिवर्तन" 528 ई. पू. में वाराणसी के निकट सारनाथ में ही दिया था। ○ जैन परंपरा के अनुसार, यह **4 जैन तीर्थंकरों, यथा- सुपार्श्वनाथ (7वें), चंद्रप्रभु (8वें), श्रेयांसनाथ (11वें) और पार्श्वनाथ (23वें) का जन्मस्थान** है। ○ 16वीं शताब्दी में **गुरु नानक ने दो बार वाराणसी की यात्रा की थी।** ○ पंचगंगा घाट पर **आलमगीर मस्जिद** का निर्माण मुगल बादशाह **औरंगजेब** ने करवाया था। • यहां प्रचलित अन्य परंपराओं में लकड़ी के खिलौने बनाना, साड़ी बनाना, रेशम की बुनाई, धातु, काष्ठ और टेराकोटा हस्तशिल्प, चित्रकारी, संस्कृत भाषा का उपयोग और वैदिक मंत्रोच्चार शामिल हैं।
कांचीपुरम के मंदिर (तमिलनाडु)	• **वेगावती नदी** के तट पर स्थित ऐतिहासिक मंदिरों के नगर **कांचीपुरम** में कभी 1,000 मंदिर थे। वर्तमान में इनमें से केवल 126 (108 शैव और 18 वैष्णव) ही शेष रह गए हैं।

[6] Archaeological Survey of India: ASI

© Vision IAS

	• कांचीपुरम छठी से नौवीं शताब्दी ईस्वी तक **पल्लव राजवंश की राजधानी** रहा था। इस राजवंश के संरक्षण में **मंदिर स्थापत्य की द्रविड़ शैली** आरंभ और विकसित हुई थी। • **इस नामांकन के तहत अभिनिर्धारित 11 मंदिरों में से कुछ महत्वपूर्ण मंदिर निम्नलिखित हैं:** ○ **कैलाशनाथ मंदिर:** पल्लव शासक **राजसिंह प्रथम (नरसिंहवर्मन II)** द्वारा निर्मित, यह कांचीपुरम की सबसे प्राचीन संरचना है। मंदिर के गर्भगृह में काले ग्रेनाइट से निर्मित एक अद्वितीय 16-पक्षीय शिवलिंग है। ○ **एकंबरेश्वर मंदिर:** यह **पंचभूत स्थलम्** (प्रत्येक एक प्राकृतिक तत्व का प्रतिनिधित्व करता है) के **पांच प्रमुख शिव मंदिरों** में से एक है। ○ पंचभूत- अर्थात् पाँच तत्व: **पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और अंतरिक्ष।** यह मंदिर पृथ्वी तत्व का प्रतिनिधित्व करता है। ▪ मंदिर का **राजा गोपुरम** दक्षिण भारत में सबसे ऊंचे (57 मीटर) गोपुरम में से एक है और इसे **विजयनगर के शासक कृष्णदेव राय** ने बनवाया था। ▪ एक उल्लेखनीय विशेषता **आयराम काल मंडपम**, या **"एक हजार स्तंभों वाला गलियारा"** है। ○ **वरदराज पेरुमल मंदिर:** भगवान विष्णु को समर्पित, यह मंदिर **सभी 12 अलवार संतों द्वारा भ्रमण** किए गए 108 दिव्य देशम् में से एक है। इसमें विजयनगर के राजाओं द्वारा निर्मित **'सौ स्तंभों ' का मंडपम** भी शामिल है। ○ **उलगलंदा पेरुमल मंदिर:** इस मंदिर की एक अनूठी विशेषता यह है कि इसमें एक ही परिसर में चार दिव्य देशम हैं, ऐसा कहीं भी देखने को नहीं मिलता। • कांचीपुरम **रेशम की बुनाई के लिए भी प्रसिद्ध** है। गोपुरम, मोर, कोकिला, रुद्राक्ष की माला और पुष्पीय अलंकरणों जैसे मंदिर रूपांकन कांचीपुरम साड़ियों पर की जाने वाली जटिल बुनाई का हिस्सा हैं।
कर्नाटक में अवस्थित "हायर बेंकल" नामक महापाषाण स्थल	• हायर बेंकल स्थल में 2500 से अधिक वर्षों से एक ग्रेनाइट शिखर पर स्थित लगभग **1,000 महापाषाण शवाधान संरचनाएं मौजूद** हैं। यहां से डॉल्मेन, केयर्न्स, गमन कक्ष, पाषाण वृत्त, मेनहीर, ग्रेनाइट से उकेरी गई मानवाकृतीय प्रतिमाएं आदि प्रमुख वास्तुशिल्पीय किस्में प्राप्त हुई हैं। ○ **मेगालिथ दो ग्रीक शब्दों से बना है- 'मेगास'** का अर्थ है बड़ा और **'लिथोस'** का अर्थ है पत्थर। उनका निर्माण या तो शवाधान स्थलों या संस्मारकों के रूप में किया गया है। • हायर बेंकल की एक और अनूठी विशेषता **प्रागैतिहासिक युगीन शैल चित्रकला** है। मानव आकृतियों, फरसा धारण किए हुए घुड़सवार, मृगों की पंक्ति, लंबे श्रृंग वाले बैल, मोर आदि जैसे रूपांकनों के साथ 11 शैलाश्रयों की खोज की गई है। • यह स्थल **भारतीय प्रागैतिहासिक लौह युगीन महापाषाण संस्कृति** की अंत्येष्टि और अनुष्ठान प्रथाओं से संबंधित एक असाधारण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। • भारत में, महापाषाण स्थल प्रायः **भारतीय उपमहाद्वीप के प्रायद्वीपीय भाग, दक्कन के पठार, विंध्य और उत्तर-पश्चिम क्षेत्र** में देखे जाते हैं।
मध्य प्रदेश में नर्मदा घाटी के भेड़ाघाट-लम्हेटाघाट	• **भेड़ाघाट नर्मदा नदी** के प्रवाह में एकमात्र स्थान है, जहाँ यह 30 मीटर गहरे महाखड्ड (gorge) में गिरती है और **धुंआधार प्रपात** का निर्माण करती है। साथ ही, संकरे महाखड्डों से होकर भी प्रवाहित होती है। ○ यहां विशाल ऊँची संगमरमर की चट्टानें दोनों ओर लंबवत आकृति में पाई जाती हैं, जिससे एक शोभायमान दृश्य निर्मित होता है। इसे **'भारत का ग्रैंड कैनियन'** कहा जाता है। • भेड़ाघाट क्षेत्र विश्व में 2 से 3 कि.मी. की छोटी दूरी के भीतर **चूना पत्थर में क्षेत्रीय रूपांतरण** का एकमात्र उदाहरण है। • इसके अतिरिक्त, नर्मदा घाटी में विशेष रूप से इस क्षेत्र में **डायनासोर के जीवाश्म** भी पाए गए हैं। • नर्मदा **अमरकंटक** से उद्गमित होती है तथा सतपुड़ा और विंध्य श्रृंखला के मध्य भ्रंश घाटी से होकर पश्चिम दिशा में प्रवाहित होती है।
सतपुड़ा टाइगर रिज़र्व (मध्य प्रदेश)	• होशंगाबाद में स्थित, सतपुड़ा टाइगर रिज़र्व (STR) **मध्य भारतीय उच्चभूमि पारिस्थितिकी तंत्र** का एक प्रमुख उदाहरण है। • मूलतः सतपुड़ा का अर्थ है, 'सात श्रेणी'। यह नर्मदा और तापी नदी के मध्य त्रिकोण आकार का एक क्षेत्र है। • यह भारत के दक्कन बायो-जियोग्राफिक क्षेत्र का हिस्सा है। इसे पश्चिमी घाट के उत्तरी छोर के रूप में भी जाना जाता है। • यह भारत की **17% बाघ आबादी को आश्रय** प्रदान करता है। साथ ही, यहां **भारत के 12% बाघ पर्यावास अवस्थित हैं।** • STR को वर्ष 1999 में **मध्य प्रदेश का प्रथम बायोस्फीयर रिज़र्व** घोषित किया गया था। इसमें **तीन संरक्षित क्षेत्र**

	शामिल हैं, यथा- सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान, बोरी अभयारण्य और पचमढ़ी अभयारण्य। • **पुरातात्विक महत्व:** यहां पर 55 शैल आश्रय हैं, जो 1500 से 10000 वर्ष प्राचीन हैं। इनमें हाथी, बाघ, मृग और साही जैसे जानवरों को गुहा भित्तियों पर चित्रित किया गया है।
महाराष्ट्र में मराठा सैन्य स्थापत्य कला	• इसमें 17वीं शताब्दी के **मराठा शासक छत्रपति शिवाजी के काल में निर्मित 14 किले** शामिल हैं। उनमें से महत्वपूर्ण किलों में शामिल हैं: ○ **शिवनेरी किला:** 1630 ईस्वी में छत्रपति शिवाजी का जन्म इसी किले में हुआ था। ○ **अलीबाग/कुलाबा किला:** इसे छत्रपति शिवाजी द्वारा **नौसैनिक अड्डे** के रूप में तैयार किए जाने वाले किलों में से एक के रूप में चुना गया था। ○ **राजगढ़ किला:** जब शिवाजी ने पुरंदर की संधि (1655 ई.) पर हस्ताक्षर किए थे, तब यह मुगलों की अधीनता से बाहर रखे गए किलों में से एक था। इस पर उन्होंने सबसे लंबे समय तक (26 वर्ष) नियंत्रण रखा था। • पहाड़ियों, भूमि और समुद्र तट पर बने किलों के नेटवर्क इस तथ्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं कि **शिवाजी और मराठा सेना द्वारा भूमि पर मुग़लों से और समुद्र में यूरोपीय तटीय शक्तियों से निपटने हेतु गुरिल्ला युद्ध रणनीति विकसित करने के लिए** मौजूदा अंचलों/भूखंडों का किस प्रकार उपयोग किया जाता था।

3.2. दुर्गा पूजा (Durga Puja)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **'कोलकाता की दुर्गा पूजा'** मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में शामिल हो गयी है। इसे **अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण हेतु यूनेस्को की अंतर सरकारी समिति** ने सूचीबद्ध किया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- इस उपलब्धि से दुर्गा पूजा का आयोजन करने वाले **स्थानीय समुदायों को प्रोत्साहन मिलेगा।** इस समुदाय में सभी पारंपरिक शिल्पकार, डिजाइनर, कलाकार और बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजक तथा साथ ही पर्यटक एवं आगंतुक भी शामिल हैं।
- यह **अश्विन** (सितंबर - अक्टूबर) **के महीने में मनाया जाता है।** यह **हिंदू मातृ-देवी दुर्गा की दस दिवसीय पूजा** का प्रतीक है।
- 16वीं शताब्दी के आसपास के साहित्य में हमें **पश्चिम बंगाल में जमींदारों द्वारा दुर्गा पूजा के भव्य उत्सव का पहला उल्लेख मिलता है।**
- **सांस्कृतिक विरासत:**
  - यूनेस्को के अनुसार, सांस्कृतिक विरासत सिर्फ **स्मारकों और वस्तुओं के संग्रह** तक ही सीमित नहीं है। इसमें **हमारे पूर्वजों से विरासत में मिली परंपराएं या जीवित अभिव्यक्तियां भी शामिल हैं,** जो हमारे वंशजों को प्रदान की गई हैं।

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH) की सुरक्षा के लिए अभिसमय, 2003

- **इसके 4 प्राथमिक लक्ष्य हैं:**
  - अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करना;
  - संबंधित समुदायों, समूहों और व्यक्तियों के ICH के लिए सम्मान सुनिश्चित करना;
  - ICH के महत्व के बारे में स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता बढ़ाना; तथा
  - अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सहायता प्रदान करना।

अन्य संबंधित अभिसमय

- **विश्व विरासत अभिसमय, 1972** मूर्त विरासत से संबंधित है। इसमें स्मारक और साथ ही सांस्कृतिक और प्राकृतिक स्थल भी शामिल किये गए हैं।
- **सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की विविधता के संरक्षण और संवर्धन पर अभिसमय, 2005:** इसका उद्देश्य विश्व के नागरिकों को सांस्कृतिक वस्तुओं, सेवाओं और गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला का आनंद प्रदान करना है।
- **भारत इन सभी अभिसमयों का एक हस्ताक्षरकर्ता है।**

© Vision IAS

उदाहरण के लिए- मौखिक परंपराएं, निष्पादन कलाएं, सामाजिक प्रथाएं, अनुष्ठान, उत्सवों का आयोजन, प्रकृति और ब्रह्मांड से संबंधित ज्ञान व प्रथाएं या पारंपरिक शिल्प का उत्पादन करने के लिए ज्ञान एवं कौशल आदि।

- **अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (Intangible Cultural Heritage: ICH):**
  - यूनेस्को के अनुसार, अमूर्त सांस्कृतिक विरासत **पारंपरिक, समकालीन और एक ही समय में अस्तित्वमान तथा समावेशी, प्रतिनिधिक व समुदाय-आधारित होती हैं।**
  - यह **बढ़ते वैश्वीकरण के संदर्भ में सांस्कृतिक विविधता** को बनाए रखने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कारक है। इसके अलावा, यह विभिन्न समुदायों के मध्य ICH की एक समझ है। यह **अंतर सांस्कृतिक संवाद** स्थापित करने में मदद करती है। साथ ही, जीवन के अन्य तरीकों के लिए **पारस्परिक सम्मान को प्रोत्साहित** करती है।

यूनेस्को की ICH सूची में भारत से 14 अमूर्त सांस्कृतिक विरासतें शामिल हैं।		
	ICH सांस्कृतिक विरासत	**शामिल किए जाने का वर्ष**
1.	पश्चिम बंगाल की दुर्गा पूजा	2021
2.	कुंभ मेला	2017
3.	योग	2016
4.	नौरोज़ या नवरोज़	2016
5.	पारंपरिक तौर पर पीतल और तांबे के बर्तन बनाने का शिल्प, जंडियाला गुरु के ठठेरे (पंजाब)	2014
6.	मणिपुर का संकीर्तन	2013
7.	लद्दाख का बौद्ध मठ	2012
8.	सरायकेला, पुरुलिया और मयूरभंज का छऊ नृत्य	2010
9.	राजस्थान का कालबेलिया नृत्य	2010
10.	केरल का मुडियेट्टु	2010
11.	गढ़वाल, उत्तराखंड का रम्मन उत्सव	2009
12.	केरल का कुटियाट्टम संस्कृत रंगमंच	2008
13.	रामलीला	2008
14.	वैदिक मंत्रोच्चार की परंपरा	2008

3.3. यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क (UNESCO Creative Cities Network: UCCN)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **श्रीनगर को शिल्प और लोक कला श्रेणी के अंतर्गत यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क (UCCN) में शामिल** किया गया है

UCCN के बारे में

- UCCN को वर्ष 2004 में **उन शहरों के साथ और उनके बीच सहयोग को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए निर्मित** किया गया था, जिन्होंने संधारणीय शहरी विकास के लिए एक रणनीतिक कारक के रूप में रचनात्मकता को रेखांकित किया है।
    - ये शहर **एक साझे उद्देश्य** की दिशा में एक साथ कार्य करते हैं: रचनात्मकता और सांस्कृतिक उद्योगों को स्थानीय स्तर पर अपनी विकास योजनाओं **के केंद्र में रखना** तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय रूप से सहयोग करना इत्यादि।
- यूनेस्को **(UNESCO) शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति और संचार में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के समन्वय के लिए उत्तरदायी एक संस्था है।**
- इसकी स्थापना वर्ष 1946 में हुई थी। यह **पेरिस** में अवस्थित है।
- **भारत के अन्य शहर जो UCCN में शामिल हैं:**
    - **जयपुर** (शिल्प और लोक कला)।
    - **वाराणसी एवं चेन्नई** (संगीत कला)।
    - **मुंबई** (फिल्म)।
    - **हैदराबाद** (पाक-कला)।

श्रीनगर के बारे में

- श्रीनगर **कागज निर्माण, कश्मीरी शॉल, कश्मीरी रेशम, काष्ठ-कला, कश्मीरी कालीन, चांदी के बर्तन आदि जैसी विभिन्न सजावटी व प्रसिद्ध कला और शिल्प हेतु प्रसिद्ध है।**
    - श्रीनगर **झेलम नदी** के तट पर कश्मीर घाटी के केंद्र में अवस्थित है।
- ध्यातव्य है कि इस नेटवर्क से जुड़कर, शहर **अपनी सर्वोत्तम प्रथाओं और विकासशील भागीदारी को साझा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।** ये शहर सांस्कृतिक गतिविधियों, वस्तुओं और सेवाओं के निर्माण, उत्पादन, वितरण एवं प्रसार तंत्र को मजबूत करने हेतु सार्वजनिक व निजी क्षेत्रों के साथ-साथ नागरिक समाज को भी शामिल करते हैं।

3.4. अन्य महत्त्वपूर्ण सुर्ख़ियाँ (Other Important News)

दार्जिलिंग टॉय ट्रेन	• **दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे (DHR) को यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल नामित** हुए दो दशक से अधिक समय हो चुका है। इतने समय के बाद भारत ने प्रतिष्ठित 'टॉय ट्रेन' के दो लोगो (logo) को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी बौद्धिक संपदा के रूप में पंजीकृत कराया है। ○ विश्व में कहीं भी इन लोगो के उपयोग के लिए अब **भारत से लिखित अनुमति और शुल्क का भुगतान करना अनिवार्य होगा।** • इससे दार्जिलिंग टॉय ट्रेन के **'आयरन शेरपा' ब्लू स्टीम लोकोमोटिव को दार्जिलिंग हेरिटेज ट्रेन के रूप में** स्विट्जरलैंड की प्रसिद्ध ट्रांस-अल्पाइन रैटियन रेलवे (transalpine Rhaetian Railway) के समान दर्जा प्राप्त होगा।
संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) द्वारा सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव (BTV) की घोषणा	• **BTV उन गांवों को पहचानने की लिए एक वैश्विक पहल है, जहां पर्यटन संस्कृतियों और परंपराओं को संरक्षण प्रदान किया जाता है,** विविधता को बनाए रखा जाता है, अवसर उपलब्ध करवाए जाते हैं और जैव विविधता को सुरक्षित रखा जाता है। ○ इसका उद्देश्य प्रशिक्षण और सुधार के अवसरों तक पहुंच के माध्यम से गांवों की **ग्रामीण पर्यटन क्षमता को**

© Vision IAS

	बढ़ाने में सहायता करना है। 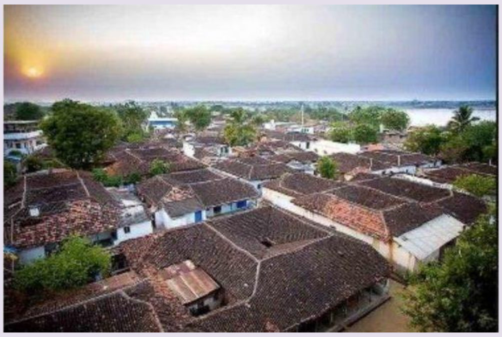 • **पोचमपल्ली गांव (तेलंगाना)** को संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) द्वारा **BTV में से एक के रूप में चुना** गया है। ○ पोचमपल्ली को अक्सर इकत शैली के माध्यम से बुनी गई अपनी उत्तम साड़ियों के लिए **भारत की "सिल्क सिटी" के रूप में** जाना जाता है। ○ **पोचमपल्ली इकत** को वर्ष **2004 में भौगोलिक संकेतक टैग** प्रदान किया गया था। ○ **आचार्य विनोबा भावे ने वर्ष** 1951 में पोचमपल्ली से ही **भूदान आंदोलन** की शुरुआत की थी। • पर्यटन मंत्रालय ने भारत से UNWTO सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव की प्रविष्टि के लिए तीन गांवों की सिफारिश की थी। **ये मेघालय में कोंगथोंग, मध्य प्रदेश में लधपुरा खास और तेलंगाना में पोचमपल्ली थे।**
निजामुद्दीन बस्ती	 • दिल्ली की निजामुद्दीन बस्ती में संरक्षण पहल ने 2 श्रेणियों- **'उत्कृष्टता पुरस्कार 2021'** और **'सतत विकास पुरस्कार के लिए विशेष मान्यता'** के तहत **यूनेस्को पुरस्कार प्राप्त किये हैं।** ○ परियोजना के तहत **सूफी संत हजरत निजामुद्दीन औलिया के 14वीं सदी के मकबरे के आसपास** 20 से अधिक ऐतिहासिक स्मारकों का जीर्णोद्धार किया गया था। • **पुरस्कार निम्नलिखित कार्यों के लिए प्रदान किया जाता है:** ○ विरासत को सतत विकास एजेंडे के केंद्र में रखने में उत्कृष्ट उपलब्धि। ○ एक नवोन्मेषी जन-सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल के माध्यम से विशेष रूप से महिलाओं और युवाओं के लिए प्रमुख सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों को नियंत्रित करना तथा स्वास्थ्य, शिक्षा एवं कल्याण में सुधार करना।

4. व्यक्तित्व (PERSONALITIES)

4.1. आदि शंकराचार्य (ADI Shankaracharya)

सुर्ख़ियों में क्यों?

आदि शंकराचार्य के जन्मस्थान **कलादि** को **राष्ट्रीय स्मारक** घोषित किया जा सकता है। आदि शंकराचार्य एक **अद्वैत दार्शनिक** थे। उनका जन्म **एर्नाकुलम जिले (केरल)** के कलादि (7वीं - 8वीं शताब्दी ईस्वी) में हुआ था।

अन्य संबंधित तथ्य

- **आदि शंकराचार्य के जन्मस्थान का महत्व** एक किंवदंती से उपजा है। इसके अनुसार, शंकराचार्य को एक मगरमच्छ ने पकड़ लिया था। मगरमच्छ ने उन्हें तब तक छोड़ने से इनकार कर दिया जब तक कि उनकी माता ने उनका संन्यास (त्याग) स्वीकार नहीं कर लिया।
    - इस स्थान को **मगरमच्छ घाट** कहा जाता है और **इसका धार्मिक महत्व है।**
    - यह स्थान **श्री शंकर, शारदा देवी, श्रीकृष्ण और श्री रामकृष्ण** को समर्पित महत्वपूर्ण मंदिरों से युक्त है।
- **राष्ट्रीय स्मारक के दर्जे के बारे में:**
    - यह दर्जा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** द्वारा **पुरातत्व स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958** के तहत दिया जाता है। यह अधिनियम केंद्र सरकार को **"स्थल का रखरखाव करने, संरक्षित करने और बढ़ावा देने"** के लिए अधिकृत करता है।
    - वर्तमान में, राष्ट्रीय महत्व के लगभग 3,600 स्मारक ASI द्वारा संरक्षित किए जा रहे हैं।

आदि शंकराचार्य के बारे में (788 और 820 ई.)

- वह एक भारतीय दार्शनिक, धर्मशास्त्री और शंकर (जगतगुरु) थे। वे प्राचीन **हिंदू धर्म में दृढ़ विश्वास रखते** थे।
- उन्हें **भगवान शिव का अवतार** माना जाता है।
- उन्होंने **गुरु गोविंद भगवतपाद से मार्गदर्शन** लिया था। इनके संरक्षण में उन्होंने **'गौड़पादीय कारिका', 'ब्रह्मसूत्र', वेदों और उपनिषदों** का अध्ययन किया।
- उन्होंने **'अद्वैत वेदांत'** और **'दशनामी संप्रदाय'** का प्रचार किया।
- **शंकर को** उनके शिष्यों के बीच **शंकराचार्य** के रूप में जाना जाने लगा था। **उनके 4 प्रमुख**

शंकराचार्य के दर्शन के बारे में - अद्वैत वेदांत

- यह वेदांत का एक संस्करण है। इसे **अद्वैतवाद के रूप में प्रतिपादित** किया गया है।
- इसके अनुसार, **ब्रह्म** (उत्तर वेदों के अनुसार परम, सर्वोत्कृष्ट और सर्वव्यापी ईश्वर) **अपनी रचनात्मक ऊर्जा (माया) के कारण संसार के रूप में प्रकट हुआ है।**
- **ब्रह्म के अतिरिक्त संसार का कोई पृथक अस्तित्व नहीं है।**
- **अनुभव करने वाला स्वयं (जीव) और ब्रह्मांड का सर्वोत्कृष्ट स्व (आत्मा) वास्तव में एक ही है (दोनों ब्रह्म हैं)।** हालांकि, जीवात्मा भिन्न प्रतीत होती है जैसे एक बंद पात्र के भीतर का स्थान अंतरिक्ष से अलग लगता है।
- इन आधारभूत सिद्धांतों को "ब्रह्म सत्यम जगत मिथ्या; जीवो ब्रह्मैव नापर:" (ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है और यह बहुलता का संसार एक त्रुटि है; जीवात्मा ब्रह्म से अलग नहीं है) के रूप में देखा जाता है।
- **धारणा (मिथ्या) में त्रुटि और अज्ञानता (अविद्या) के कारण ही बहुलता का अनुभव होता है।**
- **ब्रह्म का ज्ञान** इन त्रुटियों को दूर करता है तथा **स्थानांतरगमन और सांसारिक बंधनों के चक्र से मुक्ति का मार्ग बनता है।**

केदारनाथ मंदिर

- हाल ही में, **प्रधान मंत्री ने केदारनाथ में आदि शंकराचार्य की 12 फुट की प्रतिमा का अनावरण किया है।** माना जाता है कि शंकराचार्य ने 9वीं शताब्दी में 32 वर्ष की आयु में यहीं पर समाधि ली थी।
- यह मंदिर **भगवान शिव को समर्पित** है। केदारनाथ मंदिर उत्कृष्ट स्थापत्यकला से परिपूर्ण है। यह मंदिर पत्थरों की बहुत बड़ी, भारी और समान रूप से कटी हुई भूरे रंग की पट्टिकाओं से निर्मित है।
- केदारनाथ मंदिर (उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में) **मंदाकिनी नदी के तट पर** स्थित है।
- मंदिर के अंदर एक शंक्वाकार चट्टान की **पूजा भगवान शिव के रूप में (उनके सदाशिव रूप में) की जाती है।**
- **केदारनाथ मंदिर का निर्माण** आदि शंकराचार्य द्वारा **8वीं शताब्दी में** कराया गया था और यह पांडवों द्वारा निर्मित एक पहले के मंदिर के स्थल के निकट स्थित है।
- केदारनाथ मंदिर उत्तराखंड में **चारधाम और पंच केदार का एक हिस्सा** है। यह भारत में स्थित भगवान शिव के **12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है।**

© Vision IAS

शिष्य थे:

- पद्मपद,
- तोटकाचार्य,
- हस्तामलक तथा
- सुरेश्वर।

आदि शंकराचार्य का योगदान

<table>
<tr><td>दार्शनिक योगदान</td><td>• पूजा की छह संप्रदाय प्रणाली (षण्मत) तैयार की। इसमें पांच मुख्य देवताओं- विष्णु, शिव, शक्ति, मुरुगन, गणेश और सूर्य को शामिल किया गया था।
• दसनामी संरचना (दशनामी संप्रदाय) को पुनर्जीवित करके संन्यास परंपरा को सशक्त बनाया। इसमें भिक्षुओं को 10 उपाधियों के तहत संगठित किया गया था।</td></tr>
<tr><td>साहित्यिक योगदान</td><td>• सौंदर्य लहरी, शिवानंद लहरी, निर्वाण शल्कम आदि जैसे 72 भक्तिपरक और ध्यानपूर्ण भजनों की रचना की थी।
• उन्होंने अद्वैत वेदांत के मूल सिद्धांतों पर भी ग्रंथ लिखे थे। इनमें विवेक चूड़ामणि, आत्मबोध, वाक्यवृत्ति, उपदेश सहस्री आदि शामिल हैं।
• उन्होंने ब्रह्मसूत्र, भागवद गीता और 12 प्रमुख उपनिषदों सहित प्रमुख ग्रंथों पर 18 भाष्य लिखे थे।
• 'ब्रह्मसूत्र' की उनकी समीक्षा को 'ब्रह्मसूत्र भाष्य' के रूप में जाना जाता है। यह 'ब्रह्मसूत्र' पर उपलब्ध सबसे पुरानी टीका है।</td></tr>
<tr><td>धर्म का पुनरुद्धार</td><td>• शंकर के जन्म के समय तक हिंदू धर्म रूढ़िवादिता, कर्मकांड और औपचारिकता के अपने स्वयं के कठोर आचरणों से पंगु हो गया था तथा पिछड़ता जा रहा था।
• इसे महावीर जैन (599 ईसा पूर्व-527 ईसा पूर्व) और गौतम बुद्ध (563 ईसा पूर्व-483 ईसा पूर्व) जैसे तपस्वियों के उदय से चुनौती मिली। इनके अनुयायी मुख्यधारा के हिंदुओं के प्रचलित मीमांसा ब्राह्मणवाद से अलग होकर नए धर्मों में शामिल हो गए।
• आदि शंकराचार्य का अद्वैत वेदांत भ्रांतियों के उस युग के विरुद्ध दार्शनिक रूप से मजबूत प्रतिक्रिया थी। इसमें विविध विचारों और हिंदू प्रथाओं को एक दर्शन में एकीकृत किया गया था। यह दर्शन 'एक सत्य, की अनेक व्याख्याओं' के वैदिक सिद्धांत पर आधारित था।</td></tr>
<tr><td>चार आश्रम</td><td>• उन्होंने भारत के चारों कोनों में 4 आश्रम स्थापित किए।
○ बद्रीनाथ, उत्तराखंड में ज्योतिर्मठ - यह 'अयमात्मा ब्रह्म' (यह आत्मा ब्रह्म है) का प्रचार करता है। इसका निर्माण अथर्ववेद के आधार पर किया गया था। तोटकाचार्य इस मठ के मुखिया थे।
○ पुरी, ओडिशा में गोवर्धन मठ- यह प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर का हिस्सा है। यह 'प्रज्ञानं ब्रह्म' (चेतना ब्रह्म है) का प्रचार करता है। इसकी रचना ऋग्वेद के आधार पर हुई थी। पद्मपद को इस मठ का मुखिया बनाया गया था।
○ श्रृंगेरी, कर्नाटक में श्रृंगेरी मठ- तुंगा नदी के किनारे स्थित है। यह 'अहं ब्रह्मास्मि' (मैं ब्रह्म हूं) का प्रचार करता है। इसे यजुर्वेद के आधार पर गठित किया गया था। सुरेश्वर को इस मठ का मुखिया बनाया गया था।

○ द्वारका, गुजरात में शारदा मठ- यह 'तत्त्वमसि' {तुम वही (अर्थात् ब्रह्म) हो} का प्रचार करता है। यह सामवेद के आधार पर निर्मित किया गया था। तोटकाचार्य को इस मठ का भी मुखिया बनाया गया था।</td></tr>
</table>

© Vision IAS DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI

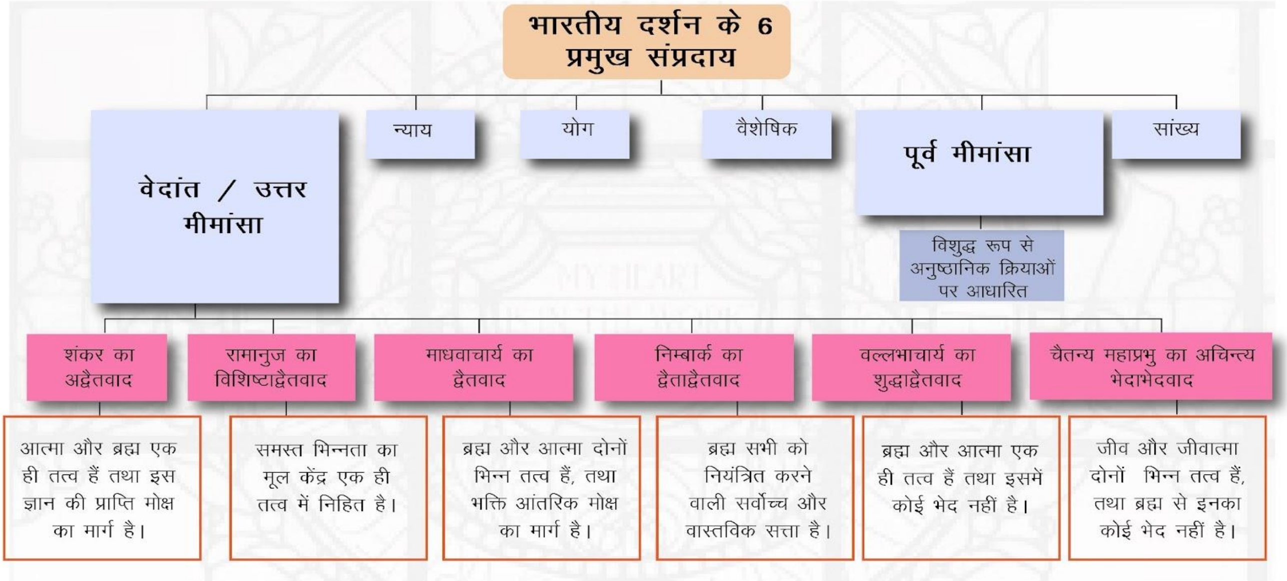

4.2. श्री अरबिंदो (Sri Aurobindo)

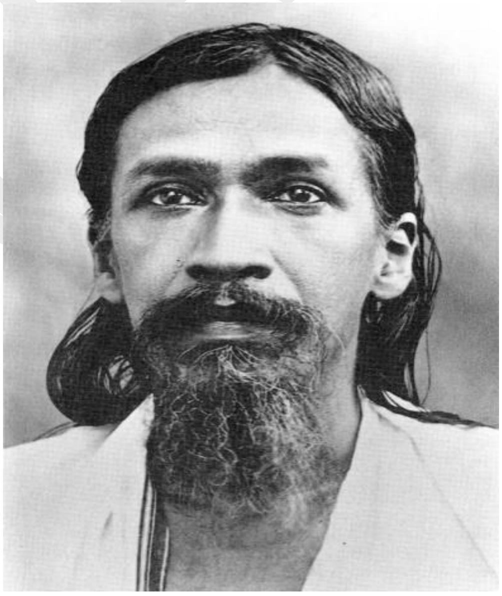

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **प्रधान मंत्री ने श्री अरबिंदो की 150वीं जयंती मनाने के लिए उच्च स्तरीय समिति की प्रथम बैठक की अध्यक्षता की।**

श्री अरबिंदो के बारे में

- **प्रारंभिक जीवन:**
  - उनका जन्म **15 अगस्त 1872 को कलकत्ता** (अब कोलकाता) में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा **दार्जिलिंग** के एक कॉन्वेंट स्कूल से प्राप्त की थी।
  - सात वर्ष की आयु में उन्हें उनके भाइयों के साथ इंग्लैंड भेज दिया गया था। उन्होंने लंदन के सेंट पॉल स्कूल (1884) और **वर्ष 1890 में कैम्ब्रिज के किंग्स कॉलेज** से शिक्षा प्राप्त की थी।
  - उन्होंने **भारतीय सिविल सेवा (ICS) परीक्षा** में 11वीं रैंक हासिल की थी, हालांकि वे प्रोबेशन को पूर्ण करने में असफल रहे थे।
- **स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सेदारी:**
  - वह भारत की स्वतंत्रता के लिए कार्य करने वाली एक गोपनीय सोसाइटी में शामिल हो गए थे। इस सोसाइटी को **लोटस और डैगर** के नाम से जाना जाता था।
  - **वर्ष 1893** में वह **बड़ौदा के महाराजा (सयाजीराव गायकवाड़ III)** की राज्य सेवा में शामिल हो गए थे। वहां अपने कार्य के दौरान उन्होंने भारतीय **संस्कृति, भाषाओं** (जैसे, संस्कृत) आदि के बारे में ज्ञान प्राप्त किया था।
  - वह वर्ष **1902 में** अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ गए थे। उन्होंने **अनुशीलन समिति** जैसी समितियों के माध्यम से क्रांतिकारियों को प्रेरित किया था।
  - **वर्ष 1905 में 'बंगाल के विभाजन'** के बाद वे भारतीय राजनीतिक आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल हो गए थे। वे वर्ष **1906 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC)** के सदस्य बने थे। उन्होंने **बंगाल नेशनल कॉलेज** के प्रिंसिपल के रूप में भी कार्य किया था।
- **आध्यात्मिक जीवन:**वर्ष 1902-1910 के मध्य, उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया था। इसके बाद वे **आध्यात्मिक जागृति** के कारण राजनीतिक गतिविधियों से अलग हो गए थे। **वर्ष 1910 से 05 दिसंबर 1950 तक (मृत्यु तक) उन्होंने अपना शेष जीवन पुडुचेरी (तत्कालीन फ्रांसीसी उपनिवेश) में व्यतीत किया था।**

श्री अरबिंदो का योगदान

वे एक देशभक्त, कवि, शिक्षाविद, दार्शनिक और योगी थे। उन्होंने अपने कार्यों के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता और इसके आध्यात्मिक जागरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया था जैसे-

© Vision IAS

भारतीय राष्ट्रवाद की दिशा में	• वर्ष 1893-94 में **इंदु प्रकाश** में उनके द्वारा लिखे गए लेखों को **'न्यू लैम्प्स फॉर ओल्ड'** के शीर्षक से प्रकाशित किया गया था। इसमें उन्होंने कांग्रेस की अति उदारवादी राजनीति की आलोचना की थी। • उन्होंने **बंदे मातरम (अंग्रेजी दैनिक), कर्मयोगिनी (अंग्रेजी समाचार पत्र) और धर्मा (बंगाली साप्ताहिक)** की शुरुआत की थी। • क्रांतिकारियों को प्रेरित करने के लिए उन्होंने **युगांतर पत्रिका** (बंगाली क्रांतिकारी समाचार पत्र) में अपने लेख प्रकाशित किए थे। इसके अतिरिक्त, अनुशीलन समिति द्वारा प्रकाशित एक पुस्तिका, **भवानी मंदिर** में भी उनके लेख थे। • **वर्ष 1907 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) का सूरत अधिवेशन** हुआ था। इस अधिवेशन को **सूरत विभाजन** के लिए भी जाना जाता है। इस दौरान वे नरमपंथियों के विरुद्ध **बाल गंगाधर तिलक के नेतृत्व वाले गरमपंथी समूह** में शामिल हो गए थे। • वर्ष 1908 में, उन्हें **अलीपुर बम षडयंत्र मामले में गिरफ्तार** किया गया था। हालांकि, बाद में उन्हें बरी कर दिया गया था। 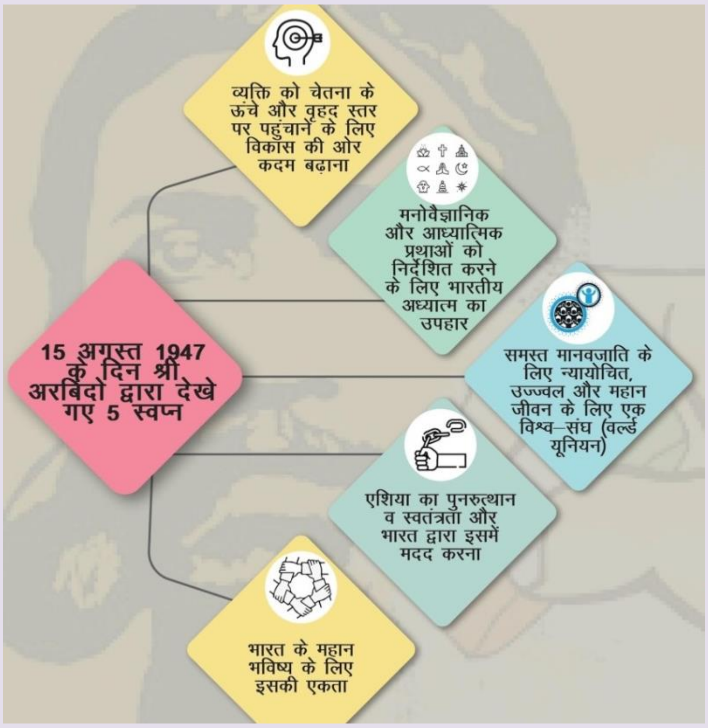 • 15 अगस्त 1947 को अपने संदेश में उन्होंने देश के विभाजन को एक अस्थायी व्यवस्था होने और इसके समाप्ति की कामना की। साथ ही, उन्होंने अपने भावी विचारों को साझा (जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है) किया था।
आध्यात्मिक दर्शन की ओर	वे **सत-चित-आनंद और योग** के दर्शन से प्रेरित थे। उन्होंने आंतरिक ज्ञान या मानव के वास्तविक स्वभाव के माध्यम से मानवता के आध्यात्मिक विकास पर ध्यान केंद्रित किया था। उनके योगदान को निम्नलिखित के माध्यम से देखा जा सकता है- • **द लाइफ डिवाइन (1939)**- इसमें मनुष्य के बौद्धिक से अति चैतन्य प्राणी के रूप में परिवर्तित होने पर बल दिया गया था। • **आर्य,** एक दार्शनिक मासिक पत्रिका (1914) थी। • कविताओं, पत्रों और निबंधों के रूप में संकलित अन्य कृतियां जैसे **एस्सेज़ ऑन गीता (1922), कलेक्टेड पोयम्स एंड प्लेज़ (1942), द सिंथेसिस ऑफ योगा (1948), द ह्यूमन साइकिल (1949), द आइडियल ऑफ ह्यूमन यूनिटी (1949), सावित्री: ए लीजेंड एंड ए सिंबल (1950) आदि।** • **वर्ष 1926 में उन्होंने मीरा अल्फासा के साथ श्री अरबिंदो आश्रम की स्थापना की थी।** ◦ मीरा अल्फासा ने **ऑरोविले अर्थात भोर के शहर** की स्थापना की थी। यह एक **शांतिपूर्ण, प्रगतिशील और सामंजस्यपूर्ण अस्तित्व** के लिए निर्मित एक सार्वभौमिक शहर था।

4.3. नेताजी सुभाष चंद्र बोस (Netaji Subhash Chandra Bose)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, नेताजी सुभाष चंद्र बोस की **125वीं जयंती (पराक्रम दिवस)** मनाई गई।

अन्य संबंधित तथ्य

- इस अवसर पर मध्य दिल्ली के **इंडिया गेट पर नेताजी की होलोग्राफिक प्रतिमा का अनावरण किया गया।**
- **प्रतिमा वर्ष 2047 में स्वतंत्रता के 100वें वर्ष से पहले एक नए भारत के निर्माण के लिए नागरिकों को प्रोत्साहित करने** का प्रतीक है।

© Vision IAS DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI

संबंधित सुर्ख़ियाँ

सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार

- इस पुरस्कार की शुरुआत भारत में आपदा प्रबंधन क्षेत्र में व्यक्तियों और संगठनों द्वारा किए गए **अमूल्य योगदान एवं निस्वार्थ सेवा का सम्मान करने के लिए** की गयी थी।
- इसकी घोषणा **प्रतिवर्ष 23 जनवरी को** नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर की जाती है।
  - इस पुरस्कार के तहत **किसी संस्था को 51 लाख रुपये का नकद पुरस्कार और एक प्रमाण पत्र** प्रदान किया जाता है। वहीं **व्यक्ति को 5 लाख रु और एक प्रमाण पत्र दिया** जाता है।
  - एक वर्ष में ऐसे **सिर्फ तीन पुरस्कार प्रदान** किया जाते हैं।
- **वर्ष 2022** के पुरस्कार के लिए **गुजरात आपदा प्रबंधन संस्थान** और **प्रोफेसर विनोद शर्मा** का चयन किया गया है।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस के बारे में

प्रारंभिक जीवन	• उनका जन्म 23 जनवरी 1897 को कटक (ओडिशा) में हुआ था। उनके पिता जानकीनाथ बोस एक प्रसिद्ध वकील थे तथा उनकी माता का नाम प्रभावती देवी था। • **वे स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं से काफी प्रभावित थे।** • **उन्होंने वर्ष 1920 में भारतीय सिविल सेवा प्रतियोगिता परीक्षा उत्तीर्ण की थी।**
राजनीतिक जीवन की ओर	• **नेताजी की राजनीतिक यात्रा ने अमृतसर के जलियांवाला बाग की भयानक घटना** के बाद एक मोड़ लिया। यहां **जनरल डायर** ने **अप्रैल, 1919 में शांतिपूर्ण भीड़ पर गोलियां चलाई थी।** उसके खिलाफ बहुत कम या कोई कार्रवाई नहीं की गई थी। • जलियांवाला बाग हत्याकांड से आहत नेताजी ने **वर्ष 1921 में भारत लौटने के लिए अपनी सिविल सेवा प्रशिक्षुता को बीच में ही छोड़ दिया था।** • भारत लौटने के बाद, नेताजी, महात्मा गांधी के प्रभाव में आ गए और **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गए।** • गांधीजी के निर्देश पर उन्होंने **देशबंधु चित्तरंजन दास (सी.आर. दास) के अधीन कार्य करना शुरू किया।** नेताजी ने सी.आर. दास को अपने **राजनीतिक गुरु** के रूप में स्वीकार किया था।
मुख्यधारा की राजनीति में नेताजी और गांधी जी से विचारों का टकराव	• वर्ष 1928 में कांग्रेस ने **मोतीलाल नेहरू समिति** नियुक्त की थी। समिति ने ब्रिटिश प्रभुत्व के अधीन डोमिनियन के पक्ष में घोषणा की थी। लेकिन **नेताजी ने जवाहरलाल नेहरू के साथ मिलकर इसका विरोध किया था और भारत के लिए पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की थी।** • वर्ष 1931 में, उन्होंने **गांधी-इरविन समझौते का विरोध किया** था। उन्होंने सविनय **अवज्ञा आंदोलन के निलंबन का भी विरोध किया** था, विशेषकर तब जब भगत सिंह और उनके सहयोगियों को फांसी दी गई थी। • वर्ष 1938 में वे **हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गए थे।** ○ अध्यक्ष के रूप में उन्होंने **राज्य-स्वामित्व और राज्य-नियंत्रण के तहत औद्योगिक विकास की एक व्यापक योजना की आवश्यकता** पर बल दिया था। • उन्होंने **नियोजन के माध्यम से देश के आर्थिक विकास** की बात की थी। बाद में **एक राष्ट्रीय योजना समिति (पं. जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में) की स्थापना** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। • उन्हें **त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन के लिए फिर से अध्यक्ष चुना गया** था। इसमें उन्होंने महात्मा गांधी और कांग्रेस कार्य समिति द्वारा समर्थित **डॉ पट्टाभि सीतारमैया को हराया था।** • द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, उन्होंने **अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए छह महीने का समय देने या फिर विद्रोह का सामना करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था।** • इसका कई लोगों ने विरोध किया था। इसके बाद नेताजी ने अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया था। उन्होंने एक **प्रगतिशील समूह का गठन किया।** इसे **फॉरवर्ड ब्लॉक** के नाम से जाना जाता है।
इंडियन नेशनल आर्मी (आजाद हिंद फ़ौज) की स्थापना की ओर	• वर्ष 1941 में **नेताजी कलकत्ता में अपने घर से नजरबंदी तोड़कर** अफगानिस्तान से होते हुए **जर्मनी पहुंचे।** • इस कहावत को चरितार्थ करते हुए कि "दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है", **उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ जर्मनी और जापान से सहयोग की मांग की।** • वर्ष 1942 में जर्मनी पहुंचने के बाद नेताजी ने **'आजाद हिंद रेडियो'** शुरू किया और **'फ्री इंडिया सेंटर'**

© Vision IAS

	(**आजाद हिंद सरकार के अग्रदूत**) की स्थापना की। • सिंगापुर में, उन्होंने एक निर्वासित भारत सरकार **'आजाद हिंद सरकार'** का गठन किया। • इस अस्थायी सरकार की **अपनी मुद्रा, अदालत, नागरिक संहिता, सेना (INA)** और **राष्ट्रगान** भी था। • वर्ष 1943 में, **अनंतिम सरकार के प्रमुख के रूप में,** उन्होंने भारत की मुक्ति के लिए **ब्रिटेन से युद्ध की घोषणा की थी।** • **"दिल्ली चलो" के नारे के तहत INA मणिपुर के मोरंग पहुंच कर** अंग्रेजों को अचंभित कर दिया था। ○ INA **रंगून, इंफाल और अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह को वापस जीतने** में सक्षम रही थी। ○ नेताजी ने **अंडमान और निकोबार (A&N) द्वीप का नाम बदलकर शहीद एवं स्वराज कर दिया था।** ○ वर्ष 2018 में अंडमान और निकोबार के रॉस द्वीप, नील द्वीप हैवलॉक द्वीप का नाम बदलकर क्रमशः नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वीप, शहीद द्वीप तथा स्वराज द्वीप कर दिया गया था। • हालांकि, **द्वितीय विश्व युद्ध में जापान और जर्मनी की हार ने INA को पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया था।** • कथित तौर पर सुभाष चंद्र बोस की **18 अगस्त, 1945 को ताइपे, ताइवान (फॉर्मोसा) के ऊपर एक हवाई दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी।**
नेताजी के अन्य महत्वपूर्ण योगदान	• **साहित्यिक योगदान** ○ वर्ष 1921 में बोस ने समाचार पत्र **'फॉरवर्ड'** का संपादन किया था। ○ उन्होंने अपना स्वयं का समाचार पत्र **'स्वराज' भी** प्रकाशित किया था। **'द इंडियन स्ट्रगल'** नामक पुस्तक भी लिखी थी। इस पुस्तक में **वर्ष 1920-1934 के वर्षों में देश के स्वतंत्रता आंदोलन का विवरण शामिल है।** • **महिला उत्थान** ○ उन्होंने **'लैंगिक समानता'** की दिशा में कार्य किया था। ○ नेताजी ने वर्ष 1943 में **INA के भीतर एक अखिल महिला रेजिमेंट की स्थापना की थी। इसे "रानी झांसी रेजिमेंट" नाम दिया गया था।** • **पंथनिरपेक्षता का प्रचार** ○ उन्होंने INA में **सभी धार्मिक त्योहारों की सामान्य पूजा और उत्सवों** की शुरुआत की थी। ○ स्वतंत्र भारत की अनंतिम सरकार और आजाद हिंद फौज में **अल्पसंख्यक समुदायों में से कई ने उच्च पदों को प्राप्त किया था।**

गांधीजी बनाम एस.सी. बोस - एक तुलना

- बोस ने गांधीजी को **'राष्ट्रपिता'** की संज्ञा प्रदान की थी। उन्होंने **गांधीजी को जनता के निर्विवाद व अनुपम नेता** के रूप में पहचाना और स्वीकार किया था।
- गांधीजी ने बोस को **देशभक्तों के बीच देशभक्त** के रूप में सम्मानित किया था।' गांधीजी ने हरिजन में लिखा था: **'नेताजी मेरे लिए एक पुत्र की तरह थे।'**

मार्गदर्शन	गांधीजी **अपने गुरु गोखले और टैगोर** की तरह अंग्रेजों के साथ चर्चा एवं वार्ता की परंपरा में विश्वास रखते थे।	युवा बोस, रूसी विद्रोह और जापानी साम्राज्य के उदय से गहराई से प्रभावित थे। वे एक तेजतर्रार राष्ट्रवादी थे, जो **तिलक एवं अरबिंदो की परंपरा में विश्वास करते थे।**

साधन एवं साध्य विवाद	गांधीजी का **नाजी शासन का विरोध करने का नैतिक दृष्टिकोण** था। उनके लिए साधन भी उतने ही महत्वपूर्ण थे जितने कि साध्य।	इसके विपरीत, बोस अधिक व्यावहारिक थे। वे **अंग्रेजों को अस्थिर करने के लिए जर्मनी और जापान का सहयोग लेना चाहते थे।**

4.4. सुर्ख़ियों में रहे अन्य व्यक्तित्व (Other Personalities in News)

प्राचीन/मध्यकालीन	
रानी हियो ह्वांग-ओके 	• वह एक कोरियाई रानी थीं, जिसके बारे में यह माना जाता है कि उसका **जन्म अयोध्या की राजकुमारी सुरीरत्ना, (राजा पद्मसेन और इंदुमती की पुत्री) के रूप में** हुआ था। ○ पद्मसेन ने कौसल पर शासन किया था। यह क्षेत्र वर्तमान उत्तर प्रदेश से लेकर ओडिशा तक विस्तृत था। • राजकुमारी सुरीरत्ना ने **कोरिया की यात्रा की और राजा किम सुरो से विवाह किया** तथा 48 ईस्वी में रानी हियो ह्वांग-ओके बन गई। • इनकी कहानी **समगुक युसा** (तीन साम्राज्यों की स्मृति) में वर्णित है। यह कोरिया के तीन साम्राज्यों- **गोगुरियो, बैक्जे और सिला** पर 13वीं शताब्दी की एक कृति है। • विभिन्न कोरियाई लोग अपने वंश को उनके साथ जोड़ते हैं और वह वर्षों से कोरिया की लोकप्रिय संस्कृति का हिस्सा रही है।
गुरु तेग बहादुर 	• गुरु तेग बहादुर की **400वीं जयंती** मनाई जा रही है। • वे छठे सिख गुरु, **गुरु हरगोबिंद साहिब** के सबसे छोटे पुत्र थे। वह 10 सिख गुरुओं में से 9वें स्थान पर थे। • उनके द्वारा रचित **115 पद्य गुरु ग्रंथ साहिब में** सम्मिलित हैं। • वर्ष 1675 में गुरु तेग बहादुर को मुगल सम्राट औरंगजेब के आदेश के तहत दिल्ली में फांसी दी गई थी।
दारा शिकोह 	• वह **शाहजहाँ का ज्येष्ठ पुत्र** था और वर्ष 1659 में **अपने भाई औरंगजेब के विरुद्ध उत्तराधिकार की लड़ाई में पराजित होने के उपरांत उसका वध कर दिया** गया था। • उसे **एक "उदार मुस्लिम" के रूप में वर्णित किया गया है।** उसने हिंदू और इस्लामी परंपराओं के बीच समानताएं खोजने का प्रयास किया था। • उसने **भगवत गीता के साथ-साथ 52 उपनिषदों का फारसी में अनुवाद किया था।** उल्लेखनीय है कि उनका ज्ञान पहले केवल कुछ उच्च जाति के हिंदुओं तक ही सीमित था। • **सूफी रहस्यवाद में भी उसकी गहरी रुचि थी। बाद में वह** सूफ़ियों के **कादिरी सिलसिले में दीक्षित हुआ था।**
सेंट फ्रांसिस ज़ेवियर 	• प्रधान मंत्री ने सेंट फ्रांसिस जेवियर के पर्व के दिन गोवा के लोगों को बधाई दी है। • वह **सोसाइटी ऑफ जीसस के संस्थापकों में से एक** थे। वह 1542 ई. में गोवा पहुंचे थे। • **व्यक्तित्व लक्षण:** धार्मिक दर्शन, ईश्वर एवं मानव जाति की सेवा, सद्भाव और भाईचारे की भावना आदि। • ज़ेवियर ने **जेसुइट मिशन केंद्रों का एक नेटवर्क** स्थापित किया था। • 3 दिसंबर को सेंट फ्रांसिस जेवियर की पुण्यतिथि मनाई जाती है। ○ वर्ष 1552 में, केवल 46 वर्ष की आयु में, **एक चीनी द्वीप पर बुखार से उनकी मृत्यु हो गई थी।** कुछ वर्षों बाद **उनके पार्थिव शरीर को वापस गोवा लाया गया था।** • बेसिलिका के बोम जीसस चर्च में सेंट फ्रांसिस ज़ेवियर के अवशेष अभी भी मौजूद हैं। • **गोवा** में प्रति वर्ष **सेंट फ्रांसिस जेवियर का पर्व मनाया जाता है।**
रानी कमलापति 	• रानी कमलापति एक **गोंड रानी** और सल्कनपुर (सीहोर) रियासत के **राजा कृपाल सिंह की पुत्री** थी। ○ गोंड भारत के **सबसे बड़े आदिवासी समुदायों में से एक है।** ये मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, बिहार और ओडिशा में फैले हुए हैं। • उनका विवाह **सूरज सिंह शाह के पुत्र गिन्नौरगढ़ के निजाम शाह से** हुआ था। उन्होंने ही रानी के नाम पर भोपाल का कमलापति महल बनवाया था। • वह एक **कुशल योद्धा** थी तथा अपने पिता और पति के साथ युद्धों में भाग लेती थी। उन्होंने **1723 ई. में अपनी मृत्यु तक तत्कालीन गिन्नौरगढ़ पर शासन** किया था।
महाराजा रणजीत सिंह 	• उनका जन्म सन् 1780 में **गुजरांवाला** (वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित) में हुआ था। वे सन् 1792 से 1801 तक **सुकरचकिया मिसल** के प्रमुख थे। उन्होंने प्रथम सिख साम्राज्य की स्थापना की तथा वे **सन् 1801 से 1839** तक 38 वर्षों के लिए उसके प्रथम शासक भी रहे थे। • वे एक धर्मनिरपेक्ष शासक थे। उनके पास एक आधुनिक सेना भी थी। उन्होंने अंग्रेजों के साथ दो संधियां भी की थी यथा- **अमृतसर की संधि** और **लाहौर की संधि।** • **लाहौर (उनके साम्राज्य की राजधानी) को अफगान आक्रमणकारियों से मुक्त कराने में सफल होने के कारण उन्हें पंजाब के शेर (शेर-ए-पंजाब)** की उपाधि से नवाजा गया था।

© Vision IAS

	• उनका राजकोष **कोहिनूर हीरे** से सुशोभित था। उन्होंने **अमृतसर** में स्थित **स्वर्ण मंदिर** का भी पुनर्निर्माण कराया था।
आधुनिक भारत	
पांडुरंग महादेव बापट 	• उन्हें लोकप्रिय रूप से **'सेनापति बापट'** के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने **भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन** में सक्रिय तौर पर भाग लिया था। • 12 नवंबर 1880 को जन्मे बापट का पालन-पोषण महाराष्ट्र के **अहमदनगर जिले के पारनेर शहर में** एक निम्न-मध्यमवर्गीय चितपावन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। • बापट को वर्ष **1921 में मुल्शी सत्याग्रह** (विश्व का प्रथम बांध विरोधी आंदोलन) **के दौरान उनके नेतृत्व के लिए 'सेनापति' कहा गया।** यह "किसानों के बलपूर्वक विस्थापन के विरुद्ध प्रथम दर्ज संगठित संघर्ष" था। • वर्ष 1904 में, कॉलेज से पास होने के बाद, उन्होंने छात्रवृत्ति अर्जित की और एडिनबर्ग के हैरियट-वाट कॉलेज में अध्ययन करने के लिए इंग्लैंड चले गए।
खुदीराम बोस 	• बिहार के मुजफ्फरपुर केंद्रीय कारागार में निर्भय स्वतंत्रता सेनानी खुदीराम बोस की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। • बोस का जन्म वर्ष 1889 में **मिदनापुर जिले** के एक छोटे से गाँव में हुआ था। • **श्री अरबिंदो और भगिनी निवेदिता** द्वारा दिए गए सार्वजनिक व्याख्यानों की एक श्रृंखला से प्रेरित होकर, वे **क्रांतिकारी गतिविधियों की ओर आकर्षित हुए।** • बोस **अनुशीलन समिति** में शामिल हो गए थे। यह समिति 20वीं सदी की शुरुआत में **बंगाल** में क्रांतिकारी गतिविधियों को प्रोत्साहित करने वाली संस्था थी। • वर्ष 1908 में, उन्होंने एक अन्य क्रांतिकारी **प्रफुल्ल चाकी** के साथ मिलकर, **ब्रिटिश न्यायाधीश, मजिस्ट्रेट डगलस किंग्सफोर्ड की हत्या करने का प्रयास किया था।** इसके कारण अंततः उन्हें 18 वर्ष की अल्पायु में ही मृत्युदंड दे दिया गया था।
मदन लाल ढींगरा 	• मदन लाल ढींगरा के शहादत दिवस (17th August) पर अमृतसर के टाउन हॉल में उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। • उन्हें एक ब्रिटिश अधिकारी **सर विलियम हट कर्जन वायली की हत्या करने के कारण, 17 अगस्त 1909 को लंदन में 26 वर्ष की आयु में फांसी** दी गई थी। • वे **इंग्लैंड में उच्चतर शिक्षा प्राप्त** करने गए थे। • **वर्ष 1905 में बंगाल विभाजन से उन्हें पीड़ा हुई** और वे विनायक दामोदर सावरकर, श्याम जी कृष्ण वर्मा जैसे अन्य क्रांतिकारियों के संपर्क में आए।

मदन मोहन मालवीय
 	
	• मदन मोहन मालवीय प्रयागराज (पहले इलाहाबाद) में जन्मे एक **प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और शिक्षाविद थे।** इन्हें **'महामना'** के नाम से जाना जाता था।
	• **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) में भूमिका:** वे लाहौर और दिल्ली में क्रमशः 24वें (1909) एवं 33वें (1918) अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे थे।
	  o वे वर्ष 1932 और 1933 में भी अध्यक्ष चुने गए थे, लेकिन गिरफ्तारी के कारण वे अध्यक्षता नहीं कर सके।
	• **प्रमुख योगदान और उपलब्धियां:**
	  o **उन्होंने हिंदुस्तान के संपादक** के रूप में कार्य किया था। उन्होंने वर्ष 1907 में **अभ्युदय** (हिंदी साप्ताहिक), वर्ष 1910 में **मर्यादा** (हिंदी मासिक) और वर्ष 1909 में **द लीडर** (अंग्रेजी दैनिक) की शुरुआत की थी।
	  o **उन्होंने वर्ष 1906 में हिंदू महासभा की स्थापना** की थी। इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल के सदस्य के रूप में कार्य किया था।
	  o वर्ष 1916 में उन्होंने **बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना** की थी।
	  o **वर्ष 2015** में उन्हें **भारत रत्न** (मरणोपरांत) से सम्मानित किया गया था।

रानी गाइदिन्ल्यू	• मणिपुर में **'रानी गाइदिन्ल्यू जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय'** का उद्घाटन किया गया है। • **रानी गाइदिनल्यू** का जन्म मणिपुर की रोंगमेई जनजाति में हुआ था। वह 13 वर्ष की आयु में स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गई थी। • वह **हेराका आंदोलन में अग्रणी** रही थी। इस आंदोलन का उद्देश्य नागा जनजातीय धर्म का पुनरुद्धार और **नागाओं के स्व-शासन की स्थापना करना था। यह असहयोग आंदोलन के समान** था। o उन्हें वर्ष 1932 में गिरफ्तार किया गया था और वर्ष 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद ही रिहा किया गया था।

© Vision IAS DELHI \| JAIPUR \| PUNE \| HYDERABAD \| AHMEDABAD \| LUCKNOW \| CHANDIGARH \| GUWAHATI

	• जवाहरलाल नेहरू ने गाइदिनल्यू को **"पहाड़ियों की बेटी"** के रूप में वर्णित किया था और **उनके साहस के लिए उन्हें 'रानी' की उपाधि दी थी।**
डॉ. भगवान दास 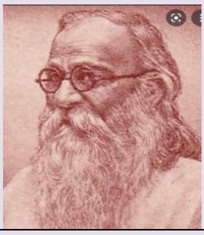	• वह एक भारतीय **थियोसोफिस्ट** थे। • वर्ष 1921 में, उन्हें **असहयोग आंदोलन के साथ जुड़े होने के कारण, अंग्रेजों द्वारा एक वर्ष के कारावास की सजा** सुनाई गई थी। • वे **काशी विद्यापीठ के संस्थापक** थे। • **काशी विद्यापीठ,** भारतीयों द्वारा स्थापित **प्रथम भारतीय विश्वविद्यालय** है। • वर्ष 1955 में, उन्हें साहित्य और शिक्षा में उनकी उपलब्धियों के लिए भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान **भारत रत्न** से सम्मानित किया गया था।
सुब्रमण्यम भारती 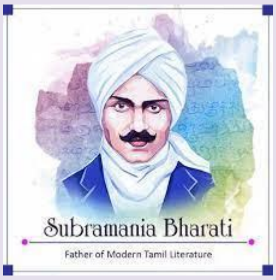 	• तमिलनाडु सरकार ने 11 सितंबर, 2021 को **सुब्रमण्यम भारती की 100वीं पुण्यतिथि को 'महाकवि' दिवस** के रूप में मनाया है। • वह आधुनिक तमिल काव्य के अग्रदूत थे, जिन्हें **सम्मानपूर्वक महाकवि** कहा जाता था। • **एट्टायपुरम के राजा ने उनकी कविता से प्रभावित होकर उन्हें 'भारती' की उपाधि प्रदान की थी,** जिसका अर्थ है देवी सरस्वती का आशीर्वाद। • उन्हें तीन विदेशी भाषाओं सहित **14 भाषाओं में महारत** हासिल थी। • उन्होंने **भारतीय नागरिकों के मध्य राष्ट्रीय गौरव की भावनाओं को जागृत** करने के लिए अपने लेखन का उपयोग किया था। • उन्होंने **बाल विवाह के विरुद्ध चिंता प्रकट की थी तथा ब्राह्मणवाद और धर्म में सुधार का समर्थन किया था।** • वह **दलितों और मुसलमानों के साथ भी एकजुटता** में थे। • उनका आदर्श वाक्य था "अरिवेलु थेलिवु" अर्थात् **मन की स्पष्टता।**

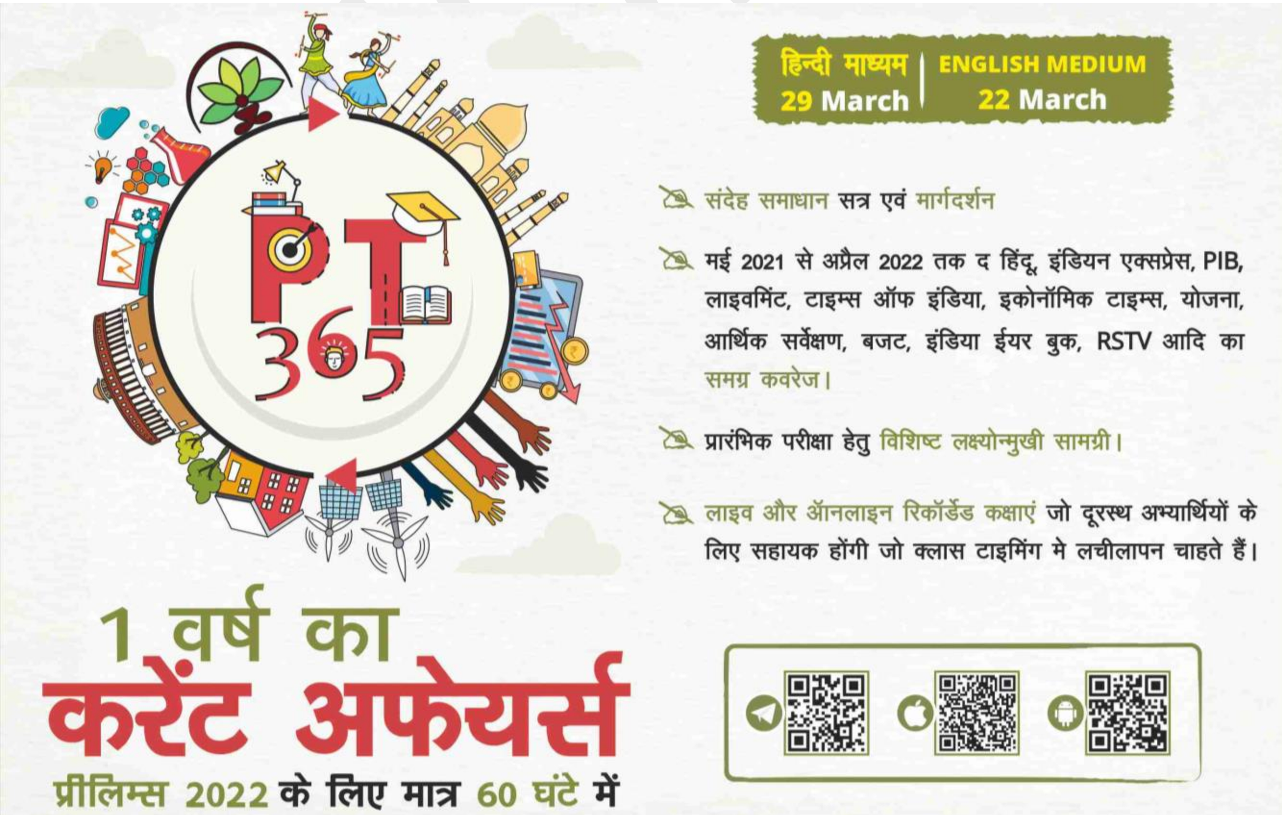

© Vision IAS

5. ऐतिहासिक घटनाएं (HISTORICAL EVENTS)

5.1. जलियांवाला बाग हत्याकांड (Jallianwala Bagh Massacre)

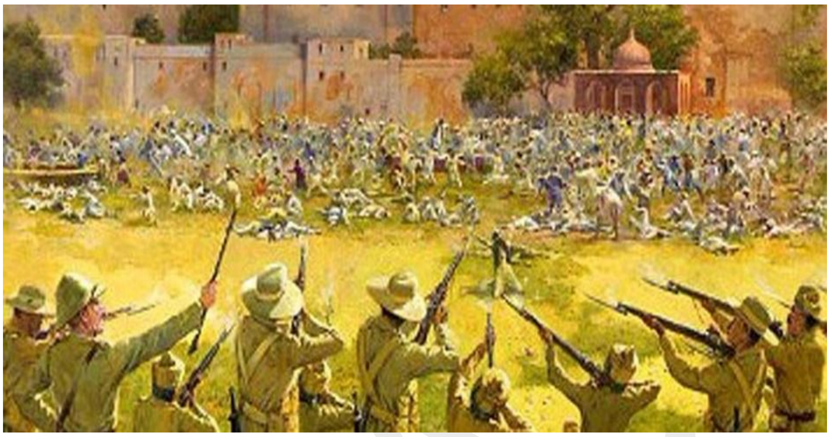

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारत के प्रधान मंत्री ने अमृतसर में पट्टिका का अनावरण करके जलियांवाला बाग स्मारक का नवीकृत परिसर राष्ट्र को समर्पित किया। साथ ही, संग्रहालय/चित्र दीर्घाओं का भी उद्घाटन किया।

अन्य संबंधित तथ्य

- जलियांवाला बाग स्मारक, **13 अप्रैल, 1919** को हुए जलियांवाला बाग नरसंहार शोक स्मरणार्थ निर्मित किया गया है।
- इस स्मारक को जलियांवाला बाग राष्ट्रीय स्मारक अधिनियम, 1951 (हाल ही में 2019 में संशोधित) द्वारा स्थापित किया गया था। इससे यह संसद के एक अधिनियम द्वारा शासित देश का प्रथम राष्ट्रीय स्मारक बन गया है। इसके अध्यक्ष **प्रधान मंत्री होते हैं।**
- यहाँ हुआ नरसंहार तात्कालिक संदर्भों से अलग हटकर अकस्मात रूप से घट जाने वाली घटना नहीं थी, बल्कि एक ऐसी घटना थी, जिसकी पृष्ठभूमि में कई कारक कार्य कर रहे थे।

नरसंहार के उपरांत

- जलियांवाला बाग की खबर संपूर्ण देश में फ़ैल गई। इसके विरोध में व्यापक प्रदर्शन हुए, जिनका सरकार ने क्रूर दमन करने का हर संभव प्रयास किया। इस हिंसा को देखते हुए, महात्मा गांधी ने **रॉलेट विरोधी सत्याग्रह को वापस ले लिया।**
- **इसके विरोध में रवींद्रनाथ टैगोर ने अपनी नाइटहुड की उपाधि का त्याग कर दिया।**
- **अक्टूबर 1919** में, नरसंहार के बारे में जांच-पड़ताल करने के लिए **अव्यवस्था जांच समिति (डिसोर्डर्स इन्क्वायरी कमिटी)**, जिसे **हंटर आयोग** के नाम से भी जाना जाता है, का गठन किया गया।
- वर्ष 1920 में, आयोग ने डायर की उसके कार्यों के लिए निंदा की। उसे अपने ब्रिगेड कमांडर के पद से त्यागपत्र देने का निर्देश दिया गया और उसे सूचित किया गया कि उसे अब भारत में कोई नियुक्ति नहीं मिलेगी।
- बाद में **वर्ष 1940 में** लंदन के कैक्सटन हॉल में, **एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी उधम सिंह ने** नरसंहार के दौरान पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर **रहे माइकल ओ' डायर का वध कर दिया।** उसने डायर की कार्रवाई को अनुमोदन दे दिया था और गोलीबारी के उपरांत पंजाब में मार्शल लॉ लगा दिया था, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि यह खबर बाहर न जा सके

घटनाएं जो नरसंहार का का कारण बनीं	
रॉलेट एक्ट को स्वीकृति और रॉलेट सत्याग्रह का आरम्भ	▪ रॉलेट एक्ट (काला कानून) ने सरकार को राजद्रोही गतिविधियों से संबद्ध किसी भी व्यक्ति को बिना सुनवाई कारावासित करने या बंदी बनाने का अधिकार दे दिया था। ▪ गांधीजी ने रॉलेट एक्ट के विरुद्ध **सत्याग्रह** आरम्भ कर दिया था तथा अंग्रेजों ने **उनके पंजाब में प्रवेश करने पर रोक** लगा दी थी।
अमृतसर में नेताओं की गिरफ्तारी और पंजाब में अशांति	▪ दो प्रमुख नेताओं **डॉ. सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल** ने रॉलेट एक्ट के विरुद्ध अमृतसर में शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन आयोजित किया, जिसके उपरांत उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। ▪ दोनों नेताओं की रिहाई की मांग कर रहे प्रदर्शनकारियों पर सैनिकों ने गोली चला दी, जिसके परिणामस्वरूप हिंसक टकराव हुआ। इसमें रेलवे लाइन, टेलीग्राफ पोस्ट और सरकारी इमारतों को नष्ट किया गया तथा कई यूरोपियों एवं भारतीयों की मृत्यु हो गई।
पंजाब में मार्शल लॉ लागू किया गया	▪ पंजाब के अधिकांश क्षेत्रों में मार्शल लॉ लगा दिया गया तथा सभा करने की स्वतंत्रता के साथ नागरिक स्वतंत्राओं को प्रतिबंधित कर दिया गया। ▪ **ब्रिगेडियर–जनरल डायर** ने चार से अधिक लोगों के एकजुट होने पर प्रतिबंध लगा दिया।
जलियांवाला बाग में लोगों का एकत्रित होना	▪ **13 अप्रैल 1919** को बैसाखी के त्यौहार को मनाने के लिए और दो नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में लगभग 10,000 लोगों की भीड़ जलियांवाला बाग में एकत्रित हो गई।
नरसंहार	▪ ब्रिगेडियर–जनरल डायर, जो अपने सैनिकों के साथ जलियांवाला बाग में तैनात था, ने एकमात्र निकास द्वार को बंद करा दिया और बिना किसी चेतावनी के सैनिकों को फायरिंग करने के आदेश दे दिए। ▪ 10-15 मिनट तक लगातार फायरिंग जारी रही और गोली समाप्त होने के उपरांत ही फायरिंग रुकी। ▪ जनरल डायर और मिस्टर इरविन द्वारा **मारे गए कुल लोगों की संख्या** 291 वर्णित की गई। जबकि, मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता वाली समिति सहित अन्य रिपोर्ट में मारे गए लोगों की संख्या 500 से अधिक वर्णित की गई।

- इस घटना से लगे आघात **और उत्पन्न हुए आक्रोश के कारण वर्ष 1920-1922 का असहयोग आंदोलन अस्तित्व में आया।** यह आंदोलन 25 वर्ष उपरांत भारत में ब्रिटिश शासन समाप्त होने की दिशा में एक कदम सिद्ध हुआ।

5.2. मालाबार/मोपला विद्रोह (Malabar/Moplah Rebellion)

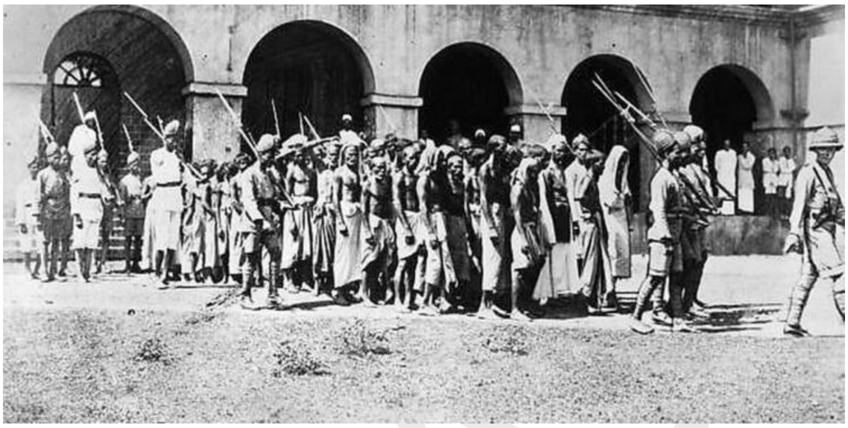

सुर्ख़ियों में क्यों?

मालाबार विद्रोह के नेता **वरियमकुन्नथ कुंजाहम्मद हाजी, अली मुसलियार** और 387 अन्य "मोपला शहीदों" को **भारत के स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों के शब्दकोश** से हटाया जाएगा।

अन्य संबंधित तथ्य

- **भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (ICHR)** द्वारा प्रकाशित शब्दकोश के पांचवें खंड में प्रविष्टियों की समीक्षा करने वाले तीन सदस्यीय पैनल ने इन्हें हटाने की अनुशंसा की है। पैनल का मानना है कि 1921 का विद्रोह कभी भी स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा नहीं था, बल्कि एक **कट्टरपंथी आंदोलन** था।
- इसने निष्कर्ष निकाला कि हाजी एक उपद्रवी थे, जिन्होंने शरिया अदालत की स्थापना की थी। इसके अतिरिक्त, बड़ी संख्या में "मोपला शहीदों" (जो विचाराधीन कैदी थे) की हैजा जैसी बीमारियों के कारण और प्राकृतिक कारण से मृत्यु हुई थी, इसलिए उन्हें शहीद नहीं माना जा सकता।

मालाबार विद्रोह के बारे में

- मालाबार विद्रोह को मोपला उपद्रव के रूप में भी जाना जाता है। यह 1921 ई. में ब्रिटिश शासकों और स्थानीय हिंदू जमींदारों के विरुद्ध मुस्लिम काश्तकारों का सशस्त्र विद्रोह था।
- इसे प्राय: दक्षिण भारत में प्रथम राष्ट्रवादी विद्रोहों में से एक माना जाता है और प्राय: **किसान विद्रोह** के रूप में भी वर्णन किया जाता रहा है।
- यह महात्मा गांधी के नेतृत्व में **खिलाफत/असहयोग आंदोलन (1920-1922)** के व्यापक दायरे में हुआ था।

विद्रोह का मार्ग

- इसने मुख्य रूप से **जेनमियों, पुलिस और सैनिकों** पर गुरिल्ला-प्रकार के हमलों का रूप धारण कर लिया था।
- औपनिवेशिक सत्ता के प्रतीकों यथा- टेलीग्राफ लाइनों, रेलवे स्टेशनों, न्यायालयों, डाकघरों आदि और जमींदारों के घरों पर हमले किए गए थे।

विद्रोह के कारण

मालाबार क्षेत्र में सामंती संघर्षों का इतिहास	▪ इस क्षेत्र में कृषक–जमींदारों के संबंध ऐतिहासिक रूप से तनावपूर्ण थे। ▪ वास्तव में, 1836 ई. से 1919 ई. के मध्य मोपलाओं द्वारा उच्च जाति के हिंदू जमींदारों, उनके संबंधियों और सहायकों तथा ब्रिटिश प्राधिकारियों के विरुद्ध लगभग 32 विद्रोह संचालित किए गए थे।
कृषकों में असंतोष	▪ अंग्रेजों की दमनकारी नीति के परिणामस्वरूप कर में वृद्धि, असुरक्षित काश्तकारी, अतिशय लगान, बलपूर्वक निष्कासन इत्यादि में वृद्धि हुई। इनके कारण मोपला काश्तकारों की आर्थिक स्थिति समय के साथ अत्यधिक ह्रासमान होती गई। ▪ इससे ब्रिटिश–विरोधी और सामंत–विरोधी भावनाएं भड़क गई थीं।
मोपलाओं का राजनीतिक लामबंदी	▪ **कांग्रेस ने मोपला कृषकों के साथ संपर्क किया और उन्हें खिलाफत आंदोलन के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन करने के लिए एकजुट करने का प्रयास किया।** साथ ही, मालाबार क्षेत्र में कृषि–सुधारों का समर्थन किया। • जून 1920 में मालाबार क्षेत्र में एक खिलाफत समिति का गठन किया गया, जो इस क्षेत्र में अत्यधिक सक्रिय हो गई थी। • अगस्त, 1920 को गांधी जी और शौकत अली (भारत में खिलाफत आंदोलन के नेता) ने कालीकट का दौरा किया, ताकि मालाबार के निवासियों के मध्य असहयोग आंदोलन तथा खिलाफत आंदोलन का संयुक्त संदेश प्रचारित किया जा सके। • जनवरी 1921 में, मोपलाओं ने अपने धार्मिक नेता **महदूम तंगल** के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन को समर्थन देने का संकल्प लिया।
तात्कालिक कारण	▪ अगस्त 1921 में खिलाफत नेता अली मुसलियार की गिरफ्तारी और तिरुरंगाडी में एक मस्जिद में छापा मारे जाने की अफवाह फैलने के उपरांत मोपलाओं ने **वरियमकुन्नथ कुंजाहम्मद हाजी** के नेतृत्व में सशस्त्र विद्रोह कर दिया।

- जब यह विद्रोह मालाबार जिले में फैल गया, तो ब्रिटिश अधिकारी और स्थानीय पुलिस वहाँ से पलायन कर गए थे तथा **क्षेत्र का एक बड़ा हिस्सा स्थानीय विद्रोहियों के नियंत्रण** में छोड़ गए थे।
  - यह क्षेत्र अगस्त 1921 में एक 'स्वतंत्र राज्य' घोषित कर दिया गया था, जिसका शासक हाजी था।

© Vision IAS

- ○ लगभग छह महीने तक, उसने **समानांतर खिलाफत शासन चलाया, जिसका मुख्यालय नीलांबुर में था।** यहाँ तक कि इसका अपना पृथक पासपोर्ट, मुद्रा और कराधान की प्रणाली भी थी।
- ○ काश्तकारों को कर प्रोत्साहनों के साथ-साथ उनके द्वारा खेती की जाने वाली भूमि पर उन्हें अधिकार प्रदान किया गया था।

- हालांकि, यह आंदोलन मुख्य रूप से ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध विरोध के रूप में आरंभ हुआ था**,** परन्तु इसने सांप्रदायिक स्वरूप ग्रहण कर लिया था, जिसकी चरम परिणति **सांप्रदायिक हिंसा** में हुई।

5.3. पाइका विद्रोह (Paika Rebellion)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, केंद्र सरकार ने कहा है कि **पाइका विद्रोह** को **प्रथम स्वतंत्रता संग्राम** नहीं कहा जा सकता।

अन्य संबंधित तथ्य:

- ओडिशा सरकार, वर्ष 2017 से केंद्र सरकार से पाइका विद्रोह को स्वतंत्रता के पहले युद्ध के रूप में घोषित करने का आग्रह कर रही है।
    - ○ वर्तमान में, सन् **1857 के भारतीय विद्रोह** को ब्रिटिश शासन के खिलाफ **प्रथम स्वतंत्रता संग्राम** कहा जाता है।
- संस्कृति मंत्रालय ने सूचित किया है कि इसे राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) की **कक्षा 8 की इतिहास की पाठ्यपुस्तक में** केस स्टडी के रूप में शामिल किया जाएगा।
- वर्ष 2018 में, भारतीय प्रधानमंत्री ने पाइका विद्रोह पर **स्मारक डाक टिकट** और **सिक्का** जारी किया था।

पाइका विद्रोह (1817-1825)

- पाइका विद्रोह एक **सशस्त्र विद्रोह** था, जो ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ **ओडिशा** में हुआ था। यह प्रथम सिपाही विद्रोह से लगभग 40 वर्ष पूर्व घटित हुआ था।
    - ○ पाइका, **ओडिशा के गजपति शासकों के पारंपरिक भू-स्वामी लड़ाके थे**, जो राजा को सैन्य सेवाएं देते थे। पाइका समुदाय के पास **लगान-मुक्त भूमि** थी, जो उन्हें खुर्दा राज्य में उनकी सैन्य सेवा के लिए प्रदान की गई थी।
- **ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा** वर्ष 1803 में खुर्दा के राजा, **राजा मुकुंद देव को सत्ता से हटाने के पश्चात** अंग्रेजों ने स्वयं को ओडिशा में स्थापित कर लिया था।
- गजपति राजा की लड़ाका सेना के वंशानुगत प्रमुख, **बख्शी जगबंधु विद्याधर** के नेतृत्व में पाइका, आदिवासियों और समाज के अन्य वर्गों का समर्थन प्राप्त कर एकजुट हुए।
    - ○ उन्होंने ब्रिटिश सत्ता के प्रतीकों पर हमला किया, खुर्दा की ओर अपने कूच के दौरान उन्होंने पुलिस स्टेशनों, प्रशासनिक कार्यालयों और सरकारी खजाने को आग लगा दी, जहां से अंग्रेजों को भागना पड़ा।
    - ○ उन्हें जमींदारों, ग्राम प्रधानों और आम किसानों का समर्थन प्राप्त था।
- पाइका विद्रोह पूरे राज्य में जंगल की आग की तरह फैल गया। इसके परिणामस्वरूप अंग्रेजों और पाइका बलों के बीच कई टकराव और मुठभेड़ें हुईं। विद्रोह को **अंततः ब्रिटिश सेना द्वारा दबा दिया गया।**

- विद्याधर को वर्ष 1825 में जेल में डाल दिया गया और वर्ष 1829 में जेल में उनकी मृत्यु हो गई।

पाइका विद्रोह के परिणाम

- **प्रशासनिक परिवर्तन:** ओडिशा के लोगों (ओडिया) को सरकारी सेवाओं में नियुक्त किया गया और उन्हें जिम्मेदार कार्य सौंपे गए।
- लोगों द्वारा सुगम खरीद के लिए **नमक की कीमतों में कमी की गई** और अधिक नमक उपलब्ध कराया गया।
- स्थानीय जमींदारों के **राजस्व बोझ में कमी हुई।** कई मामलों में, सरकार ने बकायेदारों की संपत्ति खरीदी और उन्हें मूल मालिकों को लौटा दिया।
- **पाइकाओं को राजा की लड़ाका सेना का पेशा छोड़ने** और आजीविका कमाने के साधन के रूप में **खेती व अन्य कार्यों को अपनाने** के लिए मजबूर किया गया।
- **पुरी के जगन्नाथ मंदिर का प्रबंधन** राजा मुकुंददेव द्वितीय के पुत्र रामचंद्र देव तृतीय को सौंप दिया गया।

5.4. अन्य महत्त्वपूर्ण सुर्ख़ियाँ (Other Important News)

सारागढ़ी का युद्ध	• 12 सितंबर को **सारागढ़ी के युद्ध की 124वीं वर्षगांठ** थी। यह युद्ध **ब्रिटिश भारतीय सेना के सिख सैनिकों और उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत में पश्तून ओरकजई आदिवासियों के बीच** लड़ा गया था। ○ इक्कीस सैनिकों को **8,000 से अधिक अफरीदी और ओरकजई आदिवासियों** के विरुद्ध तैनात किया गया था, परन्तु उन्होंने मृत्यु का सामना करते हुए साहसपूर्वक युद्ध किया था। • सारागढ़ी, उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत की सुलेमान रेंज में फोर्ट लॉकहार्ट और फोर्ट गुलिस्तान (जिसे फोर्ट कैवगनरी भी कहा जाता है) के मध्य एक संचार रिले पोस्ट था।
1839 ई. का ताई खम्पती विद्रोह	• 1839 ई. में, ताई खामती या खम्पती लोगों ने ब्रिटिश उपनिवेशीकरण का विरोध किया था। इसके परिणामस्वरूप 80 ब्रिटिश सैनिक मारे गए थे। • **ताई खम्पती के बारे में** ○ यह अरुणाचल प्रदेश की प्रमुख जनजातियों में से एक है। वे नामसाई जिले में अधिवासित हैं। ○ **'खम्पती' शब्द का अर्थ है 'सोने से भरी भूमि'।** ○ वे **थेरवाद बौद्ध धर्म** का पालन करते हैं। उनकी अपनी लिपि है, जिसे **ताई लिपि (लिक-ताई)** कहते हैं। • खम्पती नृत्य को **का पुंग** (**का** अर्थ नृत्य और **पुंग** का अर्थ कहानी) के रूप में भी जाना जाता है।

 © Vision IAS

6. विविध (MISCELLANEOUS)

6.1. जनजातीय गौरव दिवस (Janjatiya Gaurav Divas)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने **बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर 15 नवंबर को 'जनजाति गौरव दिवस'** के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। इसका उद्देश्य भारतीय इतिहास और संस्कृति में **अनुसूचित जनजातियों के योगदान को सम्मानित करना है।**

अन्य संबंधित तथ्य

- यह दिवस प्रतिवर्ष मनाया जाएगा और **सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और वीरता,** आतिथ्य एवं राष्ट्रीय गौरव के **भारतीय मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए आदिवासियों के प्रयासों को मान्यता देगा।**
- **संथाल, तामार, कोल, भील, खासी और मिज़ो जैसे आदिवासी समुदायों द्वारा कई आंदोलनों से** भारत के स्वतंत्रता संग्राम को मजबूती प्राप्त हुई थी।
- ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ देश के विभिन्न क्षेत्रों में **आदिवासी आंदोलन राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े** और पूरे देश में भारतीयों को प्रेरित किया।

बिरसा मुंडा के बारे में

- बिरसा मुंडा को भगवान बिरसा मुंडा या धरती आबा के नाम से भी जाना जाता था। उनका **जन्म छोटानागपुर पठार क्षेत्र (झारखंड) के खूंटी जिले में मुंडा जनजाति में** हुआ था।

- ईसाई धर्म में प्रारंभिक धर्मांतरण और मिशनरी स्कूल से शिक्षा प्राप्ति के बाद, शीघ्र ही **उन्हें ब्रिटिश और जमींदारों द्वारा स्थानीय जनजातियों के शोषण का एहसास हुआ। इन लोगों को 'दीकू' (अर्थात 'बाहरी लोग) कहा जाता था।**
- बिरसा आदिवासी **समाज में सुधार करना चाहते थे** और इसलिए, **उन्होंने लोगों से जादू टोने में विश्वास को त्यागने का आग्रह किया।** इसके बजाय प्रार्थना के महत्व, **शराब से दूर रहने**, भगवान में विश्वास रखने और आचार संहिता का पालन करने पर बल दिया।
    - इन्हीं के आधार पर उन्होंने **बिरसाइत नामक एक नए धर्म की भी शुरुआत की थी।** यह ईसाई मिशनरियों के लिए खतरा था, जो आदिवासियों का धर्म परिवर्तन कर रहे थे।
- बिरसा ने स्थानीय अधिकारियों द्वारा आदिवासियों के शोषण और भेदभाव के खिलाफ **'उलगुलान' (विद्रोह) या महान विद्रोह (The Great Tumult) नामक एक आंदोलन** शुरू किया।
    - इसके परिणामस्वरूप छोटानागपुर काश्तकारी (Chotanagpur Tenancy - CNT) अधिनियम, 1908 पारित हुआ।
    - CNT अधिनियम में **भूमि अभिलेखों के निर्माण और रखरखाव के प्रावधान किए गए थे।** इस अधिनियम ने "मुंडारी खुंटकट्टीदार" (उन्हें मुंडाओं के बीच भूमि का मूल अधिवासी माना जाता है) की एक विशेष काश्तकारी श्रेणी भी निर्मित की थी। साथ ही, **गैर-आदिवासियों को भूमि का हस्तांतरण प्रतिबंधित कर दिया गया था।**
- **बिरसा मुंडा ने बैठ-बेगारी प्रणाली' का भी सक्रिय रूप से विरोध किया।** यह एक प्रकार की 'बलात श्रम' प्रणाली थी, जो आदिवासियों पर लागू होती थी।
- **9 जून, 1900 को हैजा से मुंडा की मृत्यु हो गई थी।** हालांकि, ऐसा कहा जाता है कि जेल में रहते हुए उनमें हैजा के कोई लक्षण नहीं थे, फिर भी ब्रिटिश सरकार ने उनकी मृत्यु के कारण को हैजा बताया।

भारत में प्रमुख आदिवासी आंदोलन

- आदिवासी आंदोलनों के बेहतर विश्लेषण के लिए इन आंदोलनों को भारत की मुख्य भूमि के आदिवासी विद्रोहों तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र में केंद्रित और सीमांत आदिवासी विद्रोहों के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
    - **मुख्य भूमि पर हुए आदिवासी विद्रोह**
        - अंग्रेजों की भूमि बंदोबस्त प्रणाली ने **आदिवासियों की संयुक्त स्वामित्व परंपरा को प्रभावित किया** और उनकी सामाजिक व्यवस्था को बाधित किया।
        - जैसा कि कंपनी शासन द्वारा कृषि को एक व्यवस्थित रूप में विस्तारित किया गया था, **इससे आदिवासी अपनी भूमियों से वंचित हो गए थे और इन क्षेत्रों में गैर-आदिवासी लोगों का प्रवेश बढ़ गया था।**
        - **वनों में स्थानांतरित खेती पर अंकुश**

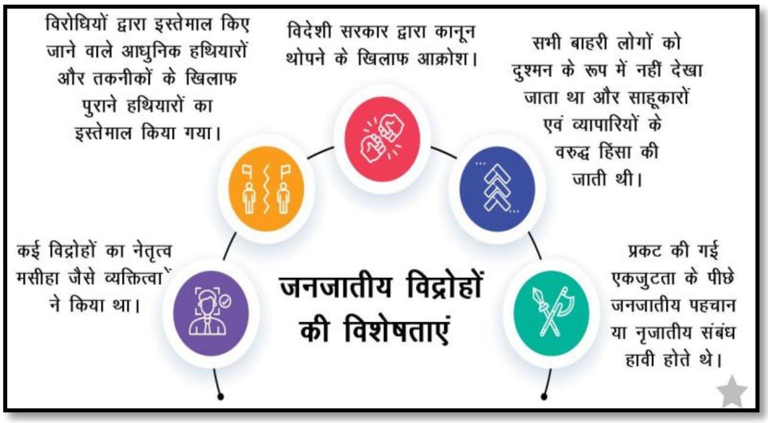

© Vision IAS DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI

लगाया गया, इससे आदिवासियों की समस्याएं और बढ़ गईं।
- सरकार ने आरक्षित वनों की स्थापना कर, **लकड़ी के उपयोग और चराई को प्रतिबंधित कर वन क्षेत्रों पर आदिवासी अधिकारों को सीमित कर दिया।**
- **पुलिस, व्यापारियों और साहूकारों** (उनमें से अधिकांश 'बाहरी लोगों') द्वारा शोषण ने आदिवासियों के कष्टों को और बढ़ाया।
- उपनिवेशवाद के विस्तार के साथ, **ईसाई मिशनरी इन क्षेत्रों में आए** और उनकी गतिविधियों ने आदिवासियों के पारंपरिक रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप किया।

- **पूर्वोत्तर सीमांत की जनजातियों के आंदोलन**
  - उनके विद्रोह अक्सर **भारतीय संघ के भीतर राजनीतिक स्वायत्तता या पूर्ण स्वतंत्रता के पक्ष में थे।**
  - ये **आंदोलन वन-आधारित या कृषि विद्रोह नहीं थे,** क्योंकि भूमि और वन क्षेत्र, आमतौर पर इन आदिवासियों के नियंत्रण में थे।
  - अंग्रेजों के विरुद्ध सीमांत जनजातीय विद्रोह **गैर-सीमांत जनजातीय आंदोलनों की तुलना में लंबे समय तक जारी रहा।**

- **भारत की जनजातियों द्वारा बोली जाने वाली कुछ लोकप्रिय भाषाएँ इस प्रकार हैं:** भतरी, भीली, हल्बी, हो, कुई, कोलामी, कुई, कोंडा, कोया, गोंडी, उरांव/कुरुख, पारजी आदि।

भारत में आदिवासी आंदोलनों के मुद्दे
- **आदिवासी विद्रोह शुरू से ही प्रबल नहीं थे।** इसका कारण यह था कि उनके पास संघर्ष के लिए पुराने हथियार थे, जिनका मुकाबला उनके विरोधियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले आधुनिक हथियारों और तकनीकों से था।
- अधिकांश विद्रोह **प्रकृति में स्थानीयकृत** थे और उनमें अखिल भारतीय भागीदारी का अभाव था।
- विद्रोह में समन्वय और सुनियोजन का अभाव था।

भारत के प्रमुख आदिवासी विद्रोह

नाम	उद्गम स्थान	घटनाएं	परिणाम
पहाड़िया (1778)	राज महल पहाड़ियाँ	अंग्रेजों द्वारा उनके क्षेत्र में विस्तार करने पर, वीर पहाड़ियों ने विद्रोह कर दिया।	इनके क्षेत्र को दामिन-ए-कोह क्षेत्र घोषित करके अंग्रेजों को मजबूरन शांतिपूर्ण तरीके से यहाँ से लौटना पड़ा।
चुआर विद्रोह (जिसे जंगलमहल आंदोलन के नाम से भी जाना जाता है)	मिदनापुर जिले में 1776-1772 ई. और 1795-1816 ई. के मध्य	• **अकाल, लगान की बढ़ती मांग और आर्थिक तंगी** ने चुआर जनजातियों को हथियार उठाने के लिए मजबूर कर दिया था। • सबसे महत्वपूर्ण विद्रोह 1798 ई. में **दर्जन सिंह** के नेतृत्व में शुरू हुआ।	इस विद्रोह का अंग्रेजों द्वारा निर्दयता से दमन किया गया था।
कोल विद्रोह (1831)	छोटानागपुर	• कोल सरदारों से बाह्य लोगों जैसे कि हिन्दू, सिख, मुस्लिम किसानों और साहूकारों को बड़ी मात्रा में भूमि हस्तांतरित की गई। • ब्रिटिश न्यायिक और राजस्व नीतियों ने कोल समुदाय की पारंपरिक सामाजिक स्थिति को प्रभावित किया। • प्रसिद्ध नेता: **बुद्धो भगत।**	व्यवस्था को बहाल करने के लिए बड़े पैमाने पर सैन्य अभियान चलाया गया।
हो और मुंडा विद्रोह (1820-1837)	सिंहभूम	• पराहाट के राजा ने हो जनजातियों को अधिग्रहण के खिलाफ़ विद्रोह करने के लिए संगठित किया था। • बाद में, 1831 ई. में, नई कृषि राजस्व	• यह विद्रोह 1832 ई. में समाप्त हो गया था, लेकिन हो लोगों की विद्रोही गतिविधियां 1837 ई. तक जारी रहीं।

		नीतियों और बंगालियों के प्रवेश के विरुद्ध विरोध करने के लिए हो मुंडाओं के साथ मिल गए।	
संथाल विद्रोह (1855-56)	राजमहल पहाड़ियाँ	• पुलिस और जमींदारों के सहयोग से साहूकारों ने किसानों का शोषण किया और उनकी भूमि का बलात अधिग्रहण किया। • दो भाइयों, **सिद्धू और कान्हू** के नेतृत्व में संथाल ने कंपनी राज के उन्मूलन की उद्घोषणा की और भागलपुर एवं राजमहल के बीच के क्षेत्र को स्वतंत्र घोषित कर दिया।	• विद्रोह को रोकने के लिए वारेन हेस्टिंग्स द्वारा दीर्घकालीन सैन्य कार्रवाई की गई। • 'संथाल परगना' का निर्माण किया गया। • एक संथाल के लिए गैर-संथाल को भूमि हस्तांतरित करना अवैध घोषित कर दिया गया।
खोंड विद्रोह (1837-1856)	ओडिशा से श्रीकाकुलम और विशाखापटनम तक	• युवा राजा, **चक्र बिसोई** ने नरबलि की मनाही, नए करों और उनके क्षेत्रों में जमींदारों के प्रवेश का विरोध करने के लिए खोंडों का नेतृत्व किया था। • विदेशी राज की समाप्ति और स्वतंत्र सरकार को प्राप्त करने की आशा में 1914 ई. में ओडिशा में एक अन्य विद्रोह शुरू हुआ था।	बाद में, चक्र बिसोई के लापता होने के बाद, यह विद्रोह समाप्त हो गया।
कोया विद्रोह (1803, 1840, 1845, 1858, 1861, 1862 और 1879-80)	पूर्वी गोदावरी क्षेत्र	• पुलिस और साहूकारों द्वारा शोषण, नए नियम और वन क्षेत्रों में इनके परंपरागत अधिकारों की अस्वीकृति आदि इनकी शिकायतें थी।	
भील विद्रोह (1817-19)	भील पश्चिमी घाट में निवास करते थे और उत्तर तथा दक्कन के बीच पहाड़ी दर्रों को नियंत्रित करते थे।	• उन्होंने विद्रोह इसलिए किया क्योंकि, उन्हें अकाल, आर्थिक तंगी और कुशासन का सामना करना पड़ा था। • भीलों ने **1825, 1831 और 1846 ई.** में पुनः विद्रोह किया था। • **गोविंद गुरु** ने 1913 ई. तक भील राज के लिए संघर्ष करने हेतु उन्हें संगठित करने में दक्षिण राजस्थान के भीलों की मदद की थी।	• ब्रिटिश राज ने विद्रोह को रोकने के लिए दोनों, बल और सुलह प्रयासों का प्रयोग किया था।
कोली विद्रोह (1829,1839 और 1844-48)	भील आदिवासियों के पड़ोसी	• इन्होंने कंपनी राज के आरोपण का विरोध किया, जिसके कारण इन्हें बड़ी मात्रा में बेरोजगारी और इनके किलों के विखंडन का सामना करना पड़ा।	
रामोसी विद्रोह	पश्चिमी घाट की पहाड़ी जनजाति	• ब्रिटिश राज और प्रशासन का ब्रिटिश प्रारूप मंजूर नहीं था। • इन्होंने राज्य-हड़प नीति का विरोध किया।	• श्रेष्ठ ब्रिटिश सेना ने क्षेत्र में व्यवस्था को पुनः स्थापित किया। आमतौर पर अंग्रेजों ने रामोसियों के प्रति शांतिवादी नीति अपनाई थी।

© Vision IAS DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI

		• ये 1822 ई. में चित्तूर सिंह के नेतृत्व में संगठित हुए और सतारा के आस-पास के क्षेत्रों को लूटा।	
मुंडा विद्रोह (1899-1900)	छोटा नागपुर	• यह विद्रोह एक धार्मिक आंदोलन के रूप में शुरू हुआ था। किन्तु सामंती, जमींदारी, पटवारी और साहूकारों द्वारा किए गए शोषण से लड़ने के लिए इसने रानीतिक बल ग्रहण किया।	• छोटा नागपुर पठार में ब्रिटिश सैन्य दल तैनात कर दिए गए थे। • बिरसा को गिरफ़्तार कर कारावास का दंड दिया गया था।
अन्य विद्रोह	• **नैकदा आंदोलन** (1860 के दशक में मध्य प्रदेश और गुजरात); ब्रिटिश और जातिवादी हिंदुओं के खिलाफ़। • **खरवार आंदोलन** (1870 के दशक में बिहार) राजस्व बंदोबस्त गतिविधियों के खिलाफ़ खरवारों द्वारा किया गया था। • **बस्तर विद्रोह** (1910 ई. जगदलपुर); नए सामंतों और वन शुल्क के खिलाफ़। • **ताना भगत आंदोलन: मुंडा और उरांव जनजाति** ने यह आंदोलन शुरू किया था। इसका नेतृत्व **जतरा भगत और बलराम भगत** द्वारा किया गया था (1914-15 ई. छोटानागपुर)। यह बाह्य लोगों के हस्तक्षेप के खिलाफ़ एक सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में शुरू हुआ था। • कोया के **अलूरी सीताराम राजू के नेतृत्व में रंपा विद्रोह** (1916 व 1922-1924 ई. आंध्र प्रदेश के रंपा क्षेत्र में)। ब्रिटिश हस्तक्षेप के खिलाफ़। • **गोंड विद्रोह** (1940 के दशक में) गोंड धर्म के लोगों को एकत्रित करने के लिए आरंभ हुआ था।		

पूर्वोत्तर भारत के जनजातीय आंदोलन

नाम	उद्गम स्थान	घटनाएं	परिणाम
अहोम विद्रोह (1828)	असम	• प्रथम बर्मा युद्ध (1824-26) के बाद वापिस लौटने के अपने वादे को अंग्रेजों ने पूरा नहीं किया था। • यह विद्रोह **गोमधर कुंवर** के नेतृत्व में शुरू हुआ था।	• अहोम साम्राज्य का विभाजन करके कंपनी द्वारा विद्रोह को दबा दिया गया था।
खासी विद्रोह (1833)	गारो और जयंतिया पहाड़ियाँ	• ब्रिटिश एक सड़क का विकास करना चाहते थे ताकि बाहर के श्रमिक यहाँ प्रवेश कर पाएँ। • **तीरथ सिंह** के नेतृत्व में इस विद्रोह का संचालन हुआ था।	• अंग्रेजी सेना द्वारा विद्रोह को दबा दिया गया था।
अन्य मुख्य विद्रोह	• **सिंगफ़ोस विद्रोह** (1830 का दशक; असम)। • **कुकी विद्रोह** (1917-19 ई. मणिपुर); प्रथम विश्व युद्ध के दौरान मजदूरों को भर्ती करने की ब्रिटिश नीति के विरुद्ध। • **त्रिपुरा में विद्रोह;** हाउस टैक्स दरों में बढ़ोतरी और क्षेत्र में बाह्य लोगों के निवास के खिलाफ (1863, 1920 का दशक, 1942-43)। • **जेलियांगसोंग विद्रोह** (1920 का दशक, मणिपुर); ज़ेमी, लियांगमे और रोंगमे जनजातियों के नेतृत्व में। • **नागा आंदोलन** (1905-31 ई. मणिपुर); जादोनांग के नेतृत्व में। ब्रिटिश शासन के खिलाफ़ और नागा शासन स्थापित करने के लिए। • **हेराका आंदोलन** (1930 के दशक में मणिपुर); **रानी गाइदिन्ल्यू** के नेतृत्व में। इस आंदोलन को तो दबा दिया गया था, किन्तु 1946 ई. में काबुई नागा संघ का निर्माण हो गया था।		

सुर्ख़ियों में रही जनजातियां

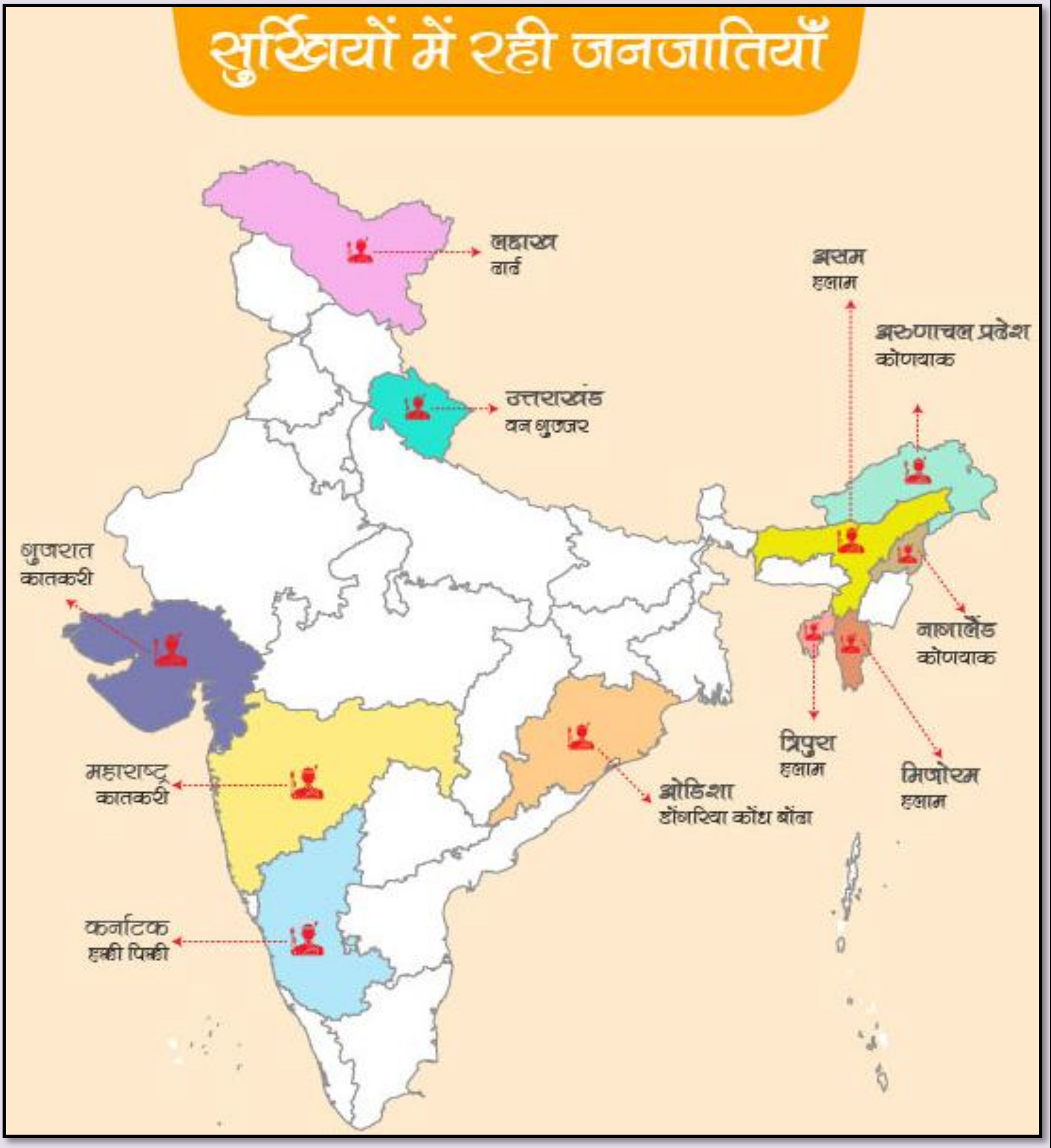

जनजाति के नाम	विवरण (Description)
कोन्याक जनजाति (Konyaks tribes)	• भारतीय सेना द्वारा 'गलती से' नागरिकों को मारे जाने के बाद नागालैंड में भड़की **हालिया हिंसा के केंद्र में कोन्याक जनजाति है।** • यह **नागालैंड का सबसे बड़ा** (मोन जिले के लगभग सौ गांवों में अधिवासित) **जनजातीय समूह है।** कोन्याक समुदाय के लोग, अरुणाचल प्रदेश और म्यांमार में भी अधिवासित हैं। • अपने **चेहरों पर टैटू** से पहचाने जाने वाले, कोन्याक **पारंपरिक शिकारी और योद्धा हैं** लेकिन अब उनका **मुख्य व्यवसाय कृषि है।** • कोन्याक जनजाति के लोगों को पहले 'हेड हंटर्स' के नाम से पुकारा जाता था। वे प्रतिद्वंद्वी जनजातियों पर हमला करने के बाद उनके सिर काट देते थे। **वर्ष 1960 के बाद से इन्होने इस प्रथा को छोड़ दिया है।**
हक्की पिक्की जनजाति	• हक्की पिक्की एक **यायावर जनजाति** है, जो उत्तर भारत से पलायन करके वर्तमान में मुख्य रूप से **कर्नाटक**

© Vision IAS DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI

	क्षेत्र और अन्य दक्षिण भारतीय राज्यों में अधिवासित हो गई है। • उन्हें **पक्षी पकड़ने वाले** (कन्नड़ भाषा में हक्की का अर्थ पक्षी और पिक्की का अर्थ है पकड़ने वाला) कहा जाता है • वे हिन्द-आर्य भाषा बोलते हैं, जिन्हें विद्वानों ने **'वागरी'** नाम दिया है। ○ **यूनेस्को (UNESCO) ने हक्की पीक्की को लुप्तप्राय भाषाओं में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया है।** • वर्तमान में, वे मुख्य रूप से हर्बल तेलों जैसे **हर्बल उत्पादों** की बिक्री में संलग्न हैं।
कतकारी जनजाति (Katkari Tribe)	• कतकारी जनजाति महाराष्ट्र और गुजरात के कुछ हिस्सों में रहने वाले **75 विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों** में से एक है। ○ **खैर (बबूल कत्था)** की लकड़ी से गाढ़ा रस **कथा (कत्था)** बनाने के अपने पुराने व्यवसाय के कारण उन्हें **कथोडी** के रूप में भी जाना जाता है। • हाल ही में, उनमें से कुछ ट्राइफेड द्वारा संचालित **प्रधान मंत्री वन धन योजना के तहत स्वयं सहायता समूहों** के माध्यम से गिलोय जैसे **लघु वनोपजों** को एकत्र करने में लगे हुए हैं।
हलाम जनजाति (Halam Tribe)	• **700 से अधिक हलाम लोग हिंसा के पश्चात त्रिपुरा लौट आए हैं।** • नृजातीय रूप से हलाम **कुकी-चिन जनजातियों** के **कोकेस-मंगोलॉयड (Cocase-Mongoloid)** मूल से संबंधित हैं। इनकी भाषा भी कमोबेश **तिब्बती-बर्मन परिवार** के समान है। • **ये भारत में त्रिपुरा, असम और मिजोरम राज्यों के मूल निवासी हैं।** • **हलाम मूल रूप से हिंदू हैं और शाक्त (शक्ति) संप्रदाय के अनुयायी हैं,** हालांकि मुरसिंह, रूपिनी और कलोई जैसे कुछ उप-कुलों में वैष्णववाद का प्रसार हो रहा है। किन्तु हलाम लोगों द्वारा **ईसाई धर्म** को भी अपनाया जा रहा है। • हलाम विशिष्ट प्रकार के **"टोंग घरों (Tong Ghar)"** में रहते हैं जो विशेष रूप से बांस और चान घास से बने होते हैं।
वन गुर्जर **घुमंतू खानाबदोश जनजाति**	• नैनीताल में उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने हाल ही में **गोविंद पशु विहार राष्ट्रीय उद्यान** के भीतर स्थित **बुग्याल (हिमालयी अल्पाइन घास के मैदान) में वन गुर्जरों के अपने ग्रीष्मकालीन वासभूमि में प्रवास करने के अधिकार** को बरकरार रखते हुए एक अंतरिम आदेश पारित किया। • वन गुर्जर **उत्तराखंड हिमालय में खानाबदोश घुमंतू समुदाय** है, जो ग्रीष्मकाल में तराई-भाबर और शिवालिक क्षेत्र से उच्च बुग्याल तक तथा शीत ऋतु में इसके विपरीत घास के मैदानों / चरागाहों तक अपने पशुओं को चारा उपलब्ध कराने के लिए प्रवास करते हैं।
सुर्ख़ियों में रही अन्य जनजाति	• ओडिशा में **विशेष रूप से सुभेद्य जनजातीय समूहों (PVTGs)** में आने वाली **डोंगरिया कोंध** और **बोंडा जनजाति** में कोविड-19 संक्रमण के मामले दर्ज किए गए हैं। • **डोंगरिया कोंध** ओडिशा में रायगडा जिले की **नियमगिरि पहाड़ियों** में रहते है। • इनकी भाषा कुई **अलिपिबद्ध** है। • **बोंडा जनजाति** अपनी एकांत जीवन शैली के लिए जानी जाती है, जो ओडिशा, छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश के संगम के पास, ओडिशा के मलकानगिरी के ऊंचे इलाकों में रहती है। • वे **मुंडा नृजातीय समूह** से संबंधित हैं। • **आर्यन घाटी में दर्द समूह: यह लद्दाख में एक बौद्ध आदिवासी समूह है।** ○ दर्द आर्यन लोग लेह और कारगिल जिलों के धा, हनु, बीमा, दारचिक और गरकोन गांवों में निवास करते हैं। 5 गांवों को एक साथ आर्यन घाटी कहा जाता है। ○ 'दर्द' शब्द **संस्कृत के 'दारदास' शब्द से बना है।** इसका अर्थ है पहाड़ियों पर रहने वाले लोग।" **इस क्षेत्र के लोग सांस्कृतिक और भाषाई रूप से लद्दाख के अन्य हिस्सों से भिन्न हैं।** ○ उनकी संस्कृति आर्य संस्कृति है। ○ **दर्द आर्यन अधिसूचित अनुसूचित जनजातियों की सूची में शामिल नहीं** है।

6.2. पूर्वोत्तर भारत में भू-पर्यटन स्थल (Geo-tourism Sites in North East)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) ने उत्तर पूर्व में पर्यटन हेतु भू-पर्यटन स्थलों की पहचान की है।

© Vision IAS

अन्य संबंधित तथ्य:

- देश में 32 स्वीकृत भू-पर्यटन या भू-विरासत स्थलों में पूर्वोत्तर भारत से **बारह स्थान शामिल किए गए हैं।**
  - इन बारह स्थलों में से **तीन मेघालय में, दो-दो असम** और **त्रिपुरा में,** और एक-एक **अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड** और **सिक्किम** में हैं।

- भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (Geological Survey of India: GSI) संरक्षण और रखरखाव के लिए भू-विरासत स्थलों/राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक स्मारकों की घोषणा करता है। GSI या संबंधित राज्य सरकारों द्वारा इन स्थलों के संरक्षण हेतु आवश्यक उपाय किए जाते हैं।
- **यूनेस्को (UNESCO)** विश्व स्तर पर **ग्लोबल भू-उद्यान (geoparks) भी** घोषित करता है। वर्तमान में, **भारत में कोई वैश्विक भू-उद्यान नहीं है।**

इन स्थलों के बारे में

मेघालय	• **मामलुह गुफा,** पूर्वी खासी हिल्स जिले में चेरापूंजी के निकट स्थित है। यह गुफा होलोसीन पुराजलवायु (Holocene paleoclimate) और पुरामानसून (paleomonsoon) के महत्वपूर्ण साक्ष्य प्रदान करती हैं। • **मावबली या गॉड्स रॉक,** पूर्वी खासी हिल्स जिले के सिंटुंग गांव के निकट स्थित है। यह क्रिटेशियस युग के खासी समूह से संबंधित है। • **थेरियाघाट,** पूर्वी खासी हिल्स जिले में स्थित है। यह संभवत: भारत में सबसे अच्छी तरह से संरक्षित और सबसे पूर्ण क्रेटेशियस-पेलियोजीन सीमा खंडों में से एक है।
असम	• **माजुली:** ब्रह्मपुत्र नदी में माजुली, विश्व का सबसे बड़ा **"नदी द्वीप"** है। • **उमानंद:** ब्रह्मपुत्र में सबसे छोटे बसे हुए द्वीपों में से एक है।
त्रिपुरा	• **चबीमुरा** को गोमती नदी के तट पर एक खड़ी पहाड़ी भित्ति पर चट्टान पर अपनी नक्काशीदार पट्टिकाओं के लिए जाना जाता है। • **उनाकोटि** में 7वीं और 9वीं शताब्दी के बीच कई शैलोत्कीर्ण मूर्तियां और मंदिर हैं।
अरुणाचल प्रदेश	• **संगेस्तर त्सो,** वर्ष 1950 में एक बड़े भूकंप के दौरान नदी में अवरोध उत्पन्न होने के कारण निर्मित **माधुरी झील** के लिए प्रसिद्ध है।
मणिपुर	• **लोकटक झील:** यह पूर्वोत्तर की सबसे बड़ी **ताजे जल** की झील है। इसमें प्लवमान जैवभार **'फुमडी'** या उन पर मछुआरों की झोपड़ियां **'फुमसंग'** पाई जाती हैं। ○ **केयबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान** पृथ्वी का एकमात्र प्लवमान वन्यजीव अधिवास स्थल है। यह झील के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित है और **संगाई या ब्रो-एंटलर्ड डांसिंग डिअर** का अंतिम प्राकृतिक पर्यावास स्थल है।
मिजोरम	• **रीक तलंग** पहाड़ी तृतीयक रेत शेल विकल्पों के क्षरण के कारण गठित एक 'क्यूस्टा' है। ○ कुएस्टा का अर्थ है **एक तरफ एक कोमल ढलान या गर्त के साथ एक रिज और दूसरी तरफ एक खड़ी ढलान।**

नागालैंड	• **नागा हिल ओफियोलाइट** में विभिन्न प्रकार की मेसोज़ोइक और तदन्तर सेनोजोइक चट्टानें शामिल हैं, जो भारत-म्यांमार अभिसरण प्लेट सीमा पर उत्पन्न हुई हैं।
सिक्किम	• **स्ट्रोमेटोलाइट पार्क**, जिसमें स्ट्रोमेटोलिटिक (शैवाल) विकास शामिल है। यह पार्क सिक्किम हिमालय में पृथ्वी पर प्रारंभिक जीवन के दुर्लभ उदाहरणों में से एक प्रस्तुत करता है।

6.3. सुर्ख़ियों में रहे भौगोलिक संकेतक का दर्जा प्राप्त उत्पाद {Geographical Indication (GI) Tag Products in News}

भौगोलिक संकेत (GI) टैग के बारे में

- GI उन उत्पादों पर उपयोग किया जाने वाला एक संकेत है, **जो एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र से उत्पन्न होते हैं और जिसके कारण उनमें अनूठी विशेषताओं एवं गुणों का समावेश होता है।** ये विशेषताएं उस मूल क्षेत्र के कारण होती है। आमतौर पर **कृषि उत्पादों, खाद्य पदार्थों, शराब और स्पिरिट पेय, हस्तशिल्प और औद्योगिक उत्पादों** को GI टैग प्रदान किया जाता है।
- GI, उन बौद्धिक संपदा अधिकारों का हिस्सा है, जो औद्योगिक संपत्ति के संरक्षण के लिए पेरिस अभिसमय के अंतर्गत आते हैं।
  - GI, बौद्धिक संपदा अधिकार समझौते के व्यापार संबंधी पहलुओं **(ट्रिप्स/TRIPS) के अंतर्गत आता है।**
  - एक GI टैग एक दशक के लिए वैध होता है। इसके बाद इसे अगले 10 वर्षों के लिए नवीनीकृत किया जा सकता है।
- इस टैग के माध्यम से भौगोलिक संकेतक दर्जा प्राप्त उत्पादक/निर्माता किसी तृतीय पक्ष को उसके उत्पाद की नकल करने से रोक सकता है। इस तृतीय पक्ष का उत्पाद लागू मानकों के अनुरूप नहीं होता है।
- भारत में, भौगोलिक संकेतक पंजीकरण को **'माल के भौगोलिक संकेतक (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम,1999'** द्वारा प्रशासित किया जाता **है।**
- भारत में GI टैग पाने वाला पहला उत्पाद वर्ष 2004 में **दार्जिलिंग चाय** था।

राज्य	भौगोलिक संकेतक उत्पाद (GI Product)	संबंधित तथ्य
तमिलनाडु	मदुरै मल्ली	• हाल ही में, GI (भौगोलिक संकेतक) प्रमाणित **मदुरै मल्ली** (चमेली पुष्प की एक प्रजाति) और अन्य पारंपरिक पुष्पों **(जैसे-बटन गुलाब, लिली, चमंथी और मैरीगोल्ड)** को **तमिलनाडु से अमेरिका और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों** को निर्यात किया गया है। • इन पुष्पों के निर्यात का उद्देश्य विदेशों में रहने वाले भारतीयों के लिए ताजे पुष्पों की आपूर्ति को सुनिश्चित करना है, ताकि वहां रह रहे भारतीय लोगों के अपने घरों और मंदिरों में स्थापित **हिंदू देवताओं के लिए ताजे पुष्पों की मांग** को पूर्ण किया जा सकेगा। • मदुरै **मल्ली** के लिए **एक प्रमुख बाजार के रूप** में उभरा है। साथ ही, यह **भारत** की **'चमेली राजधानी'** (jasmine capital) के रूप में भी विकसित हुआ है।
	कल्लाकुरिची काष्ठ-नक्काशी	• **कल्लाकुरिची काष्ठ-नक्काशी** में शिल्पकारों द्वारा पारंपरिक शैलियों से प्राप्त अलंकरण और डिजाइनों का उपयोग किया जाता है। ○ प्राचीन काल में जब **मदुरै** एक महत्वपूर्ण नगर था, तब उस दौरान काष्ठ पर नक्काशी का कौशल एक स्वदेशी कला के रूप में विकसित हुआ था। • **तमिलनाडु में GI टैग प्राप्त अन्य उत्पाद:** कन्याकुमारी लौंग, डिंडीगुल ताले, महाबलीपुरम पाषाण प्रतिमा, नीलगिरी (परंपरागत) चाय, विरुपाक्षी पहाड़ी केला, तंजावुर गुड़िया, तंजावुर चित्रकारी, कांचीपुरम रेशमी साड़ी आदि।
पश्चिम बंगाल	लक्ष्मणभोग आम	• इस आम को बहरीन में आयोजित **सप्ताह भर चलने वाले भारतीय आम प्रचार कार्यक्रम में प्रदर्शित** किया गया था। • यह अपने **विशिष्ट स्वाद और उपस्थिति के लिए जाना जाता है।** इसे **प्रसिद्ध अल्फांसो आम का एक व्यवहार्य विकल्प** माना जाता है।
	खिर्सापति आम	• इस आम को बहरीन में आयोजित **सप्ताह भर चलने वाले भारतीय आम प्रचार कार्यक्रम में प्रदर्शित** किया

		गया था। • यह अपने **पीले-नारंगी रंग और विशिष्ट स्वाद** के लिए भारत और विदेशों में अत्यधिक प्रसिद्ध है। • इसे व्यापक रूप से **'आम का शैम्पेन' माना जाता** है। इस प्रजाति की एक और विशेषता यह है कि इसमें **कोई फाइबर नहीं होता** है।
	फाजिल आम	• **GI (भौगोलिक संकेतक) प्रमाणित फाजिल आम** की एक खेप को **पश्चिम बंगाल स्थित मालदा जिले से बहरीन** देश को निर्यात किया गया है।
बिहार	**जरदालु आम**	• इस आम को बहरीन में आयोजित **सप्ताह भर चलने वाले भारतीय आम प्रचार कार्यक्रम में प्रदर्शित** किया गया था। • जरदालु को इसके **क्रीमी टेक्सचर, प्राकृतिक चमकीले पीले रंग और एक आकर्षक सुगंध के लिए GI टैग** मिला है।
गुजरात	**भालिया गेहूं**	• गेहूं की GI प्रमाणित भालिया किस्म की **प्रथम खेप** गुजरात से केन्या और श्रीलंका को **निर्यात** की गई थी। • इस फसल की खेती **गुजरात के भाल क्षेत्र** में की जाती है, जिसमें **अहमदाबाद, आणंद, खेड़ा, भावनगर, सुरेंद्रनगर तथा भरूच जिले शामिल हैं।** • इस किस्म की **अनूठी विशेषता** यह है कि इसकी खेती **वर्षा आश्रित दशाओं** में की जा सकती है। • इसमें **प्रोटीन की मात्रा अधिक** होती है और यह **स्वाद में मीठा** होता है।
असम	**जुडिमा राइस वाइन**	• असम की **दिमासा जनजाति द्वारा घर में बनाई जाने वाली चावल की शराब जुडिमा** GI टैग प्राप्त करने वाली पूर्वोत्तर की प्रथम पारंपरिक मदिरा बन गई है। • जुडिमा का उत्पादन करने के लिए, दिमासा जनजाति द्वारा **बोरा** (क्षेत्र के लिए देशज) **नामक लसदार चावल और क्षेत्र के आसपास के वनों से एकत्र किए गए थेम्बा** (बबूल/एकेसिया पेनाटा) **नामक पौधे की छाल** का उपयोग किया जाता है। • असम के कुछ अन्य GI टैग पंजीकृत उत्पादों में **मुगा सिल्क, जोहा चावल तथा तेजपुर लीची** शामिल हैं।
महाराष्ट्र	**अल्फांसो आम**	• **आमों का राजा**, अल्फांसो जिन्हें **महाराष्ट्र में 'हापुस'** के नाम से जाना जाता है, घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में इसके स्वाद, सुखद खुशबू और जीवंत रंग के कारण अत्यधिक मांग में है। • महाराष्ट्र के **रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग, पालघर, ठाणे और रायगढ़ जिलों से अल्फांसो ने भौगोलिक संकेतक टैग (GI tag)** हासिल कर लिया है।
	सफेद प्याज	• हाल ही में, **महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के अलीबाग** के सफेद प्याज को भौगोलिक संकेत (GI) टैग प्रदान किया गया है। • यह GI टैग इसके **विशिष्ट मीठे स्वाद, इसे काटने पर आंसू न निकलने आदि जैसे कारकों के साथ-साथ इसके औषधीय गुणों** को विश्व भर में पहचान दिलाने में मदद करेगा। • यह मनुष्यों में **प्रतिरक्षा क्षमता को बढ़ाता है।** साथ ही यह **अनिद्रा, रक्त की सफाई,** रक्तचाप और गर्मी से संबंधित बीमारियों के प्रभाव को भी कम करने में मदद करता है।
उत्तराखंड	**7 स्वदेशी उत्पाद**	• **जी.आई. टैग प्राप्त उत्तराखंड के इन 7 स्वदेशी उत्पादों में शामिल हैं:** कुमाऊं का च्युरा तेल, मुनस्यारी राजमा, भोटिया दन्न (भोटिया नामक एक घुमन्तु समुदाय द्वारा बनाए जाने वाला गलीचा), ऐपण (विशेष अवसरों पर निष्पादित की जाने वाली पारंपरिक कला), रिंगल शिल्प/क्राफ्ट (बांस के रेशों से कलाकृतियां बनाने की कला), तांबे के उत्पाद और थुलमा (स्थानीय रूप से प्राप्त वस्त्रों से बने कंबल)। ○ ध्यातव्य है कि **तेजपत्ता (इंडियन बे लीफ), जी.आई. टैग प्राप्त करने वाला राज्य का प्रथम उत्पाद था।**

© Vision IAS DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI

6.4. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और विज्ञान की भूमिका (Indian Independence Movement & the Role of Science)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **"भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और विज्ञान की भूमिका"** पर केंद्रित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया।

अन्य संबंधित तथ्य

- इस राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन **भारतीय स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ** के उपलक्ष्य में किया गया था।
- इस सम्मेलन का आयोजन **वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान (CSIR-NIScPR)** ने किया था। **विज्ञान प्रसार, भारत सरकार का विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग तथा विज्ञान भारती (VIBHA)** इसके सहयोगी थे।
- यह सम्मेलन वस्तुतः **अधीनता और स्वतंत्रता के उपकरण के रूप में विज्ञान तथा वैज्ञानिकों, संस्थानों, आंदोलनों, नीतियों एवं योजनाओं की भूमिका** पर केंद्रित था। साथ ही, इसमें स्वतंत्रता के उपकरण के रूप में वैज्ञानिकों के दृष्टिकोण जैसे पहलू पर ध्यान दिया गया था।

© Vision IAS

अधीनता के उपकरण के रूप में विज्ञान

रणनीति	उदाहरण
ब्रिटिश द्वारा भारत के शोषण के उपकरण के रूप में विज्ञान	• अंग्रेजों ने **भारतीय सर्वेक्षण विभाग** (वर्ष 1767 में स्थापित), **ग्रेट ट्रिगोनोमेट्रिकल सर्वे ऑफ इंडिया** (GTS) (वर्ष 1818 में स्थापित) और **भारतीय रेलवे** (वर्ष 1853 में स्थापित) आदि की स्थापना की थी। इनकी स्थापना समृद्ध धातु क्षेत्रों की खोज तथा कलकत्ता, बॉम्बे एवं मद्रास प्रेसीडेंसी शहरों तक इन खनिजों के परिवहन हेतु की गई थी।
ब्रिटिश राज में 'रंगभेद' के रूप में विज्ञान	• **माउंट एवरेस्ट की ऊंचाई की गणना करने वाले पहले व्यक्ति राधानाथ सिकदार** थे। • जिस मलेरिया परजीवी की खोज के लिए सर रोनाल्ड रॉस को नोबेल पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया था, उसकी खोज में **किशोरी मोहन बंदोपाध्याय** ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। • वर्ष 1857 के विद्रोह के दौरान **शिवचंदर नंदी ने निरीक्षक के रूप में ब्रिटिश सरकार को उत्कृष्ट सेवाएं** प्रदान की थी। • **हालांकि, इनमें से किसी को भी उनके विशिष्ट कार्य के लिए यथोचित सम्मान** नहीं दिया गया था। इसके अतिरिक्त, उनके साथ वेतन, पदोन्नति आदि के मामले में भी भेदभाव किया गया था।

स्वतंत्रता के उपकरण के रूप में विज्ञान

अंग्रेजों ने कलकत्ता, मद्रास और बंबई में नए शैक्षणिक संस्थान स्थापित किए थे। इसका उद्देश्य अधिक कुशल और प्रबुद्ध कार्यबल तैयार करना था। हालांकि, इन संस्थानों से निकलने वाले युवा वैज्ञानिकों ने इस मिथक को खंडित किया कि भारतीयों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव है। साथ ही, उन्होंने यह भी सिद्ध किया कि भारतीय भी तार्किक रूप से सोच सकते हैं तथा उस दौर में प्रचलित क्षेत्रों में मूल अनुसंधान कर सकते हैं। उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप भारतीयों द्वारा कई वैज्ञानिक संस्थानों की स्थापना की गई। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

- **इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टिवेशन ऑफ साइंस (IACS):** इसकी स्थापना डॉ. महेंद्रलाल सरकार द्वारा की गई थी। इसका उद्देश्य मौलिक अनुसंधान के माध्यम से वैज्ञानिक प्रगति के लिए, विज्ञान के सभी क्षेत्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने हेतु भारतीय निवासियों को सक्षम बनाना था। IACS के तहत सात अग्रिम क्षेत्रों में प्रयास किए गए। इनमें भौतिकी, रसायन विज्ञान, खगोल शास्त्र, वर्गीकरण वनस्पति विज्ञान, वर्गीकरण जीव विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान और भूविज्ञान शामिल थे।
- **बंगाल केमिकल एंड फार्मास्युटिकल वर्कशॉप:** इसे वर्ष 1901 में आचार्य पी.सी.रे द्वारा स्थापित किया गया था। इसने भारत में स्वदेशी उद्योग को स्थापित करने में अति महत्वपूर्ण योगदान दिया था।
- **भारतीय विज्ञान संस्थान (IISC):** वर्ष 1908 में इसे सर जमशेदजी नसरवानजी टाटा ने स्थापित किया था। इसकी स्थापना जापान से शिकागो की यात्रा के दौरान स्वामी विवेकानंद द्वारा वर्ष 1893 में दिए गए सुझावों के बाद की गई थी।
- **कलकत्ता मैथमेटिकल सोसायटी:** इसे **वर्ष 1908** में स्थापित किया गया था। इसका उद्देश्य गणित के क्षेत्र में अवसरों का सृजन करना तथा विद्यार्थियों के माध्यम से इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देना है।
- **बोस अनुसंधान संस्थान:** इसे वर्ष 1917 में सर जगदीश चंद्र बोस ने स्थापित किया था। उन्होंने इस संस्थान को न केवल एक प्रयोगशाला बल्कि एक मंदिर के रूप में राष्ट्र को समर्पित किया था। यह बाद में **बसु विज्ञान मंदिर** के नाम से विख्यात हुआ।
    - बोस उस समय के एक असाधारण भौतिक विज्ञानी, वनस्पतिशास्त्री और जीव विज्ञानी थे। उन्होंने विद्युत चुम्बकीय विकिरणों के बेतार (वायरलेस) संचार की खोज की थी। बोस **'वसुधैव कुटुम्बकम'** के भारतीय दार्शनिक विचारों के आजीवन पक्षधर बने रहे थे। मानवीय हित में उन्होंने अपने शोध को कभी पेटेंट नहीं करवाया। वे अत्यधिक क्षमतावान व्यक्ति थे। उन्होंने अपनी नवीन तकनीकों और उपकरणों के माध्यम से पौधों में जीवन एवं संवेदनशीलता के अस्तित्व की खोज की थी तथा उन्हें प्रमाणित भी किया था।
- **महाराष्ट्र एसोसिएशन फॉर कल्टिवेशन ऑफ साइंस (MACS):** महेंद्रलाल सरकार के IACS से प्रेरित होकर, वर्ष 1946 में प्रोफेसर **शंकर पुरुषोत्तम आघरकर ने पुणे** में MACS की स्थापना की थी। वर्ष 1992 में इस संस्थान का नाम परिवर्तित कर **आघरकर अनुसंधान संस्थान** कर दिया गया था।
    - आघरकर एक भारतीय आकृति विज्ञानी (morphologist) और **पश्चिमी घाट की जैव विविधता के विशेषज्ञ थे।** यहां उन्होंने स्वच्छ जल में पाई जाने वाली जेलीफ़िश की खोज की थी, जो आमतौर पर अफ्रीका में पाई जाती है।

© Vision IAS DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI

6.5. सुर्ख़ियों में रहे त्यौहार (Festivals in News)

त्यौहार के नाम	विवरण

पर्युषण और दस लक्षण (Paryushan and Daslakshan)	• अमेरिकी राष्ट्रपति ने जैन समुदाय को पर्यूषण और दस लक्षण पर्व की शुभकामनाएं दी हैं।
	  ○ ये **आत्मा के गुणों और सार को मनाने के त्यौहार हैं।**
	  ○ इन्हें अग्रलिखित **दस प्रमुख गुणों के कठोर पालन द्वारा चिन्हित किया जाता है:** क्षमा, दान, सादगी, संतोष, सत्यता, आत्म-संयम, उपवास, वैराग्य, विनम्रता और निरंतरता।
	• **पर्यूषण:** इसे श्वेतांबर जैनों द्वारा मनाया जाता है। इसमें जैन उपासकों के लिए उपवास और ध्यान की वार्षिक अवधि 8-10 दिनों की होती है।
	• **दस लक्षण:** इसे दिगंबर जैनों द्वारा मनाया जाता है। यह एक 10 दिवसीय त्यौहार है, जो पर्यूषण के उपरांत होता है।

जल्लीकट्टू	• जल्लीकट्टू **तमिलनाडु का एक बैल को काबू करने से संबंधित खेल** है। यह पारंपरिक रूप से पोंगल के त्यौहार का हिस्सा है। • यह त्यौहार **प्रकृति का उत्सव है। इसके अंतर्गत अच्छी फसल के लिए प्रकृति को धन्यवाद दिया** जाता है। इस दौरान **पशु-पूजा** भी की जाती है। • **संगम साहित्य में भी जल्लीकट्टू का उल्लेख** मिलता है। इसके अलावा, **मोहनजोदड़ो में खोजी गई एक मुहर में भी बैल को वश में करने का संदर्भ** मिलता है। यह मुहर 2,500 ईसा पूर्व से 1,800 ईसा पूर्व के मध्य की है। • **अन्य राज्यों में भी इसी तरह के खेल आयोजित किए जाते हैं** - कंबाला (आंध्र प्रदेश), बैलगाड़ी दौड़ (महाराष्ट्र), मुर्गों की लड़ाई (आंध्र प्रदेश और अन्य राज्य), ऊंट दौड़ (राजस्थान) आदि।
रज पर्व	• **रज पर्व या मिथुन संक्रांति ओडिशा में नारीत्व** का जश्न मनाने वाला 3 दिवसीय त्योहार है। • ऐसा माना जाता है कि इस अवधि के दौरान **धरती माता को मासिक धर्म होता है** और वह मानसून के आगमन के साथ **भविष्य की कृषि गतिविधियों के लिए स्वयं को तैयार** करती है। • इस दौरान सभी कृषि संबंधी गतिविधियों (जैसे बुवाई, कटाई आदि) को तीन दिनों के लिए स्थगित कर दिया जाता है।

6.6. पुरस्कार और सम्मान (Prizes and Awards)

पुरस्कार और सम्मान	विवरण

राष्ट्रपति द्वारा पद्म पुरस्कार आवंटित	• इन पुरस्कारों की **शुरुआत वर्ष 1954 में** की गई थी। वर्ष 1978 और 1979 तथा 1993 से 1997 के दौरान के संक्षिप्त व्यवधान को छोड़कर **प्रत्येक वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर** पर इनकी घोषणा की जाती है।
	  ○ पद्म पुरस्कार तीन श्रेणियों में दिए जाते हैं-अर्थात्,
	    ▪ असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए **पद्म विभूषण;**
	    ▪ उच्च कोटि की विशिष्ट सेवा के लिए **पद्म भूषण;** तथा
	    ▪ विशिष्ट सेवा के लिए **पद्मश्री।**
	  ○ इन पुरस्कारों का उद्देश्य विभिन्न क्रिया-कलापों या विषयों के **सभी क्षेत्रों में उपलब्धियों को सम्मानित करना** है, जहां सार्वजनिक सेवा का एक तत्व शामिल है।
	  ○ इन्हें **पद्म पुरस्कार समिति द्वारा की गई सिफारिशों के आधार पर** प्रदान किया जाता है। इस समिति का गठन प्रत्येक वर्ष प्रधान मंत्री द्वारा किया जाता है।
	    ▪ इसके लिए **स्व-नामांकन** भी किया जा सकता है।
	  ○ हालांकि, **डॉक्टरों और वैज्ञानिकों को छोड़कर,** सार्वजनिक उपक्रमों के तहत कार्य करने वाले **सरकारी कर्मचारी** इन पुरस्कारों के लिए **पात्र नहीं हैं।**
	• **एक वर्ष में दिए जाने वाले पुरस्कारों की कुल संख्या** (मरणोपरांत पुरस्कारों और NRI/विदेशियों/OCI को छोड़कर) **120 से अधिक नहीं** होनी चाहिए।

	• पुरस्कार विजेताओं को **राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षरित एक सनद** (प्रमाण-पत्र) और एक पदक प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार में **कोई नकद धनराशि प्रदान नहीं की जाती है।**
साहित्य अकादमी पुरस्कार (SAA)	• साहित्य अकादमी ने 20 भाषाओं में 'साहित्य अकादमी पुरस्कारों' की घोषणा की है। ○ गुजराती, मैथिली, मणिपुरी और उर्दू भाषाओं में पुरस्कारों की घोषणा बाद में की जाएगी। • यह एक साहित्यिक सम्मान है। यह प्रतिवर्ष **किसी भी प्रमुख भारतीय भाषा में प्रकाशित साहित्यिक योग्यता की सबसे उत्कृष्ट पुस्तकों के लेखकों/लेखिकाओं को** प्रदान किया जाता है। ○ संविधान में उल्लिखित 22 भाषाओं के अलावा **अंग्रेजी और राजस्थानी भाषा को भी इस पुरस्कार के लिए मान्यता दी गई है।** ○ पुरस्कार में **अलंकृत ताम्र-पट्टिका वाली एक मंजूषा (Casket), एक शॉल और एक लाख रुपये की राशि** शामिल है। • साहित्य अकादमी **एक स्वायत्त संगठन है।** यह सोसायटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1860 के तहत एक सोसाइटी के रूप में पंजीकृत है। • **साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार के बाद** भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला **दूसरा सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान है।**
शांति का नोबेल पुरस्कार 2021	• **पुरस्कार प्राप्तकर्ता:** पत्रकार मारिया रेसा और दिमित्री मुराटोव। • **योगदान: "अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा** के लिए किए गए प्रयास, जो लोकतंत्र और स्थायी शांति की एक पूर्व शर्त हैं।" • वर्ष 2012 में, रेसा द्वारा खोजी पत्रकारिता के लिए एक डिजिटल मीडिया कंपनी रैपलर (Rappler) की सह-स्थापना की गई थी। रेसा फिलिपींस के राष्ट्रपति रोड्रिगो दुतेर्ते के विवादास्पद **"वॉर ऑन ड्रग" अभियान** पर केंद्रित था। **इसमें हजारों लोगों की जानें गई थी।** • नोवाजा गजेटा (Novaja Gazeta) समाचारपत्र की सह-स्थापना रूसी पत्रकार दिमित्री आंद्रेयेविच मुराटोव ने की थी। मुराटोव दशकों से रूस में **"अत्यधिक चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों"** में भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का पक्ष समर्थन करते रहें हैं।
साहित्य का नोबेल पुरस्कार, 2021	• **पुरस्कार प्राप्तकर्ता:** तंजानिया के लेखक अब्दुलरजाक गुरनाह। • **योगदान:** गुरनाह को यह पुरस्कार **"उपनिवेशवाद के प्रभावों और संस्कृतियों व महाद्वीपों के बीच खाड़ी देशों में शरणार्थियों की स्थिति के करुणामय चित्रण"** के लिए प्रदान किया है।
वर्ष 2021 के राष्ट्रीय खेल पुरस्कार	• **राष्ट्रीय खेल पुरस्कार प्रतिवर्ष** खेलों में उत्कृष्टता को पहचानने और पुरस्कृत करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। • **राष्ट्रीय खेल पुरस्कारों की सूची में निम्नलिखित शामिल हैं:** ○ **मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार:** यह पुरस्कार विगत चार वर्षों की अवधि में शानदार और सबसे उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। ○ **अर्जुन पुरस्कार:** यह पुरस्कार विगत चार वर्षों की अवधि में खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन और नेतृत्व, खेल भावना एवं अनुशासन की भावना प्रदर्शित करने के लिए दिया जाता है। ○ **द्रोणाचार्य पुरस्कार:** यह पुरस्कार कोचों को निरंतर आधार पर उत्कृष्ट और सराहनीय कार्य करने और खिलाड़ियों को अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में उत्कृष्टता प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए प्रदान किया जाता है। ○ **स्पोर्ट्स और खेलों में लाइफटाइम अचीवमेंट के लिए ध्यानचंद पुरस्कार:** यह पुरस्कार उन खिलाड़ियों को सम्मानित करने के लिए दिया जाता है, जिन्होंने अपने प्रदर्शन से खेल में योगदान दिया है। साथ ही, अपनी सेवानिवृत्ति के बाद भी खेल आयोजनों के प्रचार-प्रसार में योगदान देना जारी रखा है। ○ **राष्ट्रीय खेल प्रोत्साहन पुरस्कार:** यह पुरस्कार उन कॉरपोरेट संस्थाओं (निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों में), खेल नियंत्रण बोर्डों तथा राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर खेल निकायों सहित गैर-सरकारी संगठनों को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने खेल प्रचार तथा विकास के क्षेत्र में एक दृश्यमान भूमिका निभाई है। ○ **मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (माका) ट्रॉफी:** अंतर-विश्वविद्यालय टूर्नामेंट में कुल मिलाकर शीर्ष प्रदर्शन करने वाले विश्वविद्यालय को **मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (MAKA) ट्रॉफी** दी जाती है।
ऑर्डर ऑफ द ड्रुक ग्याल्पो (Order Of The Druk Gyalpo)	• यह **भूटान का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार** है। • यह पुरस्कार **भूटान के राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर भारतीय प्रधान मंत्री श्री मोदी को प्रदान किया गया** है। • यह भूटान के लोगों और राज्य की आजीवन सेवा को सम्मानित करने के लिए प्रदान किया जाता है।

6.7. अन्य महत्त्वपूर्ण सुर्ख़ियाँ (Other Important News)

भास्करब्दा	• हाल ही में, असम सरकार ने शक और ग्रेगोरियन कैलेंडर के साथ-साथ - **'भास्करब्दा' को भी राज्य में आधिकारिक कैलेंडर के रूप में उपयोग** करने की घोषणा की है। • कैलेंडर में भास्करब्दा युग का आरंभ 'कामरूप साम्राज्य' के 7वीं शताब्दी के शासक **'भास्कर वर्मन' के स्वर्गारोहण की तिथि से** माना जाता है। ○ वह उत्तर भारत के शासक **हर्षवर्धन का समकालीन और राजनीतिक सहयोगी था।** • ग्रेगोरियन कैलेंडर में एक दिन मध्यरात्रि से शुरू होता है। इसके विपरीत, यह **असमिया कैलेंडर 24 घंटों में सूर्योदय पर शुरू और समाप्त होता है।** ○ 'भास्करब्दा' और ग्रेगोरियन के बीच 593 वर्ष का अंतर है। • ग्रेगोरियन कैलेंडर सौर चक्र पर आधारित है। इसके विपरीत, **शक और भास्करब्दा** कैलेंडर **चंद्र-सौर (lunisolar) प्रणाली** पर आधारित है।
सांस्कृतिक मानचित्रण पर राष्ट्रीय मिशन (National Mission on Cultural Mapping: NMCM)	• वर्ष 2017 में अपनी शुरुआत के उपरांत से बहुत कम प्रगति करने के पश्चात, **NMCM को अब इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र** (Indira Gandhi National Centre for the Arts: IGNCA) को सौंप दिया गया है। ○ **IGNCA** द्वारा शीघ्र ही 75 गांवों में सांस्कृतिक मानचित्रण आरंभ किया जाएगा। • NMCM की स्थापना केंद्रीय मंत्रालयों, राज्य सरकारों और कला/संस्कृति निकायों के सहयोग के साथ **कलाकारों, कला शैलियों तथा भौगोलिक स्थिति के डेटा को संकलित** करने के लिए की गई थी। • **NMCM के तीन महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं:** राष्ट्रीय सांस्कृतिक जागरूकता अभियान[7], राष्ट्रव्यापी कलाकार प्रतिभा खोज / तलाशी कार्यक्रम[8] तथा राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यस्थल[9]।
भारतीय विरासत संस्थान (Indian Institute of Heritage)	• संस्कृति मंत्रालय ने **नोएडा में भारतीय विरासत संस्थान** स्थापित करने का निर्णय लिया है। यह संस्थान भारत की **समृद्ध विरासत** और **इसके संरक्षण** से संबंधित क्षेत्रों में **उच्चतर शिक्षा** एवं **अनुसंधान को प्रोत्साहित करेगा।** ○ यह कला, संरक्षण, संग्रहालय विज्ञान, पुरातत्व आदि के इतिहास में **स्नातकोत्तर और पीएचडी (PhD)** पाठ्यक्रम उपलब्ध कराएगा। • यह एक **'मानद विश्वविद्यालय' (deemed to be University)** के रूप में कार्य करेगा। इसमें राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा संरक्षण अनुसंधानशाला (NRLC) लखनऊ, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार (नई दिल्ली) आदि के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रमों को एकीकृत किया जाएगा।
वतन प्रेम योजना	• इस योजना को **गुजरात सरकार** द्वारा भारत से बाहर अधिवासित गुजरात के लोगों (NRIs) को उनके पैतृक गांवों में विकास कार्यों के लिए दान करने में सहायता प्रदान करने हेतु आरंभ किया गया है। • **ऐसे NRIs ग्राम-स्तरीय परियोजना की लागत का 60% योगदान कर सकते हैं**, जबकि शेष राज्य सरकार (40%) द्वारा वहन किया जाएगा। • इस योजना में ग्रामीण स्तर की परियोजनाएं जैसे **स्कूलों में स्मार्ट कक्षाएं, सामुदायिक हॉल, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र आदि** शामिल होंगी। • **लक्ष्य-** दिसंबर 2022 तक ₹1000 करोड़ की विकास परियोजनाएं तैयार करना।
सीटी बजाने वाला गांव (Whistling Village)	• पर्यटन मंत्रालय ने **मेघालय के कोंगथोंग गांव को विश्व पर्यटन संगठन के "सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांवों" के लिए** नामित किया है। **इसे 'सीटी बजाने वाला गांव' (व्हिसलिंग विलेज)** भी कहा जाता है। ○ दो अन्य गांवों को भी नामित किया गया है- **तेलंगाना में पोचमपल्ली और मध्य प्रदेश में लधपुरा खास।**

[7] National Cultural Awareness Abhiyan

[8] Nationwide Artist Talent Hunt/Scouting Programme

[9] National Cultural Workplace

© Vision IAS

	• सीटी बजाने वाले गांव की एक **बहुत ही विशिष्ट परंपरा है 'जिंगरवाई इआवबेई'।** इसके तहत **एक माता अपने शिशु को जन्म के समय उसे नाम की बजाए एक धुन या लोरी से पुकारती है।** इसलिए यहां ग्रामीणों के दो नाम होते हैं, एक नियमित नाम और एक गीत का नाम।
करतारपुर कॉरिडोर	• श्री गुरु नानक देव जी की जयंती अर्थात् प्रकाश पर्व (गुरु पर्व) से पहले केंद्र सरकार ने **पाकिस्तान से जुड़े करतारपुर कॉरिडोर को** पुनः खोलने का निर्णय किया है। • करतारपुर कॉरिडोर का **उद्घाटन वर्ष 2019 में गुरु नानक की 550वीं जयंती** के उपलक्ष्य में किया गया था। • यह कॉरिडोर **डेरा बाबा नानक (भारत में) को श्री करतारपुर साहिब गुरुद्वारा (पाकिस्तान में) से** जोड़ता है। ये दोनों स्थल क्रमशः **रावी नदी के पूर्वी तट** और **पश्चिमी तट पर स्थित हैं।** 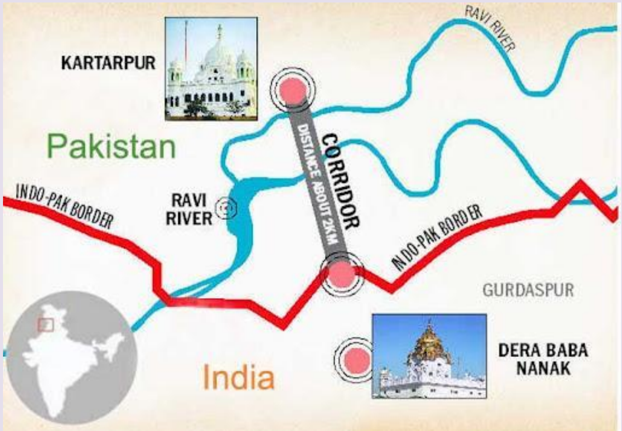 • गुरु नानक ने अपने जीवन के अंतिम 18 वर्ष करतारपुर में ही बिताए थे। करतारपुर कॉरिडोर भक्तों के लिए केवल श्री करतारपुर साहिब की एक दिन की **वीजा-मुक्त यात्रा की अनुमति** देता है।
निहंग (Nihangs)	• निहंग **सिख योद्धाओं का एक वर्ग** है, ये ऐसे योद्धा हैं जिनकी पहचान नीले वस्त्र, तलवार तथा भाले जैसे प्राचीन हथियारों, और स्टील की चकती से सजायी गई पगडी से की जाती है। • इस वर्ग की स्थापना वर्ष **1699 में गुरु गोबिंद सिंह (10 वें सिख गुरु) द्वारा खालसा की स्थापना** के उपरांत की गई थी। • शब्द 'निहंग' पंथ के चारित्रिक गुणों को दर्शाता है – ये गुण हैं – **उनका संकट या मृत्यु के भय से मुक्त होना, युद्ध या कार्रवाई के लिए तत्पर रहना तथा सांसारिक वस्तुओं से आसक्ति न रखना।** • निहंग आज कई समूहों में विभाजित हैं, जिन्हें सामान्यत: दो "दलों" (बल) में विभाजित किया जाता है – **बुड्ढा दल (बुजुर्ग दल) और तरुना दल (युवा दल)**, यह नाम शुरू में उन दो वर्गों को दिए गए थे जिन दो वर्गों में 'खालसा' सेना को वर्ष 1733 में विभाजित किया गया था। • **पहले सिख शासन (1710-15) के पतन के बाद और अफगान आक्रमणकारी अहमद शाह दुर्रानी (1748-67) के आक्रमण के समय सिख पंथ की रक्षा करने में** निहंगों की **प्रमुख भूमिका** रही थी। • **गतका (पंजाब का मार्शल आर्ट)** निहंगों द्वारा किया जाता है।.
भारितालासचस तपानि (Bharitalasuchus tapani)	• यह एक मांसाहारी सरीसृप है, जो 240 मिलियन वर्ष पूर्व अस्तित्व में था और यह **उस पारिस्थितिक तंत्र में सबसे बड़ा शिकारी** हो सकता है। • यह **पूर्व में अज्ञात एक जीनस और प्रजाति से संबंधित है, जिसे भारितालासचस तपानि कहा जाता था।** ○ तेलुगु में, भारी का अर्थ है विशाल, ताला का अर्थ है सिर और सचस मिस्र के मगरमच्छ के सिर वाले देवता का नाम है। • जीवाश्म **येरापल्ली संरचना (तेलंगाना में प्राणहिता-गोदावरी बेसिन में निर्मित चट्टान)** की चट्टानों पर पाए गए हैं।
थार रेगिस्तान में डायनासोर प्रजातियों के पदचिन्ह मिले	• राजस्थान के **जैसलमेर** जिले के थार रेगिस्तान में **3 डायनासोर प्रजातियों** के पदचिन्ह मिले हैं। ○ **प्रारंभिक जुरासिक काल** से संबंधित ये तीनों प्रजातियां **मांसाहारी** थीं। • थार मरुस्थल विश्व की **18वीं सबसे बड़ी उपोष्णकटिबंधीय मरुभूमि** है। साथ ही, यह सबसे अधिक जनसंख्या वाली मरुभूमियों में से एक है, क्योंकि राजस्थान की 40 प्रतिशत मानव आबादी थार रेगिस्तान में निवासित है।

© Vision IAS DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI

	○ यह सतलज नदी तक विस्तारित है तथा विशाल कच्छ के रण, अरावली पर्वत और सिंधु नदी से घिरा हुआ है।
चीन में 'ड्रैगन मैन' खोपड़ी की खोज	• वैज्ञानिकों ने कम से कम 140,000 साल **पुरानी विशाल जीवाश्म खोपड़ी** की खोज की है, जो प्राचीन मानव की एक नई प्रजाति है। • चूंकि **निएंडरथल** की तुलना में **नई प्रजातियों को मनुष्यों से अधिक निकटता से संबंधित** माना जा रहा है, यह मौलिक रूप से मानव विकास की समझ को बदल सकती है। • यह नाम **लॉन्ग जियांग** से लिया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "ड्रैगन नदी"। • यह **निएंडरथल** और **होमो सेपियन्स** के बाद के मनुष्यों की तीसरी वंशावली को निरूपित करती है।

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

Heartiest Congratulations to all successful candidates

10 IN TOP 10 SELECTIONS IN CSE 2020

FROM VARIOUS PROGRAMS OF VISION IAS

ABHYAAS 2022

ALL INDIA GS PRELIMS (GS + CSAT)

MOCK TEST SERIES

3 TEST

TEST-1	TEST-2	TEST-3
17 APRIL	1 MAY	15 MAY

- All India Percentile
- Comprehensive Evaluation, Feedback & Corrective Measures
- Available In ENGLISH / हिन्दी

Register @ www.visionias.in/abhyaas

AGARTALA | AGRA | AHMEDABAD | AIZAWL | AJMER | ALIGARH | ALMORA | ALWAR | AMRAVATI | AMRITSAR | ANANTHAPURU | AURANGABAD | BAREILLY BENGALURU | BHAGALPUR | BHOPAL | BHUBANESWAR | BIKANER | BILASPUR | CHANDIGARH | CHENNAI | CHHATARPUR | COIMBATORE | CUTTACK | DEHRADUN | DELHI MUKHERJEE NAGAR | DELHI RAJENDRA NAGAR | DHANBAD | DHARWAR | DIBRUGARH | FARIDABAD | GANGTOK | GAYA | GHAZIABAD | GORAKHPUR | GREATER NOIDA | GUNTUR | GURGAON | GUWAHATI | GWALIOR | HALDWANI | HARIDWAR | HAZARIBAGH | HISAR | HYDERABAD | IMPHAL | INDORE | ITANAGAR | JABALPUR | JAIPUR | JAMMU | JAMSHEDPUR | JHANSI | JODHPUR | JORHAT | KANPUR | KOCHI | KOHIMA | KOLKATA | KOTA | KOZHIKODE (CALICUT) | KURNOOL | KURUKSHETRA | LUCKNOW | LUDHIANA | MADURAI | MANGALURU | MATHURA | MEERUT | MORADABAD | MUMBAI | MUZAFFARPUR | MYSURU | NAGPUR | NASIK | NAVI MUMBAI | NOIDA | ORAI | PANAJI (GOA) | PANIPAT | PATIALA | PATNA | PRAYAGRAJ (ALLAHABAD) | PUNE | RAIPUR | RAJKOT | RANCHI | ROHTAK | ROORKEE | SAMBALPUR | SHILLONG | SHIMLA | SILIGURI | SONIPAT | SRINAGAR | SURAT | THANE | THIRUVANANTHAPURAM | TIRUCHIRAPALLI | UDAIPUR | VADODARA | VARANASI | VIJAYAWADA | VISHAKHAPATNAM | WARANGAL

8468022022   WWW.VISIONIAS.IN

DELHI | JAIPUR | PUNE | AHMEDABAD | HYDERABAD | CHANDIGARH | LUCKNOW | GUWAHATI